साधू की चुटकी

(सन्यासी चिकित्सा शास्त्र)

जिसमें
सन्यासियों के छोटी मोटी-बूटियों व भस्मों द्वारा
बड़े-बड़े दुस्साध्य रोगों को चुटकियों में दूर करने
वाले, हजारों वर्षों के गुप्त व आश्चर्यजनक
योगों का पूर्ण विवरण दिया गया है।

— ० —

सम्पादक —
अमोलचन्द्र शुक्ला 'सोमरस'

प्रकाशक —
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

द्वितीय बार] १९५७ [मूल्य ५)

प्रकाशक —
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार दिल्ली-६

मुद्रक —
यादव प्रिंटिंग प्रेस,
बाजार सीताराम, दिल्ली

प्राक्कथन

सुहृद्वर पाठकगण !

यह पुस्तक लिखने का सौभाग्य मुझे किस प्रकार प्राप्त हुआ, यह एक मनोरंजक आकस्मिक घटना है। आपको भी सुनाता हूँ।

जब मैं छोटा था और अपने गांव में रहता था, उस समय एक बार एक मनुष्य को सफेद बिच्छू ने काट लिया। वह व्यक्ति पीड़ा के मारे व्याकुल होकर चीख २ कर रो रहा था। मैं भी उसकी दशा देख रहा था। संयोग-वश एक साधु महाराज, जो कभी २ हमारे गांव के मन्दिर में आकर ठहरा करते थे, आगये और उन्होंने अपनी पोटली में से कोई बूटी निकाल कर रोगी को देकर तुरन्त ठीक कर दिया। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा और मेरे नन्हें से हृदय पर वह दृश्य सदा के लिए अंकित हो गया। सम्भवतः उसी दिन से मेरे हृदय में चिकित्सा ज्ञान के प्रति चाव उत्पन्न हो गया था। और अब तक चिकित्सा संबंधी भांति-भांति की उर्दू व हिन्दी की पुस्तकों का अध्ययन कर चुका हूँ। संयोगवश कुछ दिनों पूर्व मेसर्स देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली से मेरा परिचय हुआ और उर्दू की दो चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकों का अनुवाद करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और चिकित्सा ज्ञान सम्बन्धी

दबा हुआ चाव फिर से हृदय में उभर आया। बस उपरोक्त प्रकाशक महोदय से प्रेरणा प्राप्त कर यह छोटी सी पुस्तक जन कल्याणार्थ लिख डाली।

इस पुस्तक में क्या है ? अथवा यह पुस्तक कैसी है ? यह मै अपने मुंह से नही कहना चाहता क्योंकि कोई कूंजड़ी अपने बेर खट्टे नही बताती। किन्तु आपको यह स्मरण दिला देना उपयुक्त समझता हूँ कि सन्यासियों की चमत्कारी चिकित्सा-पद्धति चिकित्सा जगत में आज भी हलचल मचाए हुए है और हर वैद्य तथा हकीम सन्यासी प्रयोगों की प्राप्ति के लिए हर समय लालायित रहते हैं।

हमने इस पुस्तक में सन्यासी प्रयोगों की बड़ी २ हिन्दी व उर्दू पुस्तकों का अध्ययन करके वही प्रयोग सग्रहीत किए हैं जो कि अनेक लोगों द्वारा परीक्षित व प्रशंसित हो चुके है। कुछेक स्वयं परीक्षित व विश्वस्त मित्रों द्वारा परीक्षित प्रयोग भी भेंट कर दिए गये है।

पुस्तक का पहला संस्करण इतनी जल्दी समाप्त हो जाने से ही आप पुस्तक की विशेषता का अनुमान लगा सकते हैं अब यह दूसरा नवीन संस्करण बड़े अच्छे कागज पर छापा गया है आशा है कि आप भी देखकर प्रसन्न होंगे।

विनयावनत्—

अमोलचन्द्र शुक्ला 'सोमरस'

—,○—

विषयानुक्रमणिका

साधू की चुटकी

अथवा

सन्यासी चिकित्सा शास्त्र

अङ्ग-परिचय

यहाँ अङ्ग से हमारा अभिप्राय मनुष्य शरीर के विविध अवयवों से है। यूं तो हमारा प्रत्येक रोम, नसें, मांस, रक्त, हड्डियों आदि सभी हमारे शरीर के अङ्ग हैं, किन्तु यहां हम अङ्ग-प्रत्यङ्ग का विशद वर्णन न लिख कर आपको केवल उन विशेष अंगों से परिचित कराते हैं जो कि प्रायः रोग ग्रस्त होकर हमारे जीवन को कष्ट मय बना देते हैं।

मस्तिष्क—हमारे शरीर के उत्तमांगों में मस्तिष्क प्रधान अंग है, और इसके शिर-शूल, सूर्यावर्त, अनन्तवात, मस्तक पीड़ा, भ्रू-पीड़ा, प्रतिश्याय, सन्निपात तथा मानसिक दुर्बलता आदि कठिन रोगों में ग्रस्त हो जाने से हमारे जीवन का सारा कार्य शिथिल पड़ जाता है। और साथ ही भयकर वेदनायें भी सहन करनी पड़ती हैं। अतः मस्तिष्क को स्वस्थ व निरोग रखना परमावश्यक है।

नेत्र- परमात्मा के बनाए हुए शरीर अवयवों में नेत्र भी हमारे लिए उत्तमोत्तम देन है। इनके महत्व को वही व्यक्ति अच्छी प्रकार समझ पाता है जो दुर्भाग्यवश नेत्र ज्योति खो बैठता है। अन्यथा साधारणतया लोग ऐसे विषयों पर कभी ध्यानपूर्वक विचार भी नहीं करते, और इसी उपेक्षा के कारण प्रायः नेत्रों के बिना हमारा जीवन ही अंधकारमय हो जाता है। अतः इनकी रक्षा करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। नेत्र-रोगों मे आंख की पीड़ा, आंख का फोला व जाला, मोतिया बिन्दु, पड़वाल, बाहमनी पलक, आँख की लाली, और नेत्र स्राव आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

कर्ण (कान)--यह बताना न पड़ेगा कि कान भी हमारे शरीर के अन्य अंगों से कम महत्व नहीं रखते। और इनके न होने से भी हमारा जीवन कितना नीरस और दयनीय हो जाता है, इसका अनुमान किसी बहरे आदमी को देख कर आप स्वयं लगा सकते हैं। प्रायः कानों में फुन्सी आदि हो जाने से पीड़ा होने लगती है और कभी २ पीप बहने लगती है। यूं तो ये रोग साधारण से हैं किन्तु यदि उपेक्षा की जाए, तो कभी २ निस्सन्देह कर्ण जैसी अनमोल देन से हाथ धोना पड़ जाता है। इन्हीं रोगों के कारण कान सुनने का काम बन्द कर देते हैं।

अस्तु इन रोगों की चिकित्सा में तनिक भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

नासिका (नाक)--साधारणतया अज्ञान व्यक्ति सोचते हैं कि नाक का काम केवल सुगंधित फूलों को सूंघना अथवा दुर्गन्ध का ज्ञान करा देना ही है, किन्तु हर समझदार व्यक्ति यह जानता है कि नाक का कार्य हमारे जीवन के लिये कितना महत्व पूर्ण है। नाक से ही सांस लेकर हम प्राणवायु प्राप्त करते हैं, जिसके बिना हम अल्पकाल में ही घुट २ कर मर जाएं। इसके अति-रिक्त मस्तिष्क का दूषित द्रव्य प्रतिश्याय के रूप में नाक से ही निकला करता है। यदि यह मार्ग रुक जाय, तो वह दूषित द्रव्य वहीं भरा रहे और अनेकानेक भयंकर रोगों का उत्पादक बन जाए। अब आपने समझ लिया होगा कि नासिका की रक्षा भी परम अनिवार्य है। नासिका रोगों में 'नकसीर फूटना' ही एक विशेष उल्लेख नीय रोग है।

दन्त (दांत)-दाँत केवल मुंह की शोभा बढ़ाने के लिए ही नही हैं, वरन् भोजन को चबाकर इस योग्य बना-देना भी इन्हीं का काम है कि वह पेट में जाकर आसानी से पच सके और अंग लग सके। आप नित्य ही देखते होंगे कि वृद्ध लोग जिनके दांत गिर जाते हैं न कोई ठोस

भोजन ही खा सकते हैं और न ही उसे पचा सकते हैं, किन्तु एक दृढ़ दन्त धारी युवा पुरुष लोहे के चने भी चबा सकता है। प्रायः दाँतों में भी शूल हो जाता है, अथवा कीड़ा लग जाता है तथा पायरिया आदि भयंकर रोग हो जाते हैं, जिसमें दांतो में पीप पड़ जाती है। भला सोचिए कि भोजन आप मुंह के अतिरिक्त किसी और अंग से तो खा नही सकते, और यदि मुंह से पीप उस भोजन में शामिल होकर आपके पेट में पहुँचे तो कितना भयानक परिणाम हो। यही कारण है कि पायरिया के रोगी प्रायः अनन्त रोगों में फस जाते हैं। क्योंकि दांतो का पीप आदि दूषित द्रव्य भोजन के साथ पेट में पहुँच कर विविध रोगों का उत्पादक बन जाता है। अस्तु दाँतों की स्वच्छता रखना नितान्त आवश्यक है। हमारे पूर्वजों ने इस कारण दाँत व मुंह की सफाई को नैतिक कर्मों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बताया है। आपका यह प्रथम कर्त्तव्य है कि स्वयं अपने मुँह-दांत की सफाई रखने के साथ ही अपने बच्चों को भी यही शिक्षा दें, और नित्य अपने सामने उनसे दाँतों की सफाई कराने के उपरान्त खाने को दें। कुछ दिनों तक उन्हें अनुशासन में रखने पर वे आदी हो जायेंगे, और बड़े होकर अनेक रोगों से बचे रहेंगे।

कण्ठ--(गला) प्राचीन काल के राजाओं की

ऐतिहासिक कहानियां पढ़ने वाले जानते होंगे कि प्रायः वे दुश्मन के उन रास्तों को घेर लेते थे जिससे होकर उसकी फौज की रसद पहुँचती थी, और परिणाम स्वरूप जब रसद नही पहुँच पाती तो कुछ दिनों में ही उसकी फौज भूखों मरने लगते थी। ठीक इसी प्रकार हमारे शरीर में भोजन पहुँचने का एकमात्र मार्ग कण्ठ ही है। और यदि यह मार्ग रुक जाता है, तो पेट तक भोजन पहुंचना एक विकटतम समस्या बन जाती है। अतः कठ रोगों की तत्काल चिकित्सा अनिवार्य होती है। प्रायः कण्ठ खुन्नाक और कण्ठ माला जैसे भयंकर रोगों से पीडित हो जाता है। जिनका वर्णन आगे अंकित किया गया है।

फुफ्फुस (फेफड़े)--फेफड़े हमारे शरीर के पखे हैं। यदि एक मिनट के लिए भी ये अपना कार्य रोक दें तो जीवित रहना नितांत असम्भव है। फेफड़े के रोग तो असंख्य हैं, किन्तु कास, काली खांसी, श्वास, पार्श्वशूल, तथा निमोनियां आदि विशेष उल्लेखनीय रोग हैं। आगे इसी पुस्तक में यथा स्थान इन समस्त रोगों का विवरण आपको मिलेगा।

हृदय--यह हमारे शरीर साम्राज्य का सम्राट है। यदि यह पनिक भी पीड़ित होता है, तो उसका प्रभाव समस्त शरीर पर पड़ता है। प्रायः हृदय की उष्मा जब

बढ़ जाती है तो रक्त नलियों द्वारा उसका प्रभाव अङ्ग-प्रत्यंग तक पहुँच जाता है और फलस्वरूप सारा शरीर उष्ण हो जाता है। यही ज्वर कहलाता है। शरीर का सम्राट होने के कारण इसका सुरक्षित रहना अत्यन्त आवश्यक है। हृदय-दुर्बलता व ज्वर आदि रोगों का वर्णन पुस्तक में यथा स्थान लिखा जायेगा।

आमाशय--आमाशय के कार्य को आप सभी जानते होंगे। खाया हुआ भोजन आमाशय में ही जाकर पकता है और तभी वह रक्त बनता है। आमाशय में विकार उत्पन्न हो जाने से विशूचिका (हैजा) जैसे भयंकर रोग उत्पन्न होजाते हैं। जिनसे प्रतिवर्ष लाखो प्राणी मर जाते हैं।

यकृत-प्लीहा-ये हमारे शरीर में पसलियों के नीचे दाहिनी ओर स्थित होते हैं। और अन्यान्य अंगों की भाँति ही महत्वपूर्ण हैं। यकृत रोगों में पाण्डु रोग विशेष उल्लेखनीय है, जिसमें मनुष्य का सारा शरीर पीला पड़ जाता है। और प्लीहा के रोगों में प्लीहावृद्धि वर्णनीय है। आगे हम इन रोगों का वर्णन लिखेंगे।

अन्तड़ियां--इनका काम यह होता है कि जब आमाशय में भोजन पककर शरीरांग बन जाता है, तो शेष

द्रव्य अन्तड़ियों में आ जाता है। अन्तड़ियां उसमें से अपना भाग खींच कर अवशिष्ट को मल बना कर बाहर निकाल देती हैं। अर्थात् भोजन का रद्दी भाग निकालना इनका काम है अब आप ही सोचिए कि यदि यह मार्ग अवरुद्ध हो जाय, तो आमाशय मे कितना दूषित द्रव्य इकट्ठा हो जाय ? और फिर वही विविध रोगों को पैदा कर दे। कहने का अभिप्राय यह है कि अन्तड़ियां भी हमारे अङ्गों में विशिष्ट महत्व रखती हैं। कभी २ कुछ कारणों से दूषित भोजन इनमें रुक जाता है जो कि भांति २ के विकार पैदा करके मनुष्य को रोग ग्रस्त कर देता है। फलस्वरूप प्रवाहिका, मरोड, उदरशूल, संग्रहणी, कोष्ठ-बद्धता आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। अतः अन्तडियों की रक्षा करना अति आवश्यक है।

वृक्क तथा मूत्राशय--शरीर के वे भाग हैं जिनसे होकर मल (पाखाना) तथा मूत्र बाहर निकलते हैं। इन मार्गों में अवरोध अथवा कोई रोग उत्पन्न हो जाना बड़ा ही भयकर सिद्ध होता है। प्रायः लोग आलस्यवश अथवा किसी कार्य में संलग्न होने के कारण मल व मूत्र की इच्छाओं को रोके रहते हैं। यह आदत बडी ही खतरनाक है। और ऐसा व्यक्ति कभी स्वस्थ व निरोग नहीं रह सकता। अतः आपको यह बात सदैव स्मरण रखनी

चाहिये कि जिस समय भी मल अथवा मूत्र त्याग की इच्छा उत्पन्न हो, सारे कार्य छोड़ कर तत्काल ही उठ जाना चाहिए। वृक्क सम्बन्धी रोगों में वृक्कशूल तथा अर्श (बवासीर) प्रमुख हैं, और मूत्राशय रोगों में मूत्र-कृच्छ्र (सुजाक) बड़ा ही भयंकर रोग है। आजकल यह रोग अत्यधिक फैल हुआ है, अतः मूत्राशय रोगों के प्रकरण में सविस्तार वर्णन करेंगे।

त्वचा [खाल]--शरीर का चमड़ा जिसे त्वचा (खाल) कहते हैं, भी रोगों से सुरक्षित नही रह पाता। यूं तो यह अंग बड़ा ही सहनशील होता है, किन्तु हमारे शरीर के आन्तरिक रक्तविकारों से प्रायः यह भी खुजली, दाद, चम्बल, फोड़े फुन्सी व उपदश (आतशक) आदि रोगों से पीड़ित हो जाता है। त्वचा रोग भी बड़े कष्ट प्रद होते हैं, और मनुष्य के जीवन को दुःखमय बना देते हैं। इस पुस्तक में आगे चलकर हम आपको ऐसे र सन्यासी चुटकुले बतायेंगे, जिससे आप रक्त विकारों से सुरक्षित रह कर इन रोगों से बचे रहेंगे, तथा होने वाले रोगों को सरलता पूर्वक मिटा सकेंगे।

पुरुष की गुप्तेद्रिन्य—यह हमारे शरीर का वह अंग है, जिससे होकर हमारे जीवन के यौवन उपवन का आनन्द स्रोत प्रवाहित होता है। इस इन्द्रिय के शिथिल

हो जाने पर मनुष्य के जीवन में कोई रस नही रह जाता। यही नहीं, अपितु पुरुष ही नही रह जाता। और नपुसक (नामर्द) कहलाने लगता है निस्सन्देह यह इन्द्रिय ही मनुष्य जीवन का आनन्द भंडार है। किन्तु साथ ही असंख्य घोर यातनापूर्ण रोगो का घर भी है। क्योंकि इसके आनन्द स्रोत में प्रवाहित होकर मनुष्य को भले बुरे का ज्ञान भी नही रहता, और बहते २ नपुंसकता के गढ़े में आ गिरता है और यही उसके अनमोल जीवन का अन्त होता है। फिर आज कल के युग की तो बात ही क्या कहिए? और विशेष कर भारत की तो महिमा ही अकथनीय है। इस देश के लोगो ने विदेशो से आये हुए हस्त-मैथुन व अप्राकृतिक मैथुन का इस धूमधाम और जोर शोर से स्वागत किया कि स्वतन्त्रता देवी का भी वैसा स्वागत न हुआ होगा। यही कारण है कि आज भारत के ६५ प्रतिशत युवक प्रमेह, स्वप्नदोष, बाजीकरण मन्दता और नपुंसकता के शिकार हो रहे हैं। शायद ही कोई ऐसा युवक दिखाई पड़ता हो जो आज कल इन कुकृत्यों द्वारा जीवन के मूल तत्व वीर्य को नष्ट करके अपने हाथों ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी न मारता हो। और अन्त को परिणाम यह होता है कि रो रो कर जीवन की घड़ियां पूरी करके इस संसार से चले जाते हैं। भला आप ही

सोचिए कि ऐसे लोग जाकर उस भगवान को क्या उत्तर देंगे, जिसने ससार को कर्मक्षेत्र बनाकर उन्हें श्रेष्ठ मानव योनि में जन्म दिया था। उसने भेजा था इसलिए कि संसार में जाकर अच्छे कर्मों द्वारा कुछ भला करेगा, कुछ उन्नति करेगा, और वह यहां आकर मैथुनाधिक्य की तेज रेलगाडी पर सवार हो कर चन्द दिन ही में दुनियां की सैर करके लौट गए। भला बताइये, उन्होंने मनुष्य का कौनसा कर्तव्य पालन किया? खैर छोडिए इन बातों को, मेरे कहने का अभिप्राय यही है कि गुप्तेन्द्रिय रोग बड़े भयंकर होते है, जो कि हमारे जीवन को ही नष्ट कर डालते हैं। आगे यथा स्थान हम इन रोगों का विवरण सविस्तार लिखेंगे। अभी आप केवल इतनी बात गांठ बांध लीजिए कि इन कुकृत्यों से बच कर शरीर के मूलतत्व वीर्य की रक्षा करना ही आपका प्रधान कर्त्तव्य है, क्योंकि वीर्य, शक्ति का ही दूसरा नाम है, और बिना शक्ति के आप संसार में कुछ नही कर सकते।

स्त्री की गुप्त योनि—संसार में मनुष्य जाति के दो ही रूपों का जोड़ पाया जाता है एक पुरुष और दूसरा स्त्री। पुरुष की गुप्त इन्द्रिय जितनी महत्वपूर्ण है, उतनी ही स्त्री के लिए स्त्री की गुप्त योनि है। साथ ही

जिस प्रकार कि भयंकरतम रोग पुरुष की गुप्तेन्द्रिय के साथ लगे हुए हैं, उसी प्रकार वरन् उससे भी भयङ्कर रोग स्त्री की गुप्त योनि के साथ हैं। आजकल स्त्रियों में मैथुनाधिक्य के कारण कम स्त्रियां ही निरोग दिखाई पड़ती हैं। गांवों में तो कुछ संयम पाया भी जाता है किंतु शहरों की स्त्रियों के कुम्हलाए हुए पीले २ मुख, गड्ढों में धसी हुई आंखे और फीका-फीका सा चेहरा ही स्पष्ट बता देता है कि उनका जीवन कितना दुखी है। साहित्यकों ने लिखा है कि भगवान ने संसार मे स्त्री को सुन्दरता की मूर्ति बनाकर उत्पन्न किया है। भई, सुन्दरता की यह दुर्दशा देख कर अपनी आखों में तो आंसू आ जाते हैं। हां इतना अवश्य मै कहूँगा कि उनकी इस दुर्दशा का अधिकांश उत्तरदायित्व पुरुषों पर ही है। क्योंकि प्रायः लज्जाशील स्त्रियां प्रदर आदि भयङ्कर रोगो से पीड़ित रह कर भी अपने पतियों को बता नही सकती, और पति महाशय कभी उस ओर स्वतः ध्यान भी नहीं देते। फलस्वरूप उनके मुख की कान्ति, आंखों की ज्योति, कपोलों की लाली और शरीर की सुन्दरता दिन प्रति दिन क्षीण होते २ नितान्त ढल जाती है, और यौवन काल में ही वे बुढ़िया होकर जीवन के समस्त सुखों से वंचित हो जाती हैं। अतः मै बार २ निवेदन करूंगा कि

भाइयो ! इन बेजुबान गायों की रक्षा आपके हाथ में है। और इनकी रक्षा करना ही आपका प्रमुख कर्तव्य है। इनकी रक्षा पर ही आपके जीवन का सुख और सफलता आधारित है और इनकी रक्षा पर ही आपकी होनहार संतान का भविष्य निर्भर है। बस !

अब मैं क्रमशः एक २ रोग का वर्णन लिखते हुए आपको उनके निवारणार्थ ऐसे २ सन्यासी योग भेंट करूंगा, जिनके कारण राज दरबारों में भी साधु सन्या-सियों का अत्यधिक आदर था। इन्हीं सरल चुटकुलों से सन्यासी बडे २ दुस्साध्य रोगों को चुटकियों में उड़ाकर लोगों को चकित कर देते थे।

ये वह प्रयोग है, जो बडे २ पहाड़ों की गुफाओ मे रहने वाले महान् सन्यासियों के हैं, और उनके शिष्यों द्वारा यदा-कदा दुःखी जनों को प्राप्त होते रहे हैं। ये योग हजारों वर्षों से गुप्त चले आ रहे थे, और कभी २ ही प्रकाश में आ सके हैं। मैंने जिस घोर परिश्रम और प्रयत्न से इन्हें संग्रह किया है, उसका वर्णन अनावश्यक सा है, हां भारत के निर्धन ग्राम वासियों, जिन्हें कि निर्धनता के कारण अच्छी डाक्टरी चिकित्सा प्राप्त नहीं हो पाती, के लिये ही मैंने ये चमत्कारी चुटकुले संग्रह किए थे, ताकि यथा समय बिना पैसों के भी वह रोगों से मुक्त हो सकें।

मै आपको यह बता देना चाहता हूँ, कि जिन सज्जनों ने बड़े २ साधुओं की सेवा करके इन्हें प्राप्त किया था, उन्हों ने अनुभव करने के उपरांत इन्हें चमत्कारी प्रभावक पाया है। कुछ योग तो कतिपय वैद्यों के भी हाथ लग गए और उन्ही के कारण उन्होने अपूर्व लाभ और यश पाया है। आज यदि इनसे कुछ भी कल्याण हो सका, तो मेरा परिश्रम सफल हो जयेगा।

मै जानता हूँ कि आज देश भर के वैद्य, हकीम इन सरल चुटकुलों को प्राप्त करने के लिए दिन रात खोज में लगे रहते हैं। क्योंकि आयुर्वेदिक तथा यूनानी योगों का निर्माण करना हर व्यक्ति का काम नहीं। उनमें परिश्रम अधिक चाहिए और द्रव्य भी; या तो बहु मूल्य होते हैं, या दुष्प्राप्य होते हैं। किन्तु ये सन्यासी प्रयोग बड़े ही सरल और जादू के समान प्रभावक होते हैं। अतः मेरे विचार से यह पुस्तक निश्चय ही हजारों वैद्यों और हकीमों के लिए भी अनमोल उपहार सिद्ध होगी। और इस पुस्तक के द्वारा वे वही यश और आदर प्राप्त कर सकेंगे, जो कि कभी सन्यासियों को प्राप्त था।

--:०:

मस्तिष्क क्या है ? यह हम प्रारम्भ में आपको बता चुके हैं। अब हम मस्तिष्क सम्बन्धी कुछ प्रमुख रोगों का वर्णन लिखेंगे, और साथ ही उनके प्रशंसनीय सन्यासी प्रयोग भी। मस्तिष्क सम्बन्धी रोग तो प्राचीन वैद्यों ने इतने लिखे हैं, कि जिसका वर्णन यदि लिखा जाय, तो एक महान् ग्रन्थ ही बन जाय। अस्तु इस छोटी सी पुस्तक में उनका वर्णन नहीं किया जा सकता है। इस पुस्तक में तो केवल उन्हीं रोगों का वर्णन किया जायेगा, जो कि प्रायः ही पाए जाते हैं।

सूर्यावर्त

सूर्यावर्त एक प्रकार का शिर शूल है। आयुर्वेदिक ग्रन्थों में तो शिरशूल के भी अनन्त भेद पाए जाते है, किन्तु उनमें से सूर्यावर्त एक भयङ्कर शूल है, और आज कल प्रायः ही लोग इससे पीड़ित पाए जाते हैं। इसका वैद्यक का नाम सूर्यावर्त है—किन्तु जन साधारण की भाषा में आधाशीशी कहते हैं।

सूर्यावर्त की पहिचान

अधिकतर यह पीडा मस्तिष्क के आधे भाग में होती है। इसमें पहिले रोगी का सिर चकराना प्रारम्भ होता है;

फिर आँखों के सम्मुख आग की चिंगारियां भी उडती हुई प्रतीत होती हैं, और साथ ही कनपटी की रगें तड़पने लग जाती हैं। रोगी पीड़ा की अधिकता से दिन रात छट-पटाता है और प्रकाश से उसे तीव्र घृणा हो जाती है। वह निरन्तर अंधकार में ही रहना चाहता है। इन समस्त लक्षणों से आप सूर्यावर्त की भली भाँति पहिचान कर सकते हैं।

रोगोत्पत्ति के कारण

चिकित्सकों के अन्वेषण और अनुभव के आधार पर यह पता चला है कि प्रायः यह रोग वंश परम्परा गत ही होता है। अर्थात् यदि माता-पिता को यह रोग होता है तो उनकी सन्तान को भी हो जाता है। किन्तु कभी २ नज़ला या जुकाम की ठीक २ चिकित्सा न होने के कारण मस्तिष्क की रगों में दूषित आर्द्रता रुक जाती है और वह रक्त को विकृत करके आधाशीशी की पीड़ा उत्पन्न कर देती है।

चिकित्सकों को आदेश

यदि सूर्यावर्त का कोई रोगी आपके पास चिकित्सार्थ आए, तो पहले रोग के मूल कारण को मिटाने का प्रयत्न करें और रोगी को कोष्ठबद्धता तो कदापि न होने दें।

उसके पश्चात् निम्नांकित सन्यासी प्रयोग द्वारा सूर्यावर्त की चिकित्सा करें । ईश्वर कृपा से यह प्रयोग ऐसा चमत्कारी प्रभाव दिखाएगा कि पीड़ा से छटपटाता हुआ रोगी भी तत्काल हंसता हुआ चला जायेगा ।

सन्यासी प्रयोग

सूर्यावर्त यानी आधाशीशी के लिए यह सरल प्रयोग अत्यधिक लाभकारी है । इस प्रयोग के प्राप्त होने की कथा भी बड़ी मनोरंजक है । आपको वह कथा मैं इसलिए सुनाए देता हूँ ताकि अनुमान लगा सकें ।क बड़े २ सन्यासी महात्माओं के गुप्त प्रयोग हमें किस २ प्रकार संयोगवश प्राप्त हुए हैं ।

हमारे एक मित्र हकीम हैं । कुछ समय पूर्व वे स्वयं एक बार आधा शीशी रोग में फंस गए । बेचारे कई दिनों तक अपनी ही चिकित्सा करते रहे, किन्तु पीड़ा शांत न हुई । संयोगवश उन्हें किसी आवश्यक कार्य से मोगा जाना पड़ा । पीड़ा ने वहां भी इनका पीछा नहीं छोड़ा । वहां के लोगों ने उन्हें इस प्रकार पीड़ित देख कर बताया कि एक लाला जी उस शहर में इस रोग की चिकित्सा करने में प्रसिद्ध हैं । भई, प्यास लगने पर सभी कुएँ की ओर दौड़ते हैं । हमारे मित्र भी उन लालाजी के पास पहुँचे । प्रेमपूर्वक बात-चीत करते २ उन लाला जी ने बताया कि लगभग

१५ वर्ष पूर्व एक बार मैं भी इसी प्रकार आधाशीशी से पीड़ित था। अचानक एक साधु महाराज पधारे। मैंने अपने स्वभाव के अनुसार उनका यथोचित सम्मान किया। तब प्रसन्न होकर उन्होंने मुझे यह योग प्रदान किया था। तत्पश्चात् लाला जी ने बताया कि इसी योग से उन्होंने लगभग २०० सौ से अधिक रोगियों को रोग मुक्त कर दिया, जो कि बेचारे महीनों से इस रोग से पीडित थे। इसी कारण उन्हें यह यश प्राप्त हुआ है कि दूर २ तक लोग उन्हें जानते हैं। हमारे मित्र महोदय यह विचित्र कथा सुन कर याग लिखकर घर लाए, और केवल तीन दिन के सवन से ही वे नितान्त रोग मुक्त हो गये। तब उन्होंने यह चमत्कारी प्रयोग मुझे बताया, और आज मैं उसे पाठकों के कल्याणार्थ इस पुस्तक पर अंकित कर रहा हूं। आप लोग भी आवश्यकता के समय परीक्षा कर देखें तीन दिन में ही भयङ्कर से भयङ्कर आधाशीशी पीड़ा भी दूर हो जायेगी।

प्रयोग—पोस्त के अनपछ नए डोडे आधी छटॉक, गेहूँ की भूसी १ छटांक, और पुराना गुड़ १ छटांक। तीनों को रात के समय उबाल कर पी लिया करें। और ३ दिन निरन्तर सेवा करें। निश्चय ही लाभ होगा।

सूर्यावर्त की कैसी ही पीड़ा क्यों न हो, बस एक यही प्रयोग उसे जड़ से मिटा देगा।

भ्रू-पीड़ा

यह पीड़ा बड़ी ही कष्ट प्रद होती है। इसमें कभी २ केवल एक भ्रू में कठिन पीडा होती है, और कभी-कभी दोनों भ्रुओं तथा आधे चेहरे में पीडा हो जाती है।

भ्रू-पीड़ा उत्पादक कारण

प्रायः यह पीड़ा पित्त दोष की भाप के मस्तिष्क में चढ जाने के कारण हो जाती है अथवा मस्तिष्क का दूषित मल भ्रू के पास रुक जाने से हो जाती है। आजकल के चिकित्सकों के मतानुसार अजीर्ण, रक्त की अल्पता, पुरानी कोष्टबद्धता व किसी दांत के सड़ जाने से भी भ्रू-पीड़ा उत्पन्न हो जाती है।

भ्रू-पीड़ा की पहिचान

इस रोग की विशेष पहिचान यह है कि ज्यों-ज्यों सूर्य चढ़ता जाता है, पीड़ा भी उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है, यहां तक कि दोपहर के समय तो रोगी मारे पीड़ा के आंख उठा कर देख भी नहीं सकता। और फिर ज्यों २ सूर्य ढलता जाता है, पीड़ा भी कम होती जाती है यहां तक कि रात को रोगी चैन के साथ सो जाता है। यह

ध्यान में रखना चाहिए कि सूर्यावर्त और भ्रू-पीड़ा के अन्य सभी लक्षण मिलते जुलते से हैं। अन्तर केवल यह विशेष होता है, कि सूर्यावर्त का रोगी दिनरात निरन्तर पीड़ा से छटपटाता है, और भ्रू पीड़ा सूर्य चढ़ने के साथ बढ़ती और सूर्य ढलने के साथ कम होती जाती है। दूसरा अन्तर यह है कि सूर्यावर्त में आधे सिर में पीड़ा होती है, और भ्रू पीडा मे भ्रू के आस पास या अधिकाधिक सामने के आधे चेहरे में पीडा होती है। इसमें सिर के पिछले भाग में पीड़ा नही होती

चिकित्सा का प्रमुख सिद्धान्त

इस रोग की चिकित्सा करने के लिए सबसे पहिले रोगोत्पत्ति के मूल कारणों को दूर करें। यदि अजीर्ण या कोष्ठबद्धता के कारण पीड़ा उत्पन्न हुई हो, तो पहिले उसे दूर करें। साथ ही यदि प्रातः होते ही रोगी के दोनों नयनों में भली भाँति रुई ठूंस दी जाय, ताकि सूर्य की गर्मी मस्तिष्क तक न पहुंच सके, तो पीडा बहुत कम हो जाती है।

सन्यासी प्रयोग

यह सन्यासियों का एक अतिविशप चुटकुला है जो कि बडा ही प्रभावोत्पादक है। यह हर प्रकार की पुरानी से पुरानी सिर पीड़ा को दूर कर देता है और

भ्रू पीड़ा के लिए तो अचूक रामबाण ही है। एक वैद्य जी जी ने तो कई वर्ष तक इसकी असख्य रोगियों पर परीक्षा की, और सवदा सफल पाया। आप जब इस साधारण से चुटकुले की परीक्षा करके इसका चमत्कार देखेंगे, तो निश्चय ही मुग्ध हो जाएंगे। और आपका यह मानना ही पड़ेगा कि ऐसी सामान्य और निष्प्रयोजन वस्तुओं में छुपे महान् गुणों का पता सचमुच साधु महात्माओं को ही हो सकता है, जो कि दिन रात पहाड़ों और जंगलों में ही विचरते रहते हैं। अन्यथा हम साधारण लोग तो उन्हें व्यर्थ समझ कर फेंक दिया करते हैं।

प्रयोग—महामेदा नाम की एक वस्तु प्रायः जड, बेर और बबूल के पेडों पर पाई जाती है, इसकी बनावट ठीक नींबू जैसी होती है और वजन में बड़ी हल्की होती है। लोग इसे धुन्धले शीशे पर फेर कर उसे स्वच्छ किया करते हैं। यूनानी चिकित्सक इसे शैतानी फोता भी कहते हैं। मेरा अपना विचार तो यह है कि यह किसी जीव का घर होता है, फिर इसकी वास्तविकता तो भगवान् ही जाने, कि यह क्या होता है? हा यह वस्तु १ नग लेकर ३-४ तोले गाय के घी में आग पर भूनें। और जब उसका हरा रग परिवर्तित होकर लाल हो जावे, तो घी को उतारलें। तथा उस शैतानी फोते को निचोड़ कर

फेंक दें। फिर घी में यथावश्यक खांड मिला कर रोगी को निरन्तर सात दिन सेवन कराए। हर प्रकार की शिर पीडा सदैव के लिये दूर हो जायेगी।

अनन्तवात

इस रोग को यूनानी भाषा में दर्दउल्ल कहते है। पर-मात्मा इस पीडा में शत्रु को भी बचाये। सम्भवतः यह मस्तिष्क की पीडाओं मे सबसे भयङ्कर पीड़ा है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो सिर की पीड़ा एकत्र होकर आंख की पुतली में आ गई है। रोगी भयङ्कर वेदना से क्षण-प्रतिक्षण छटपटाता है, और ईश्वर न करे यदि यह पीड़ा अधिक हो जाती है, तो कई बार रोगी आंख से भी हाथ धो बैठता है। खेद का विषय है कि हमारे चिकित्सक वर्ग ने इस भयङ्कर रोग की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। कुछ चिकित्सकों का विचार है कि आधा-शीशी और अनन्तवात की एक ही चिकित्सा पर्याप्त है, किन्तु कतिपय चिकित्सक इस बात से पूर्णतया सहमत नही है। उनका अनुभव है मव आधाशीशी की चिकित्सा अनन्तवात के लिए एक सीमा तक लाभकारी अवश्य है किन्तु पूर्णतया रोग नाश नहीं कर सकती। कुछ भी हो हम आपको इस रोग के सर्वनाश करने के लिये एक ऐसा

सन्यासी प्रयोग भेंट करते हैं, जो ईश्वर कृपा से कभी निष्फल नहीं हुआ।

इमाम साहब का प्रयोग

यह प्रयोग एक नस्य का है। यह नस्य जिला लायलपुर के किसी ग्राम की मसजिद के इमाम साहब बनाया करते थे। चूंकि नस्य बड़ी ही प्रभावक सिद्ध हुई है, और मसजिद के इमाम भी फकीर और सन्यासियों के ही समान हैं। अतः उस अनुपम नस्य का प्रयोग भी मैं पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किए देता हूँ, ताकि आवश्यकता के समय वे इससे लाभान्वित हो सकें। मुझे यह प्रयोग अपने एक परम मित्र अब्दुल हक कुरैशी से प्राप्त हुआ है।

प्रयोग—भटकटाई एक जंगली फल होता है जिसे छमक निमोली के नाम से भी पुकारा जाता है, पीले रंग की लें और छाया में भली-भांति सुखाकर सूक्ष्मातिसूक्ष्म पीस कर शीशी में सुरक्षित रखें। और जब कोई रोगी अनन्त वात की वेदना से तड़पता हुआ आपके पास आये, तो तनिक सी औषधि शीशी में से निकाल कर रोगी को नस्य की भांति सुंघा दें। थोड़ी सी देर में ही छींकें आयेंगी, जिनसे मस्तिष्क की रगों में रुका हुआ दूषित द्रव्य बाहर निकल जायेगा। सिर हल्का हो जायेगा और

ईश्वर कृपा से पीडा तत्काल शांत हो जाएगी। यह नस्य न केवल अनन्त वात के लिये लाभकारी है, अपितु भ्रू-पीडा, शिरशूल तथा प्रतिश्याय के लिए भी अति-उत्तम नस्य है।

सन्निपात

इस रोग को यूनानी हकीम सरसाम के नाम से सम्बोधित करते हैं, इस रोग में मस्तिष्क पटल पर सूजन हो जाती है और रोगी मूर्छित हो जाता है। मुख्यतः इस रोग के दो भेद हैं। एक वह कि जिसमें सूजन होजाती है वास्तविक सन्निपात कहलाता है, दूसरा वह जिसमें सूजन नहीं होती, वरन् दूषित धूम्र मस्तिष्क की ओर चढ़कर रोगी को मूर्छित कर देता है। यूं तो चिकित्सा ग्रन्थों में इन भेदों के भी कई प्रभेद बताए गये हैं, किन्तु यहा हम विस्तृत वर्णन में न पड़कर एक दो महान सन्यासी प्रयोग लिखते हैं। ईश्वर की कृपा से आवश्यकता के समय आप इन्ही प्रयोगों से चमत्कारी लाभ प्राप्त करेंगे।

सन्यासी का विशेष रहस्यमय योग

कई साल पूर्व कादियां निवासी हकीम नूरुद्दीन साहब को एक सन्यासी ने प्रसन्न होकर यह योग प्रदान किया था। जब हकीम जी ने इस योग को प्रकट किया तो देश के तमाम वैद्यों और हकीमों ने बना कर भिन्न २ रोगियों

पर इसकी परीक्षा की और इस योग का तात्कालिक चमत्कारी प्रभाव देखकर दंग रह गये। स्वयं हकीम नूरुद्दीन साहब ने अनेक बार इसकी परीक्षा करने के उपरान्त कहा था कि मेने अपनी सारी आयु मे इससे बढ़ कर योग न कभी देखा ही था और न सुना ही। हां एक बात अवश्य है कि यह योग बनता तनिक परिश्रम से है, सो भाई आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा के सभी उत्तम योग परिश्रम से तो बनते ही हैं। परिश्रम का ही फल मीठा होता है। जितने योग परिश्रम से बनते हैं, वे उतने ही अधिक लाभकारी सिद्ध होते हैं। उस समय बनाने वाला परिश्रम के सारे कष्टों को भूल जाता है।

योग- गंधक आमलासार, पारद, नाग भस्म (पीपल से बनाई हुई) मीठा तेलिया प्रत्येक १-१ माशा, रोहू मछली का पित्ता, काले नाग का पित्ता, बकरी का पित्ता और मोर का पित्ता। सबसे पहिले पारे और गंधक की कजली तैयार करें फिर नाग भस्म और मीठा तेलिया मिलाकर भली-भांति बारीक पीसें। तदन्तर शेष द्रव्य एक २ करके मिलाते जावें, और खूब बलवान हाथों से बराबर पीसे जावें। पूरे पांच दिन तक लगातार पीसने के उपरान्त सोने अथवा चांदी की डिबिया में सुरक्षित रखें और जब कोई सन्निपात का रोगी आप के पास आए तो तरुण रोगी

को आधा चावल भर और अन्य रोगियों को खसखस के दाने के बराबर मात्रा मगज कद्दू के शोरे के साथ खिलाएँ। यदि ऐसा न कर सकें तो मस्तिष्क पर पच्छ लगाकर थोड़ी सी दवा ऊपर मलदें। रोगी चाहे कैसा ही अचेत क्यों न हो, तत्काल होश में आजायेगा। अद्भुत लाभकारी योग है। आप को ऐसे लाभकारी योग शायद ही अन्य मिल सकें। स्वयम् परीक्षा कर देखें।

हमारे एक परम मित्र श्री अब्दुलहक़ कुरेशी साहब हैं जो कि दिल्ली में ही रहते हैं, और 'नवाए वतन' 'आरजू' तथा 'साए' आदि पत्रिकाओं के सम्पादक रह चुके है। एक दिन सयोगवश वे मेरे पास उस समय आए जब कि मै इस पुस्तक के लिए उत्तमोत्तम सन्यासी प्रयोग खोज रहा था। मुझे इस प्रकार कार्य लग्न देख कर वे चुपचाप आ बैठे और जब मैने उन्हें बताया कि मै इस समय क्या कर रहा हूँ, तो अचानक उन्होंने अपनी आँखों देखा एक अनुभव भी सुना डाला। उन्होंने बताया कि एक बार मेरे बड़े भाई साहब सन्निपात के रोग में ग्रस्त हो गये। मेरे पिता जी ने अनेक हकीमों और डाक्टरों को बुलाया, किन्तु उनको मूर्च्छा दूर न हुई। उसी समय मुहल्ले के एक वयोवृद्ध सज्जन भी मेरे घर आये और

कहने लगे कि बहुत दिन पूर्व एक फकीर ने बताया कि यदि एक जंगली कबुतर पकड कर रोगी के सिर पर जिबह किया जाय, ताकि उसके गले का गरम २ रक्त रोगी के सिर पर पडे। और फिर तत्क्षण ही उसका पेट चीर कर बालों व पर समेत रोगी के सिर पर बांध दिया जाय, तो निश्चय ही रोगी उसी दम होश में आ जायेगा। यह सुनकर एक हकीम जी ने भी इस प्रयोग की परीक्षा करने की सम्मति दी। चूंकि मेरे पिता जी भी फकीरी चुटकुलो पर हकीमी नुसखा से भी अधिक विश्वास करते थे, अस्तु उन्होंने उसी समय एक आदमी भेजकर जंगली कबूतर का प्रबन्ध किया और उन वृद्ध सज्जन ने आदेशानुसार वह कबुतर जिबह करके बांध दिया गया। हा यह बताना तो भूल ही गया कि कबूतर का पेट चीर कर तत्क्षण ही उसे सिर पर बांधने के लिये उन्होंने आदेश किया था और कहा था कि यदि कबूतर ठण्डा हो गया, तो फिर लाभ न होगा। भई ईश्वर की ऐसी लीला कि उसी दम हमारे भाई साहब ने आंखें खोल दी और,, अच्छी तरह बातें करने लग गये। मेने यह आंखों देखा प्रयोग बताने के लिए कुरैशी साहब को धन्यवाद दिया। यद्यपि यह प्रयोग यवनों के लिये ही उचित है, तथापि अत्यधिक प्रशंसित होने के कारण लिख दिया। ताकि यथा समय जरूरत मन्द लाभ उठा सकें।

अर्द्धाङ्ग तथा अर्दित रोग

यह दोनो रोग भी अति भयङ्कर होते हैं। अच्छे भले आदमी को भी देखते २ उठने बैठने में भी असमर्थ बना देते है। अर्द्धाङ्ग वह रोग है जिसमें कि सहसा रोगी का आधा शरीर निश्चेष्ट तथा जड़वत् हो जाता है और वह उस भाग को हिला डुला भी नही सकता। तथा अर्दित उसे कहते हैं, जिसमें रोगी का मुँह एक ओर को टेढ़ा हो जाता है, और बेचारा उसे घुमा कर सामने की ओर देख भी नही सकता। ये दोनों ही रोग एक ही कारण से होते हैं, और इनको चिकित्सा भी एक ही सी होती है, अतः दोनों का एक साथ ही वर्णन किया जाता है।

अर्द्धाङ्ग व अर्दित रोग होने के कारण

ये दोनों रोग प्रायः शीत की अधिकता से होते हैं। इसलिए अधिकतर जाड़े के दिनों में ही लोग इनके शिकार हो जाया करते है। विशेषकर ऐसे लोग, जो कि शीत प्रकृति के होते हैं और शरीर दुर्बल अथवा वृद्ध होता है तथा जिनके शरीर में कफ की अधिकता रहती है, वे इस रोग के शीघ्र ही लक्ष्य बन जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों को यदि कभी ठण्डी वायु लग गई अथवा ठण्डा पानी पी

लिया, तो शीघ्र ही यह रोग उन पर आक्रमण कर लेता है।

चिकित्सकों के सुनहरे आदेश

अर्द्धांग के अर्दित के रोगियों के लिए ये सुनहरे आदेश बड़े ही उपयोगी हैं, और चिकित्सक तथा चिकित्स्य दोनों को ही इनका ध्यान रखना चाहिये।

१--प्रथम आदेश यह है कि जब रोगी को अर्द्धाङ्ग या अर्दित का दौरा पड़े, तो सर्व प्रथम रोगी को भोजन देना बन्द कर दें। केवल शहद को पानी के साथ मिलाकर आग पर तनिक गर्म करके पिलाना प्रारम्भ कर दें और निरन्तर एक सप्ताह तक इसके अतिरिक्त कुछ भी खाने को न दें। यदि कालान्तर में भूख कभी अधिक सताये, तो कबूतर या बटेर का शोरबा दिया जा सकता है।

२--अर्द्धाङ्ग व अर्दित के रोगी को ४० दिन तक किसी भी प्रकार की नस्य देना हानिकर होता है।

३--रोगी को सदैव अन्धकार पूर्ण बन्द कमरे में रखना चाहिए, क्योंकि हवा और प्रकाश दोनों रोगी के लिए हानिकारक होते हैं।

सन्यासी चिकित्सा

अब हम इस रोग के लिये अपने प्रिय पाठकों को वह गुप्तातिगुप्त सन्यासी प्रयोग भेंट करते हैं, जो कि जिला गुजरात में हमारे एक मित्र हकीम साहब को किसी सन्यासी ने प्रदान किया था। यदि आप आयुर्वेदिक तथा यूनानी चिकित्सा के उत्तमोत्तम योग प्राप्त करना चाहें, तो हमारी पूर्व प्रकाशित 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' तथा 'देहाती एकौषधि चिकित्सा' आदि देखें, जिनके पूर्ण परीक्षित और परम लाभप्रद योगों की प्रशंसा आज देश का प्रत्येक वैद्य, हकीम तथा साधारण पाठक भी कर रहा है। इस पुस्तक में तो हम केवल सन्यासियों के ही गुप्त चुटकुले बतायेंगे। किन्तु आपको परीक्षा करने के उपरान्त यह मानना ही पड़ेगा कि ये सरल चुटकुले भी प्रभाव में उत्तमोत्तम योगों से कम नहीं। अर्द्धाङ्ग का सन्यासी प्रयोग यह है :—

हरमल के बीज पोटली में बांध कर दोला-यन्त्र की विधि से दो सेर गाय के दूध में पकावें। और पकते २ जब आधा सेर दूध शेष रह जाय, तो उतार लें। और पोटली को दूध में निचोड़ कर १० तोला गाय का घी और ५ तोला देशी खांड मिला कर रोगी को गर्म ही खिलावें तथा गर्म कपड़ा उढ़ा कर रोगी को सुला दें।

उसे अत्यधिक पसीना आएगा, किन्तु पसीने को अन्दर ही अन्दर कपड़े से पोंछते रहें। बस इसी विधि से २-४ बार रोगी को सेवन कराएँ। निश्चय ही रोगी ठीक हो जायेगा। यह प्रयोग कदापि निष्फल नहीं जाता।

विशेष सूचना--दौला यन्त्र की विधि आप हमारी पूर्व प्रकाशित पुस्तक 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में पढ़ ही चुके होंगे। और यदि उक्त पुस्तक अभी तक आपने नहीं पढ़ी है, तो हम से मंगा लें। उसमें सविस्तार समझा-कर लिखी गई है।

पथ्यापथ्य--दूध, दही, छाछ और ठंडी वस्तुओं से परहेज रखें और रोगी को आरम्भ में शहद और पानी उबाल कर पिलायें। फिर कबूतर, बटेर का शोरबा भी पिला सकते हैं।

अपस्मार (मृगी)

यह रोग भी बड़ा भयंकर है और औषधियों के सेवन से कठिनता पूर्वक हो जाता है। हां ऐसे रोगों पर सन्यासियों के चुटकुले बड़े ही लाभदायक सिद्ध होते हैं। प्रायः आपने देखा होगा कि छोटे २ साधू सन्यासी भी मृगी के दौरे, सांप-बिच्छू के काटे आदि रोगियों को इन चुटकुलों द्वारा ही पांच मिनट में स्वस्थ करके चमत्कारी

महात्मा प्रसिद्ध हो जाते हैं। भोलेभाले ग्रामवासी इसकी यथार्थता को नहीं समझ पाते। निस्सन्देह यदि आप भी आवश्यकता पडने पर इनका अनुभव करेंगे, तो आसपास के गांवों में जादूगर के नाम से प्रसिद्ध हो जायेंगे।

अपस्मार के लक्षण

यह भयंकर रोग दौरे से आया करता है और दौरे के समय रोगी अचेत होकर भूमिशायी हो जाता है। जब इस रोग का दौरा पडता है, तो रोगी चाहे सड़क पर हो या जंगल में, तत्काल वहीं गिर जाता है और उसके मुंह से झाग आने लगता है। इसका कारण यह होता है कि कफ से उत्पन्न दूषित मल मस्तिष्क की गति को बंद कर देता है और चेतना शून्य होकर रोगी गिर जाता है। हाथ पांव ऐंठने लगते है, कभी २ ऐंठन नहीं भी होती है। यदि बार २ रोगी दौरे के समय अपनी जीभ को काटे, तो मस्तिष्क की दुर्बलता और मलाधिक्य के लक्षण हैं। अब हम आपको उपमा के लिए दो तीन उत्तमोत्तम प्रयोग भेंट करते हैं। ईश्वर कृपा से निश्चय ही इन से आपको यश व सफलता प्राप्त होगी।

सन्यासी योग

यह एक बहुत ही पुराना और विशेषातिविशेष गुप्त सन्यासियों के हृदय का रहस्य है। इस योग को पहाड़ों

की कन्दराओं में रहने वाले बड़े २ सन्यासी ही जानते हैं। हर साधारण सन्यासी इसे नहीं जानता। किसी प्रकार हकीम सन्तोष कुमार जी कत्तारपुरी को यह योग एक सन्यासी से प्राप्त हो गया था, और पूर्ण परीक्षा करने के उपरान्त उन्होंने लाहौर के वार्षिक अधिवेशन मे प्रकट किया था और कहा था कि अपस्मार के लिये इससे अधिक प्रभावोत्पादक योग बड़े २ चिकित्सा ग्रन्थो में भी कम ही प्राप्त हैं। योग इस प्रकार है :—

पहिली ही बार जिस गाय ने बछड़ा दिया हो, उस नर बछड़े का गोबर खरल में डाल कर खूब खरल करें। जब सूखने पर हो, तो आक का दूध डाल कर खरल करें और जभी सूखने पर हो तभी पुनः आक का दूध डालकर खरल करें। पूरे २० बार इसी प्रकार दूध डाल २ कर खरल करें। तदनन्तर उसे अच्छी प्रकार सुखा लें और इसके आधे भाग के बराबर काली मिर्च मिला कर बारीक पीस कर शीशी में रख छोड़ें। और जब किसी रोगी को दौरा पड़े तो आधा चावल दवा नाक में डालकर नलकी या अन्य किसी वस्तु से फूंक मारें। उसी समय रोगी को चेतना आ जायेगी।

सन्यासी-धूनी

सन्यासियों की यह गुप्त धूनी भी अद्भुत चमत्कारी

है। हमारे एक प्रिय मित्र रामस्वरूप दीक्षित इटावा निवासी ने लगभग ३ वर्ष पूर्व बताया था कि मेरे बाबा को अपस्मार के दौरे पडा करते थे। बेचारे कई वर्ष से इस रोग में फसे रहकर घोर यातना सह रहे थे। एक बार तो बेचारे मन्दिर मे पूजा करने जा रहे थे कि अचानक सीढ़ी पर पैर रखते ही दौरे के कारण मूर्छित होकर गिर पडे। वह तो कुशल हुई कि वे कुछ सीढ़ियां न चढ़ पाये थे, अन्यथा लुढ़क कर नीचे आ गिरते और प्राण रक्षा भी दुष्कर हो जाती। उसी मन्दिर में एक साधु महाराज उन दिनों आकर ठहरे हुए थे। उन्होंने एक ऐसी अद्भुत धूनी बताई कि जिससे आजन्म के लिए उन्हें इस भयंकर रोग से छुटकारा मिल गया। विधि इस प्रकार है:—

खटमल नाम का कीडा, जो चारपाइयों मे पाया जाता है, उन्हें पकड़ २ कर एक कपडे पर मलते रहें, यहां तक कि कपडा उनके रक्त से तर हो जाये बस, जब भी अपस्मार का दौरा पडे तभी उस कपडे में से थोड़ा सा टुकड़ा काट कर बत्ती बनालें और आग लगा कर उसका धुंआ रोगी की नाक में पहुंचावें। ईश्वर कृपा से तत्क्षण रोगी स्वस्थ हो जायेगा। यदि फिर कभी दौरा पड़े तो पुनः इसी विधि से धूनी दें। दो तीन बार में ही सदा के लिये रोग से मुक्ति मिल जायेगी

एक और फकीरी योग

यह चुटकुला है तो बड़ा ही आश्चर्यजनक, किन्तु इसे रोगी से छुपा कर ही प्रयोग कराना चाहिए। ईश्वर कृपा से दो तीन बार में ही आशातीत सफलता प्राप्त होगी और फिर यह दौरा कभी न पड़ेगा।

१ नग गधे की लीद ताजा निचोड़ कर उसका पानी निकाल लें और दौरे के समय रोगी को पिलादें। रोगी तत्काल होश में आकर आजन्म के लिये रोग मुक्त हो जाएगा।

नेत्र जैसे महत्वपूर्ण अंग का परिचय हम पुस्तक के आरम्भ में लिख चुके हैं। अब हम नेत्र के उन प्रमुख रोगों का वर्णन करेंगे, जिनके लिए हमारे पास उत्तम सन्यासी चुटकुले संग्रहीत हैं। हम पहिले भी आपको बता चुके हैं कि यदि शरीर के समस्त रोगों का विशद वर्णन और उनके निवारणार्थ उत्तमोत्तम आयुर्वेदिक तथा यूनानी योग आप पढ़ना चाहें तो हमारी पूर्व प्रकाशित पुस्तक 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' या 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' मंगा

कर पढ़ें। इस पुस्तक में तो हम केवल उन्हीं रोगों को लिखेंगे जो कि सन्यासियों के सरल चुटकुलों से ही सदा के लिए उड़ जाते हैं। लेकिन इससे आपको यह न समझना चाहिए, कि सन्यासी चुटकुले केवल छोटे मोटे रोगो के लिए ही लाभदायक होते हैं। अपितु मै दृढ़ विश्वास के साथ कह सकता हूँ और मै ही क्या? सभी लोग इस बात को मानते हैं कि कभी २ सन्निपात, मृगी, मोतियाबिंदु काली खांसी, निमोनिया, पाण्डु रोग, संग्रहणी, तपेदिक तथा नपुसकता जैसे दुस्साध्य रोगों पर आयुर्वेदिक और डाक्टरी के योग असफल हो जाते हैं, किन्तु सन्यासी चुटकुले उन रोगों मे निराशतम रोगियों पर भी जादूई प्रभाव दिखाते हैं।

नेत्र सम्बन्धी रोगों में सब प्रथम हम आपको आंख के फोले या जाले का चमत्कारी चुटकला भेंट करते हैं। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि यथा समय वह आपको सफलता प्रदान करे।

आंख का जाला व फोला

नेत्र रोगों में ये दोनो रोग बड़े ही दुसाध्य और कष्टप्रद होते है। आंख की पुतली पर श्वेत बिन्दु पड जाने का 'फोला' कहते हैं, और जो हल्का-हल्का बादल के समान श्वेत आवरण छा जाता है वह 'जाला' कहलाता

है। प्रायः आँख दुखने पर यदि उसकी समुचित चिकित्सा नहीं हो पाती है अथवा आंख की पुतली में किसी कारण से घाव उत्पन्न हो जाता है तो उसी का धब्बा 'फोले' का रूप धारण कर लेता है। इसके रोगी की दृष्टि घट जाती है या नितान्त ही नष्ट हो जाती है। बहुधा छोटे बच्चे का फोला तो सरलता पूर्वक कट जाता है किन्तु युवा और वृद्धों की आंख का फोला बड़ी कठिनाई से जाता है।

सन्यासी प्रयोग

कुछ समय पूर्व यह प्रयोग मैंने चिकित्सा सम्बन्धी एक अतिउत्तम उर्दू पुस्तक से उद्धृत किया था। यह एक अति प्राचीन सन्यासियों का विशेष प्रयोग है जो कि परीक्षणोपरांत 'आंख के फोले' के लिए अत्यधिक लाभ कारी सिद्ध हुआ है।

उजड़े हुए थेहड़ पर से हरे रंग की कांच की चूड़ी ढूंढें और उसे कांसी के किसी पात्र में ओस का जल डाल कर घिसना आरम्भ करें। जब ओस सूख जाय, तो और डाल लें और बराबर घिसते रहें, यहां तक कि सारी चूड़ी घिस जाय और उसे हरे रंग का जगार सा शेप रह जाय। उसे भली-भांति खरल करके शीशी में सुरक्षित रखें। यद्यपि इस योग को तैयार करने में १५-२० दिन लगते हैं, परन्तु अन्त में फोले की अक्सीर औषधि

बन कर तैयार हो जाती है। चाहे फोला कितना ही बड़ा क्यों न हो, दो दिन में ही साफ हो जाता है।

ओस का पानी प्राप्त करने की विधि यह है कि एक स्वच्छ रूमाल ओस की ऋतु में प्रातःकाल पौधों के ऊपर बिछा दें। जब तर हो जाय तो किसी बोतल में निचोड़ लें। इसी प्रकार आवश्यकतानुसार ओस-जल इकट्ठा कर सकते हैं।

कुछ सन्यासियाना टोटके

१—समुद्र-झाग को पानी में घिस कर आंखों में डालते रहें, फोला, जाला आदि शीघ्र ही साफ हो जायेंगे।

२—बारहसिंगे का सींग स्त्री के दूध में घिस कर आंख में लगावें। इससे २० वर्ष का फोला भी दूर हो जाता है।

३—रीठे के छिलके को पानी के साथ घिसकर सलाई से आंख में डाला करें। फोला दूर हो जायेगा।

४—हाथी के नाखून को सात दिन तक नित्य ताजा सिरस के रस में भिगोयें, फिर एक दिन कुंए के पानी में भिगोयें। तदन्तर उसे पानी से पत्थर पर घिस कर सलाई द्वारा नेत्रों में लगाया करें।

५—गधे का दांत वर्षा के जल में घिस कर सलाई से

आंखों में लगाया करें। ईश्वर कृपा से हर प्रकार का फोला कट कर दृष्टि साफ हो जाती है।

मोतियाबिन्दु

यह रोग आज कल हमारे देश में अत्यधिक पाया जाने लगा है। और दुर्भाग्यवश ऐसा रोग है, जिससे लाखों व्यक्ति दृष्टि जैसी अनमोल ईश्वरीय देन से वंचित हो गये हैं। यदि रोग की प्रारम्भिक अवस्था में ही इसकी चिकित्सा करली जाय तो उतरता हुआ पानी सुगमता से रोका भी जा सकता है, किन्तु जब पानी पूरा उतर आता है तो फिर औषधि उपचार से उसे दूर करना असम्भव नहीं तो दुस्साध्य अवश्य हो जाता है। हम आपको इस रोग के वे सन्यासी प्रयोग भेंट करते हैं जो कि दुस्साध्य से दुस्साध्य मोतियाबिन्दु को साफ करके लोगों को आश्चर्य चकित कर देने वाले हैं। हमारे एक परिचित वैद्य जी ने इनको अनेक रोगियों पर अनुभव किया और आश्चर्य-जनक गुणकारी पाया। आवश्यकता के समय आप भी परीक्षा करें और लाभ उठावें।

मोतियाबिन्दु का प्रथम सन्यासी प्रयोग

एक काले सर्प को मार कर उसके मुख मे दो तोला काले सुरमे की डली रखदें और मुख बन्द करदें। फिर एक लम्बी खाई खोदकर उसमें ५ सेर बकरी की मेंगनी

बिछा दें और उनके ऊपर २ सेर गेहूं की तह बिछा कर ऊपर सांप को लिटादें। तथा उसके ऊपर पुनः दो सेर गेहूँ और फिर ५ सेर बकरी की मगनी की तहें बिछा कर निर्वातस्थान में आग लगादें चूंकि इसका धुआं विषैला होता है अतः आग ऐसे स्थान पर दें, जहां मनुष्यों का आना जाना न हो। जब आग ठंडी हो जाए तो सुरमे की डली निकाल कर बारीक पीसलें और शीशी में सुरक्षित रखलें। तथा प्रतिदिन रात को २-२ सलाई आंख में डाला करें। प्रभु कृपा से कतिपय दिनों में ही मोतिया-बिन्दु साफ हो जायगा। यह प्रयोग एक हस्त लिखित संचिका से उद्धृत किया गया है जो सैकड़ों वर्षों पुरानी है। इस संचिका से अन्यान्य रोगों के भी उत्तमोत्तम सन्यासी प्रयोग प्राप्त हुए हैं जो कि सैकड़ों वर्षों पूर्व के बड़े २ साधु सन्यासियों से प्राप्त हुए थे। वे सभी प्रयोग इस पुस्तक में यथा स्थान अंकित कर दिये गए हैं। मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि इस प्राचीन संचिका का एक भी प्रयोग कदापि निष्फल नहीं हो सकता। आप जब चाहें स्वयं परीक्षा करके देख सकते हैं। निस्सन्देह ही इसका एक २ प्रयोग लाख रुपये का है।

द्वितीय सन्यासी योग

यह योग हमारे परम मित्र दीवान बी० आर० स्व०

को पूज्यपाद सन्यासी पद्मगिरि जी महाराज ने प्रदान किया था और कहा था कि इस योग से न केवल मोतिया-बिन्दु, अपितु समस्त नेत्र रोग अल्पकाल में ही दूर हो जाते है। योग इस प्रकार है:—

शंखनाभि, प्रवाल, तांबा इनकी भस्म बनालें। फिर बहेडा, हरड, हीरा कसीस, सफेद मुर्गी के अण्डे का छिलका बरडा बूटी की भस्म, इन सबको बराबर २ लेकर बकरी के कच्चे दूध के साथ तांबे की खरल म निरन्तर सात ि तक खूब रगड़ें फिर गोला सा बना कर बकरी के सा.. । मे अगुली इतना २ कर लम्बी २ बत्तियां बनाले। इस बत्ती को बकरी के दूध में घिसकर सलाई से मोतियाबिन्दु के रोगी की आंख में लगाया करें और नेत्रों के सामने हरे रंग का स्वच्छ कपडा बाधें। इसके साथ ही रोगी को ?२ दिन पर्यन्त अन्धेरे मकान मैं रखें और भोजन में केवल चावल खाने के लिये दें। अन्य सभी चीजों से परहेज रखना अत्यावश्यक है। इससे फोला, जाला, पड़वाल, लाली, कुकरे तथा मोतियाबिन्दु थोड़े समय में ही नितान्त दूर हो जाते हैं।

शंख भस्म बनाने की विधि

शंख को आग में तपा कर गुलाब जल में बुझाएं और यही क्रम उस समय तक जारी रखें जब तक कि

शंख चूर २ हो जाय। इसी भस्म को उपरोक्त योग में सम्मिलित करें।

प्रवाल भस्म बनाना

घृत कुमारी के गूदे में आवश्यकतानुसार प्रवाल रखकर कपरौटी करके १० सेर उपलों को आग दें। प्रवाल भस्म तैयार हो जायेगी।

तांबा भस्म बनाना

चूंकि तांबे की भस्म बनाने की विधि 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' के द्वितीय भाग में समझा कर लिखी जा चुकी है, अतः यहां न लिख कर आप से निवेदन करेंगे, आप उसमें ही देखने का कष्ट करें। उस पुस्तक में अन्यान्य आयुर्वेदिक भस्में बनाने की विधियां भी आपको प्राप्त हो जायेंगी।

नेत्र रोगों के विविध सन्यासी प्रयोग

अब हम कुछ ऐसे सन्यासी प्रयोग अङ्कित करते हैं जो नेत्र लालिमा, फोला, जाला, कुकरे, नेत्र स्राव तथा मोतियाबिन्दु तक के लिये अत्यधिक लाभप्रद हैं। जिन सज्जनों को ये प्रयोग सन्यासी महात्माओं से प्राप्त हुए थे, उन्होंने परीक्षा करने पर इनके अदभुत प्रभाव को देख कर अत्यधिक प्रशंसा की है। मुझे आशा ही नहीं, अपितु

पूर्ण विश्वास है कि यदि आवश्यकता के समय आप लोग इनका अनुभव करेंगे, तो ईश्वर कृपा से कभी निराश न होंगे।

सन्यासी नेत्र अगद

यह प्रयोग हमारे एक मित्र वैद्य को स्वामी सरस्वती नन्द धर्म ज्ञान प्रचारक आश्रम सांडासाल (बड़ौदा स्टेट से प्राप्त हुआ था। यह एक विशेषातिविशेष सन्यासी प्रयोग है जो कि श्री पूजनीय स्वामी जी को सत्सग काल में किसी सन्यासी से प्राप्त हुआ था। इस प्रयोग की स्वामी जी ने अत्यधिक प्रशंसा की है। उन्होंने लिखा था कि नेत्र सम्बन्धी समस्त रोगों की यह एकमात्र अक्सीर औषधि है। यह आज तक कभी निष्फल नहीं गई और जिस रोगी को भी दी गई, ईश्वर की कृपा से उसे पूर्ण लाभ प्राप्त हुआ है। अधिक दिनों तक सेवन करने से यह मोतियाबिन्दु तक को उड़ा देती है। सहस्रों रोगियों पर परीक्षा की जा चुकी है। अत्यधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है।

योग–ढाक (एक जंगली वृक्ष है) की जड़ें निकाल कर छोटे २ टुकड़े करके एक मिट्टी के पात्र में डालें, किंतु पात्र का चौथाई भाग खाली रहे। अब इस पर चीनी का एक प्याला रख दें और पात्र के मुख पर एक मिट्टी का

ही ढक्कन रख कर मुख मुद्रा कर दें, ताकि भाप बाहर न निकल सके। फिर उस पात्र को आग पर चढ़ा कर लगातार ३ घन्टे आग जलावें और ऊपर वाले बर्तन में ठंडा पानी भर कर रखें। जब वह गर्म हो जावे तो निकाल दें और पुनः ठंडा पानी भर दें। इसी प्रकार करते हुए पूरे ३ घंटे आग देने के उपरान्त आग बुझा दें और बर्तन के सर्वाङ्ग शीतल हो जाने पर मुद्रा तोड़ कर अन्दर से पीले रंग के अर्क से भरा हुआ चीनी का प्याला निकाल ले और अर्क को शीशी में भर कर सुरक्षित रख। इसी अर्क को ड्रापर द्वारा २-२ बूंद नेत्रों में डाला करें। ईश्वरानुकम्पा से नेत्र के सभी रोग शीघ्र दूर हो जायेंगे।

अत्युत्तम फकीरी सुरमा

यह फकीरी सुरमा धुन्ध, रतौंधी, जाला, कुकरा, तथा मोतियाबिन्दु आदि के लिए परम लाभदायक है। मेरे एक परिचित सज्जन के पूर्वजों को सैकड़ों वर्ष पूर्व यह योग किसी सन्यासी ने प्रदान किया था। यह ऐसा उत्तम सुरमा है कि उनके वंश में निरन्तर तभी से प्रयोग होता आ रहा है। उनके पूर्वजों की हस्त-लिखित संचिका से इस योग को उद्धृत करके पाठकों को भेंट किया जा रहा है। आशा है, आप लोग इससे लाभान्वित होकर हमें आशीर्वाद प्रदान करेंगे। योग इस प्रकार है:—

१० तोला नीलाथोथा (तूतिया) हरा लेकर स्त्री के दूध में निरन्तर खरल करें। यहा तक कि लगभग पाव भर दूध प्रविष्ट हो जाय। बस, अक्सीरी सुरमा तैयार हो गया। इसे सुरक्षित रख लें, और आवश्यकता के समय सलाई द्वारा निरन्तर एक सप्ताह आख मे डालें, समस्त रोग दूर होकर दृष्टि स्वच्छ हो जायेगी।

नेत्र-स्राव के लिए सन्यासी चुटकुले

यदि नेत्रों से पानी बहने का कारण कुकरे आदि न हों, तो निम्नांकित सुगम चुटकुले अत्यधिक लाभकारी प्रमाणित होते हैं। आवश्यकता के समय अनुभव करके लाभ उठायें।

प्रथम चुटकुला

रोगी पर इस आश्चर्यजनक चुटकुले का भेद किसी भी प्रकार प्रकट न होने दें। फिर देखिए कैसा चमत्कार दिखाता है? किसी बहाने से रोगी के कान की मैल निकलवालें और उसे सलाई द्वारा बिना रोगी को बताए हुए उसकी आखों में लगा दें। इसके बारे में एक सन्यासी कहता था कि यह चुटकुला ऐसा चमत्कार दिखाता है कि उसी दिन से आखों से पानी बहना बन्द हो जाता है। फिर यदि घर का कोई आदमी ही क्यों न मर जाए रोगी

की आंखों से कोशिश करने पर भी एक बूंद तक पानी नहीं निकलेगा।

द्वितीय चुटकुला

यह तो सैकड़ो वैद्यों का परीक्षित योग है, जो अद्भुत लाभदायक सिद्ध होता है। हुक्के के नीचे की मल, जिसे हुक्के का मक्कू भी कहते हैं—लेकर शीशी में सुरक्षित रख लें और आवश्यकता के समय पानी में घोलकर बहुत थोडी मात्रा में सलाई द्वारा रोगी की आखो मे लगा दें। यह एक बार आख में चुभेगा तो बहुत, किन्तु तत्क्षण अपना चमत्कारी प्रभाव दिखाएगा, और प्रभु कृपा से नेत्रों से पानी बहना बन्द हो जाएगा।

तृतीय सन्यासी योग

यह गुप्त योग एक प्रसिद्ध सन्यासी जी ने बडी सेवा सुश्रूषा के उपरांत हृदय कोष्ठ से निकाला था। इसकी एक सलाई आंख में लगाते ही बहता हुआ पानी तत्काल रुक जाता है। पाठकों के लाभार्थ उसे भी अंकित किया जाता है।

उत्तम मिश्री १ तोला और तूतिया दो रत्ती। पहिले मिश्री को खरल में डालकर भली भाति खरल करें, जब नितान्त सूक्ष्म हो जाय, तो तूतिया डालकर पुनः खरल

करें और बारीक करके शीशी में रख लें। आवश्यकता के समय प्रातः सायं दोनों समय २-२ सलाई आँख में लगाया करें। परम लाभकारी सिद्ध होगा। अनेक बार का अनुभूत है।

कर्ण रोग

हमारे शरीर की विविध इन्द्रियों में कर्ण भी एक विशेष महत्व रखता है। यहाँ तक कि आधुनिक डाक्टरों के मतानुसार नेत्रों से भी अधिक महत्वपूर्ण और आवश्यकीय कर्ण हैं। हम पुस्तक के प्रारम्भ में अङ्ग परिचय करते हुए इस पर समुचित प्रकाश डाल चुके हैं। यदि उससे भी आपकी जिज्ञासा शांत न हो, तो हमारी पूर्व प्रकाशित पुस्तक 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' का अध्ययन करें, जिसमें कि पर्याप्त वर्णन आपको मिलेगा। और साथ ही विविध रोगों के उत्तमोत्तम आयुर्वेदिक योग भी। यहां पर हम कुछ विशेष कष्ट प्रद तथा बहु प्रचलित कर्ण-रोगों का वर्णन करेंगे, और ऐसे २ सुगम सन्यासी प्रयोग आप को भेट होगा, जिनके द्वारा बिना एक भी पैसा व्यय किए अपूर्व लाभ प्राप्त करेंगे। और यदि कहीं इन्हीं सरल चुटकुलों द्वारा आपने अपने गांव के दो चार रोगियों को

मुक्त कर दिया, तो ईश्वर कृपा से आपका नाम और कीर्ति चारों दिशाओं में गूंज उठेगी। किन्तु यहां हम आपको एक बार पुनः स्मरण कराये देते है, कि इस पुस्तक में हम केवल उन्ही रोगों का वर्णन कर रहे हैं, जिन पर चमत्कारी प्रभाव दिखाने वाले सन्यासी प्रयोग हमारे पास हैं। इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए, कि बस संसार में इतने ही प्रकार के रोग हैं। यदि आप पूरे २ दक्ष वैद्य ही बनना चाहते है, तो हमारी 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' तथा 'देहाती एकोषधि चिकित्सा' नामक पुस्तकें अवश्य पढें। और यदि हमारी 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' पुस्तक भी आपके पास है, जिसमें गावों के खेतों व आस पास के जगलों में पाए जाने वाले पेड़ पौधों व बूटियों आदि से ही समस्त रोगों की एक चिकित्सा करना बताया गया है, तो निस्सन्देह बड़े २ वैद्य हकीम भी आपका लोहा मान जाये गे। और आपको अपूर्व यश लाभ होगा

कर्ण-पीड़ा

कान की पीड़ा भी बड़ी वेदनामय होती है। इसमें रह २ कर रोगी के कान में टीसे उठती है, मानो कोई सुई चुभो रहा हो। और रोगी उस असह्य पीड़ा से तड़प उठता है। प्रायः यह रोग शीत लग जाने, कान में पानी भर जाने, दाँत के सड़ जाने अथवा गठिया के कारण हो जाता

है। यदि शीत के कारण पीड़ा होगी तो सेकने से आराम मिलता है, किन्तु यदि पानी पड जाने से पीड़ा हो गई है, तो उसे 'आरस्कोप' यन्त्र की सहायता से कान की अभ्यन्तरीय अवस्था देख कर जाना जा सकता है। इसके लिये एक अति सरल सन्यासी चटकुला लिखा जाता है, ईश्वर कृपा से परम लाभ कारी सिद्ध होगा।

सन्यासी प्रयोग

गधे की ताजा लीद को किसी बारीक कपडे में रख कर उसका पानी निचोड़ लें, और समोष्ण करके रोगी के कान में डाल दें। ऐसा चमत्कारक प्रयोग है, कि ईश्वर कृपा से तड़पते हुए रोगी को भी तत्क्षण आराम हो जाता है।

द्वितीय प्रयोग

यदि कर्ण पीड़ा पित्त के कारण हो, तो श्वेत चन्दन स्त्री के दूध में घिसकर कान म डालें। परन्तु इसे समोष्ण करके डालना चाहिए। तत्काल आराम हो जायगा।

सन्यासियाना भफारा

नीम के पत्तों का क्वाथ बनाकर कान में भफारा दें। उसी समय रोगी को चैन पड़ जायगा।

कर्णस्राव (कान का बहना)

यदि कान से पीप बहती हो तो उसे वैद्यक भाषा में कर्ण स्राव कहते हैं। इस रोग का कारण प्रायः यह होता है कि कान की फुन्सी या सूजन पक कर फूट जाती है और उस घाव से पीप आने लगती है। यह रोग बड़ा ही भयकर होता था, यदि तुरन्त इसकी चिकित्सा न की जाय तो मस्तिष्क को क्षति पहुँचने की शंका रहती है और मस्तिष्क में शोथ या क्षत उत्पन्न हो जाने पर प्रायः सन्निपात हो जाता है।

कर्ण स्राव का पहिचान

इस रोग में कान से पीप आता रहता है और जब पीप आना कुछ रुक जाता है तो पीड़ा और भी बढ़ जाती है। यदि क्षत कान की भीतरी गहराई में होता है तो रोगी का सिर चकराने लगता है।

कर्णस्राव का प्रथम चुटकुला

यह एक साधारण सा सन्यासी चुटकुला है जो गांव-गाँव में प्रचलित है। मुझे अपने पूज्य बाबा ने बताया था, अपितु हमारे ग्राम के एक लड़के का कान बचपन से बह रहा था। हमारे बाबा ने उस लड़के के पिता को यही चुटकुला प्रयोग करने की राय दी। ईश्वर कृपा से एक सप्ताह के सेवन से ही उसका कान बहना बन्द हो गया। प्रयोग यह है :—

मोर के पंजे को कडुवे तेल में जलाकर छान लें और यथा नियम कान में डालते रहें। अधिकाधिक एक सप्ताह में ही कान का बहना रुक जायेगा।

७८ दूसरा चुटकुला

सरसों के तेल मे कीकर के फूल जला कर तेल को छान कर शीशी मे सुरक्षित रखें और २—३ बूँद नित्य प्रातः सायं कान में डालते रहें। कुछ ही दिनों मे कर्ण-पीड़ा व कर्ण स्राव दूर हो जायेंगे।

नासिका रोग

नासिका का परिचय हम प्रारम्भ में दे चुके हैं। नासिका सम्बन्धी विविध रोगों का विवरण 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में देखें। यहां हम केवल बहुप्रचलित 'नकसीर' रोग के ही कुछ चमत्कारी सन्यासी प्रयोग आप लोगों को भेंट करते हैं।

नकसीर फूटना

इस रोग में नाक की रगें रक्त से भरकर फट जाती हैं। प्रायः नवयुवती लड़कियों को मासिकधर्म की अवधि से पूर्व यह रोग अधिक होता है। कभी २ तीव्र ज्वरों में भी नकसीर फूटा करती है।

नक्सीर के शुभ लक्षण

यदि तीव्र ज्वर में या पार्श्वशूल मे बोहरान के रूप में आवे तो स्वास्थ्य तथा सुख चैन का संदेश लाती है, अतः उसे रोकना नहीं चाहिए।

दूसरे यदि नक्सीर में काले रंग का रक्त निकलता हो, तो उसे भी रोकना नही चाहिए। हां अत्यधिक मात्रा में निकलने पर रोक दें।

नाक द्वारा मृत्यु की पहिचान

१. यदि रोगी के चेहरे का रंग पीला हो और नाक उससे भी अधिक पीली हो, तथा नाक की कोंपल पतली होकर एक ओर को मुड जाय, तो ऐसे रोगी को कुछ घडियों का ही मेहमान समझ लेना चाहिए।

२. जिस रोगी की नासिका शुष्क हो जाये या अकड़ कर बैठ सी जाय, तो ऐसा रोगी एक सप्ताह से अधिक जीवित नही रह सकता।

३. यदि रोगी को नस्य आदि प्रयोग कराने पर भी छींकें न आएं तो समझलो मृत्यु निकट ही खड़ी है।

नक्सीर का सन्यासी प्रयोग

ऊंट के बालों को जला कर भस्म करलें और रोगी को उसकी नस्य दें। तत्काल ही नक्सीर बन्द हो जाएगी।

यह प्रयोग हमारे एक मित्र वैद्य के पूज्य पिता जी का विशेष योग है जो उन्हें किसी सन्यासी से प्राप्त हुआ था।

द्वितीय सन्यासियाना प्रयोग

यह प्रयोग प्रत्यक्षतः साधारण सा है, किन्तु जब आप इसका तात्कालिक प्रभाव देखेंगे तो आश्चर्य से दांतों तले अंगुली दबा लेंगे। प्रयोग इस प्रकार है :—

गधी का दूध लगभग आधा पाव लेकर रोगी के सिर पर मालिश करें, ताकि दो घंटे तक रोगी का सिर दूध से गीला रहे। इसी प्रकार नित्य प्रातः गधी का ताजा दूध लेकर निरन्तर ६-७ दिवस पर्यन्त मालिश किया करें। ईश्वर कृपा से फिर कभी भी रक्त न आएगा। बस यही तो सन्यासी प्रयोगों की विशेषता है। भला आप बिना स्वयं परीक्षा किए कभी इस बात पर विश्वास कर सकते हैं कि गधी का दूध नकसीर के लिये ऐसी अकसीरी औषधि होगी? और इसी कारण अधिकतर लोग इसे सन्यासियों की करामात समझ बैठते हैं। किन्तु आवश्यकता के समय कभी आप स्वयं परीक्षा करके इसका चमत्कार देखें और मुग्ध हों।

विशेष-निवेदन

पाठकों से मेरा विनम्र निवेदन है कि यदि मेरी यह

सेंट उन्हें तनिक भी लाभकारी प्रतीत हो और इस पुस्तक से उनका किंचित् मात्र भी कल्याण हो सके तो वे अन्य भाइयों व प्रेमी जनों में इसका प्रचार करके अधिक से अधिक भाइयों को लाभ पहुँचावें।

नकसीर का अन्तिम चुटकुला

इस चुटकुले द्वारा नाक से बहते हुए रक्त की धारा तत्काल बन्द हो जाती है और निरन्तर एक सप्ताह तक सेवन करने से सदैव के लिए इस रोग से छुटकारा हो जाता है। स्वयं परीक्षा करके लाभ उपलब्ध करें।

१ तोला पीले रंग की कौडिया आग में जला कर सूक्ष्मतम पीस लें और आवश्यकता पड़ने पर १ रत्ती मात्रा थोड़े से घी में मिलाकर नाक में चढ़ाएं। तत्क्षण आराम हो जाएगा।

विशेष सूचना--यदि आप नासिका सम्बन्धी अन्यान्य रोगों की तथा विशेष कर नकसीर की सरलतम दवाओं के योग जानना चाहें तो एक बार 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' अवश्य पढ़ें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक को पास रखकर आप एक सफल चिकित्सक बन सकते हैं।

दन्त रोग

दांतों के रोगों के विषय में 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में आप लोग पर्याप्त विवरण पढ चुके होंगे, उसी में भाँति-भाँति के उत्तमोत्तम दन्त मंजन आदि बनाने की विधियां भी बताई जा चुकी हैं। अब यहां हम कुछ विशिष्ट रोगों के सन्यासी प्रयोग अंकित कर रहे हैं, जो जादू के समान प्रभावकारक हैं।

दन्त रक्षा के लिये विशेष आदेश

१. बर्फ का सेवनाधिक्य दांतों के लिए बड़ा ही हानिकारक सिद्ध होता है; अतः यथा सम्भव बर्फ का कम प्रयोग करना चाहिये।

२. गर्म वस्तुएँ खाने के उपरान्त तत्काल ही ठंडा जल पी लेना भी हानिकारक होता है।

३. लेसदार पदार्थ, रेवड़ियाँ, मैदा की मिठाई आदि भी दांतों को हानि पहुँचाती हैं।

४. नित्य प्रातः उठ कर दांत मुंह साफ न करना मानो अनेकानेक भयकर रोगों को निमन्त्रण देना है; अतः नित्य नियमित रूप से मोलसिरी की दांतुन करना परम आवश्यक है। इसे कदापि न भूलें।

दाढ़-शूल

दाढ़ की पीड़ा अत्यधिक कष्टदायक होती है, जिसका कारण दाढ़ में कीड़ा लग जाना बताया जाता है। जिस दाढ़ में कीड़ा लग जाता है, उसमें छिद्र हो जाता है और प्रायः दाढ़ में भयंकर पीड़ा हो जाती है।

दाढ़शूल का सन्यासी प्रयोग

जिस ओर की दाढ़ में पीड़ा हो, उसके विपरीत ओर उस ओर के कान में लाल मिर्चें पानी में पीस कर समोष्ण करके डालने से तत्क्षण पीड़ा शांत हो जाती है। किन्तु इससे कान में पीड़ा होने लगती है, जिसको दूर करने का सरल उपाय यह है कि घृत को समोष्ण करके कुछ बूंदें कान में डालें। कान की पीड़ा भी शांत हो जायेगी।

दूसरा प्रयोग

कलमी शोरा पानी में घोल कर रोगी के दोनों नथुनों में टपकादें। तड़पते हुए रोगी को भी तत्काल आराम हो जायेगा। कई बार का परीक्षित प्रयोग है।

दाढ़शूल का अन्तिम सन्यासी प्रयोग

यह प्रयोग विशेष गुप्त और सन्यासियों का परम चमत्कारी प्रयोग है। इसका प्रभाव तो तभी जान सकेंगे, जबकि स्वयं परीक्षा करके देखेंगे।

आक की ताजा जड़ दातुन के बराबर मोटी लेकर

नर्म आग में दबा दें और जब भुनी सी हो जावे तो निकाल लें और तनिक गर्म की दातुन करें। एक दो बार के प्रयोग करने से ही पूरा आराम हो जाएगा, तथा पीड़ा और सूजन का नामोनिशान तक न रहेगा।

कण्ठ रोग

कण्ठ के विषय में हम बता चुके हैं कि शरीर को भोजन पहुँचाने का मार्ग कंठ ही है। अतः इसमें तनिक भी अवरोध या कष्ट उत्पन्न हो जाने से भोजन की विकट समस्या उपस्थित हो जाती है।

कण्ठमाला

यह बड़ा ही दुस्साध्य रोग है और जिस रोगी को हो जाता है, उसको व्यथा वही जाने। बेचारा न कुछ खा सकता है, न पी सकता है। यहां तक कि सांस लेने में भी पीड़ा होती है। प्रायः यह रोग गले के स्थान में वात, कफ आदि दूषित हो जाने के कारण हो जाता है। किन्तु आधु-निक चिकित्सकों के मतानुसार सिल तथा कण्ठमाला के कीटाणु एक ही होते हैं।

कंठमाला की पहिचान

इस रोग में गले में अण्डकोष के समान दृढ़ शोथ होकर ग्रन्थियां लटक जाती हैं और गले को माला के

समान घेर होती हैं। कभी २ ग्रन्थियां छोटी २ होती हैं, और कभी बड़ी-बड़ी। यह रोग वात, कफ तथा मेद के कारण तीन प्रकार का होता है। वात गलगंड में तीव्र पीड़ा होती है, और गले की नसें काली अथवा लाल रहती हैं। इनकी गाठें कठोर रहती हैं, और देर से बढ़ती हैं तथा शोथ नहीं पकता। रोगी का मुख स्वादहीन तथा कण्ठ और तालु सूखते रहते हैं। कफ गलगंड में गले में अंड-कोष के समान लटकता हुआ दृढ़, शीतल और खुजली युक्त शोथ रहता है, और इसमें पीड़ा भी कम होती है। इसके बढ़ने तथा पकने मे भी देर लगती है तथा रोगी का मुख मीठा और गला कफ युक्त रहता है। तीसरा प्रकार है, मेद् गलगंड। इसका शोथ चिकना, पीला, तथा कोमल होता है, और पीडा भी कम होती है। शोथ अति कठोर होकर गले की संधि में तुम्बी के समान लटका रहता है जो कि जड़ में पतला और रोगी के शरीरानुसार कम अधिक होता है, इसमें रोगी का मुख चिकना रहता है और वह गले मे ही बोलता है।

कण्ठमाला का रामबाण

सन्यासी प्रयोग

इस चमत्कारी प्रयोग को पंजाब प्रांत के कुछ गिने चुने व्यक्ति ही जानते हैं जिन्हें कि एक रमते साधु ने

बताया था और वे लोग इस प्रयोग को सभी रोगियों को बड़े दावे के साथ सेवन कराते है, और ईश्वर कृपा से पुराने से पुराने रोगियों पर भी यह प्रयोग रामबाण की तरह अचूक सिद्ध होता है। मैंने बड़े ही प्रयत्न के उपरांत इस प्रयोग को उन लोगो से निकाल पाया है। यह पता तो लग गया कि वह एक बूटी है। जो कहीं २ पर ही कठिनता से प्राप्त होती है, किंतु खेद है कि प्रयत्न करने पर भी उसका नाम ज्ञात न हो सका। फिर भी उसकी पहिचान लिखता हूँ। उस बूटी के पत्ते झड़बेरी की भांति, किन्तु कुछ छोटे, फली ठीक मोठ को फली की और फूल छोटा सा लाल रंग का होता है। यह बूटी कार्तिक मास में नहरों वाले भाग में कहीं २ बिछी हुई मिलती है। इस बूटी को यदि अमृत कह दिया जाय तो अनुचित न होगा, क्योंकि यह बूटी कंठमाला के अतिरिक्त अन्यान्य रोगों के लिए भी अत्यधिक लाभकारी है। इसकी सेवन विधि इस प्रकार है :—

१ तोला उक्त बूटी, १ माशा छोटी इलायची के बीज, ७ नग काली मिर्च, ५ तोला ताजा जल में घोंट लें और छानकर आधा सेर गाय के मट्ठे या अध बिलोए दही में मिला कर रोगी को सूर्य निकलने से पूर्व पिलावें। निरन्तर सात दिवस के सेवन से ईश्वर कृपा से कंठमाला को पूर्णतया आराम हो जाएगा।

द्वितीय सन्यासी प्रयोग

यह अनुपम प्रयोग प्राप्त होने की कथा भी बड़ी मनोरंजक है। हमारे एक मित्र पृथ्वीपुर निवासी श्री शंभू दयाल जी चौधरी है, उनके ताऊ जी लगभग दस वर्षों से साधु होकर घर से चले गए थे। इस कालान्तर मे उन्होंने प्रयाग, हरिद्वार तथा अन्य तीर्थ स्थानो में असंख्य सन्यासियो का सत्संग किया। पूरे दस वर्ष उपरांत जब वे साधु भेष में एक बार आये, तो सौभाग्यवश मेरी भी उनसे भेंट हुई, क्योंकि मे चौधरी साहब के यहां उन दिनों गया हुआ था। उस समय यह योग मुझे प्राप्त हुआ था जिस के बारे में उनका कथन था कि प्रयागराज में एक महात्मा ने बड़ी प्रशंसा करते हुए यह योग बताया था। बड़ा ही सरल प्रयोग है, किंतु अत्यन्त प्रभावक। कभी आवश्यकता के समय आप भी परीक्षा करें।

प्रयोग--नागफनी नामक बूटी का फल, जोकि ऊदे रंग का होता है, और स्वाद आडू की भांति खट्टा होता है। ३-४ फल रोगी को खिलाएं और कुछ पीस कर कंठमाला के ऊपर लेप कर दें। आशा ही नहीं, वरन् विश्वास है कि कुछ दिनों में रोग नितान्त दूर हो जायगा।

एक गुप्तातिगुप्त प्रयोग

मैं अपने प्रिय पाठकों को बता चुका हूं, कि सन्यासियों के गुप्त प्रयोग और चुटकुले यदि किसी को प्राप्त भी हो गए, तो प्रलोभन वश वह उसे प्रकट न कर सका। कुछ महानुभाव तो ऐसे रहे जो कि किसी सन्यासी द्वारा बताए हुए प्रयोग की बदौलत ही दूर २ तक प्रसिद्ध हो गये और खूब जी भर कर रुपया कमाया। तदनन्तर उसे हृदय में छुपाये ही स्वर्गधाम का टिकट कटा गया। यही कारण है कि कुछ प्रयोग तो हजारों वर्षों से गुप्त चले आकर अब भी प्रकट नहीं हो सके हैं, और जो प्राप्त हुए है, वे भी घोर परिश्रम से।

हरियाना प्रांत मे एक नम्बरदार जी कण्ठमाला की चिकित्सा में दूर २ तक विख्यात थे, और कण्ठमाला के रोगी सैकडों मील से चलकर उनके पास आया करते थे। और स्वस्थ होकर चले जाते थे। उनके पास एक सन्यासी का बताया हुआ यह अकेला ही योग था, जो प्रायः कष्ट-साध्य रोगियों पर भी सफल होता था। नम्बरदार जी इस प्रयोग को किसी प्रकार भी प्रकट नहीं होने देते, किंतु प्रभु कृपा से एक अति उत्तम विधि से हमने उसे प्राप्त करने में सफलता पाली और आज अपने प्रिय पाठकों को भेंट कर रहा हूँ।

प्रयोग--एक गिरगिट पकड़ कर पाव भर सरसों के तेल में जला लें और भली भांति जल जाने पर घोट कर मलहम सा बना लें, तथा इसी मलहम को प्रतिदिन कंठ-माला पर लगाया करें। ईश्वर की कृपा यदि हुई, तो एक सप्ताह के अन्दर ही अन्दर रोग का चिन्हमात्र शेष न रह जाएगा।

एक पीर का प्रयोग

निज़ामाबाद के एक पीर साहब ने यह प्रयोग प्रदान किया है :—पीलू के पत्तों को ऊंट के मूत्र में पीसें और नित्य कण्ठमाला पर लेप कर दिया करें। आश्चर्यजनक गुणकारक है।

अन्तिम सन्यासी प्रयोग

काले सांप की कैंचुली प्राप्त करके उसे तिल के तेल में जला कर भली भाँति खरल करके मलहम सा बना लें और कण्ठमाला पर लगाया करें।

छाती सीना तथा फेफड़ों के रोग

अङ्ग परिचय कराते हुए पुस्तक के प्रारम्भ में हम संकेत कर चुके हैं कि फेफड़े ही हमारे शरीर के पखे हैं, जिनके द्वारा हम सांस लेते हैं; अतः इनका महत्व हमारे जीवन के लिए सब से बढ़कर है। विशेष विवरण 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में देखलें। अब हम सीने तथा फेफड़ों के तीन प्रमुख और बहु प्रचलित रोगों का वर्णन करेंगे, जिनसे आप खांसी, दमा और निमोनिया के नामों से भली भांति परिचित हैं और आए दिन इनसे पीड़ित रहा करते हैं। रोग विवरण के साथ ही उन के सन्यासी प्रयोग भी भेंट किए जाते हैं, विशेष कर दमा जैसे कष्ट-प्रद और दुसाध्य रोग के लिये तो इस पुस्तक में ऐसे २ चमत्कारी प्रयोग संग्रहीत किये गये हैं जो कि सन्यासियों के विशेषातिविशेष गुप्त रहस्य हैं और तत्काल जादू के समान प्रभाव दिखाने वाले हैं।

खाँसी (कास)

यह बड़ा ही कष्टप्रद रोग है, रोगी खाँसते २ तंग हो जाते हैं और घोर कष्ट अनुभव करते हैं।

खांसी के मुख्य कारण

यह रोग प्रायः मुंह में धुआं तथा धूल आदि भर

जाने, रूखा सूखा भोजन खाने, कुपथ्य करने, मल-मूत्र आदि को देर तक रोके रहने तथा चिकनी वस्तुएं अथवा मूली आदि खाकर तत्काल ठंडा पानी पी लेने के कारण भी हो जाया करता है। फेफड़े के दुर्बल हो जाने के कारण भी यह रोग उत्पन्न हो जाया करता है और कभी कभी मस्तिष्क से जो नजला फेफड़ों पर टपकता है, फेफड़े उसे ऊपर को उछालते हैं और फलस्वरूप कास रोग पैदा हो जाता है। प्रमुख्यतः यही कारण है जिनसे यह रोग उत्पन्न हुआ करता है। विशेष विवरण के लिये 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' देखो।

खाँसी के भेद

आयुर्वेदिक चिकित्सा ग्रन्थों में खांसी के ५ भेद माने गये हैं :—१—वात २—पित्त ३—कफ ४—प्रहार ५—क्षयी। यहा हम आयुर्वेद के इस विषद् भेद वर्णन मे न पड़ कर केवल इसके दो मुख्य भेद लिखते हैं जो कि यूनानी हकीमों ने माने हैं। पहिला भेद है शुष्क कास (सूखी खाँसी) और दूसरा तर खाँसी। सूखी खाँसी में रोगी के गले से कांसी के फूटे बर्तन के समान स्वर निकलता है किन्तु कफ आदि कुछ नही आता। किन्तु तर खाँसी में कण्ठ से कफ भी निकलता है। खांसी का एक तीसरा भेद भी विशेष उल्लेखनीय है, जिसे काली खांसी, कुत्ता खांसी, या कुकर

खासी आदि नामों से पुकारते हैं। वैद्यक भाषा में इसी को क्षयो कास कहते हैं। यह बड़ी ही भयंकर खासी होती है। प्रायः यह बच्चों को ही हुआ करती है और एक बार होकर पुनः नही होती। खांसते २ रोगी का मुख नीला पड जाता है और जब वह अन्दर को सास खीचता है तो सीटी सी बजती सुनाई देती है और प्रायः खाया पीया सब कुछ वमन द्वारा निकल जाया करता है। काली खासी का एक अशुभ लक्षण यह है कि यदि इसके रोगी को पसली में पीड़ा हो जाय तो उसके जीवित रहने की आशा कम ही रह जाती है।

खाँसी का प्रथम सन्यासी योग

यह उत्तम सन्यासी योग अब गुप्त नही है, वरन् चिकित्सा सम्बन्धी अनेक पुस्तकों मे भी प्रकाशित हो चुका है। हमारे एक मित्र श्री कृष्ण गोपाल जी शर्मा अध्यापक मिडिल स्कूल अमायन जिला भिण्ड ने गत भेंट में मुझे यह प्रयोग प्रदान किया था। उन्होंने बताया कि एक बार वह खांसी के कठिन रोग में फंस गये। कई दिन तक विविध औषधियाँ सेवन कीं, किंतु किसी प्रकार भी लाभ न हुआ। अन्त में मैंने एक चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तक की सहायता ली। चूंकि यह सन्यासी प्रयोग बनाने में अति सरल था और लेखक ने इसे सैकड़ों बार का

परीक्षित बता कर अत्यधिक प्रशंसा लिखी थी, अतः मैंने भी उसे स्वयं बनाकर सेवन किया। ईश्वर की ऐसी कृपा कि तीन दिन में ही खांसी का समूल नाश हो गया। चूंकि शर्मा जी हमारे परम विश्वस्त मित्र हैं, अतः मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि उनके इस अनुभूत प्रयोग में निःसन्देह चमत्कारी प्रभाव है। आप भी परीक्षा करके लाभान्वित हों।

प्रयोग इस प्रकार है :—

१ सेर घी ग्वार की गिरी किसी रूमाल आदि में डाल कर इसका रस निकालें और उसे किसी कलईदार देगची में डाल कर आग पर चढ़ा दें। जब आधा रस जल जाय, तो उसमें ३ तोला लाहौरी नमक पीसकर डाल दें और चमचा आदि से चलाते रहें। जब सारा रस जल जाय, तो उतार कर शेष द्रव्य का सूक्ष्म पीस लें; और किसी शीशी में भर कर सुरक्षित रख लें। तथा रोगी को नित्य प्रातः बिना कुछ खाए मुख ४ रत्ती से १ माशा तक पानी के साथ दिया करें। ३-४ दिन में ही रोग नष्ट हो जाएगा। किन्तु हानिकारक वस्तुओं से परहेज रखना नितांत आवश्यक है।

दो सन्यासी टोटके

(१) दिन में २-३ बार सरसों का शुद्ध तेल गुदा के

अभ्यन्तरीय तथा बाह्य भाग में अंगुली से लगावें। इस टोटके से प्रायः हर प्रकार की खांसी को अति शीघ्र आराम हो जाता है।

(२) बार २ शीशा देखने से भी खांसी को लाभ हो जाता है।

दमा (श्वास)

कहावत प्रसिद्ध है कि 'दमा-दम के साथ ही जाता है।' यह बात नितान्त सत्य तो नहीं, किन्तु इतनी सत्यता अवश्य है कि यह बड़ा ही दुस्साध्य रोग है। एक बार जिसके पीछे लग जाता है, कठिनता से ही उसे छोड़ता है। इस रोग में फेफड़े की सूक्ष्म वायु-नलियों में खिचाव पैदा हो जाता है और इस कारण श्वास कठिनता से आता है।

दमा रोग के मूल कारण

यह रोग प्रायः गर्म बातल, रूखे सूखे भारी तथा बासी भोजन के खाने से हो जाता है। इसके अतिरिक्त मुख में धूल, तेजाब का धुआं, या अन्य विषैला धुआं प्रविष्ट हो जाने, अधिक परिश्रम, मलमूत्र को देर तक रोकने आदि कारणों से भी हो जाता है। कभी २ प्रति-श्याय, निमोनिया अथवा खांसी के बिगड़ने से फेफड़ों में कफ उत्पन्न होकर भी श्वास रोग हो जाता है। आयुर्वेदिक

ग्रन्थों में श्वास के भी ५ भेद बताये गये हैं। १—महाश्वास २—ऊर्ध्व श्वास। ३—छिन्न श्वास। ४—यमक श्वास। ५—क्षुद्र श्वास। इन पांचों प्रकार के श्वास की भिन्न २ चिकित्सा और उत्तमोत्तम आयुर्वेदिक योग 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' तथा 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' नामक पुस्तकों में समझ कर लिखे गए हैं। 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' में दमा जैसे दुस्साध्य रोगों की केवल प्राकृतिक पेड़ पौधों व बूटियों द्वारा ही सफल चिकित्सा करने के योग है, जो कि देश के सैकड़ों वैद्यों तथा हकीमों द्वारा परीक्षित है। आप भी उनसे अपूर्व लाभ उठा सकते हैं। यहां केवल हम वे महान सन्यासी प्रयोग अंकित करते हैं, जो कि हर प्रकार के श्वास के लिए अचूक रामबाण हैं और देश भर के हकीम तथा डाक्टर इनका लोहा मान गए हैं। आप भी इनसे अनुभव द्वारा लाभ उठावें।

श्वास के प्रारम्भिक लक्षण

श्वास रोग प्रारम्भ होने के पूर्व रोगी हृदय में पीड़ा का अनुमान करता है। अफारा, कोष्ठबद्धता, मल तथा मूत्र में अवरोध तथा मुख स्वादहीन होकर खांसी तथा सांस खीचने में वेदना सी प्रतीत होने लगती है। कभी २ कनपटियों में भी पीड़ा होने लगती है। यदि किसी रोगी को ये लक्षण अनुभव हों, तो उसे समझ लेना चाहिए, कि

शीघ्र ही वह श्वास के भयंकर रोग में ग्रसित होने वाला है।

श्वास रोग की पहिचान

श्वास के रोगी की छाती घुटती रहती है और सारे शरीर में कफ बढ़ कर नसों के प्रवाह में अवरोध उत्पन्न करता है। तथा वायु प्रवाह रुककर श्वास तीव्र वेग से चलने लगता है। श्वास खींचने में रोगी को भारी कष्ट होता है और श्वेत रंग का पतला मूत्र बार २ आता है। रोगी प्रायः बैठा या किसी वस्तु का सहारा लेकर खड़ा रहना चाहता है। यदि किसी रोगी को बारी के समय कधों तथा ग्रीवा के मोहरों में पीड़ा अनुभव हो और गर्दन ऊंची किये बिना सांस न ले सकता हो, तो उस रोग को कष्ट साध्य सांस समझ लेना चाहिए। और यदि रोगी के नाखून हरे हो जायं तथा स्वर बारीक हो जाय तो रोग को असाध्य जानकर रोगी को कुछ दिनों का ही महमान समझ लेना चाहिये। ये इस रोग के अशुभ लक्षण हैं।

महान् सन्यासी योग

यह योग कोई साधारण योग नहीं है अपितु बड़े २ विद्वान सन्यासियों का गूढ़तम रहस्य है। इस योग की प्रशंसा लिखने की शक्ति इस जड़ लेखनी में नहीं है। योग

क्या है ? श्वास रोग के लिए रसायन तुल्य है । इस योग से कई बार ऐसे २ रोगी भी स्वास्थ्य लाभ उठा चुके हैं जिन्हें कि आयुर्वेदिक वैद्यों और युनानी हकीमो ने असाध्य बताकर जीवन से निराश कर दिया था। स्वयं मैने भी इसकी परीक्षा की है, और ईश्वर कृपा कृपा से आशा से बढ़ कर लाभ प्राप्त किया है हमारे यहा के एक वृद्ध सज्जन कई वर्ष से इस दुष्ट रोग में फसे हुए थे और घोर कष्ट उठा रहे थे मैने उन्हे सन्यासियों का यही महान् चमत्कारी योग सेवन करने की सम्मति दी। मेरी राय उन्हें जच गई और केवल १० दिन सेवन करने के उपरान्त इस रोग से पूर्णतया मुक्त होकर वे मेरे घर पर स्वयं चलकर आशीर्वाद देने आए। मे ईश्वर से प्रार्थना करता हू कि हमारे देश के अन्य पीडित भाई भी इससे लाभ उठावें और सेवक को आशीर्वाद दें ।

योग इस प्रकार है:—

१ सेर जंगली प्याज कद्दूकस करके किसी मिट्टी के कोरे कूजे में डाले और ऊपर स विशुद्ध सिरका उत्कृष्ट प्रकार का लगभग २ सेर डाल कर कूजे के मुख को कपड़-मिट्टी करके ४० दिन तक कूड़े के ढेर में दबाए रखे । तत्पश्चात् निकाल कर कपड़े मे से छान लें और उससे दो गुनी खाड देशी मिला कर मन्द-मन्द आच पर पकावें

ताकि चटनी की भांति हो जाय। फिर उतार कर किसी स्वच्छ पात्र में रखलें और नित्य प्रातःकाल १ तोला की मात्रा में रोगी को सेवन कराएं। यदि शुष्क श्वास हो तो ऊपर से अर्क गांजवां पिला दिया करें। केवल ८-१० दिन में ही रोग जड़ मूल से दूर हो जाएगा।

द्वितीय सन्यासी योग

यह योग न केवल श्वास के लिए अपितु कुष्ट ज्वर तथा नपुन्सकता के लिए भी रसायनवत् है। ऐसे योग आयुर्वेदिक तथा यूनानी चिकित्सा मे भी कम ही मिलेंगे जो एक साथ तीन-तीन कठिनतम रोगों के लिए अक्सीर हों। यह केवल संन्यासियों का ही प्रताप है जिन्होंने ऐसी अनमोल वस्तुओं के छुपे हुए गुण खोज निकाले हैं। यही कारण है कि आज के इस वैज्ञानिक युग में भी बड़े २ डाक्टर तथा वैद्य भी सन्यासी प्रयोगों के सन्मुख सिर झुका देते हैं। हम पाठकों की सेवा में एक ऐसा ही प्रयोग भेंट करते हैं।

योग—संखिया लाल रंग का २ तोला, गोदन्ती हरताल २ तोला, शुद्ध पारा २ तोला, आंवलासार गंधक २ तोला और रूमी सिंगरफ दो तोला। समस्त द्रव्यों को किसी उत्तम खरल में डाल कर थोड़ा २ थोहर का दूध डालते हुए खरल करें यहां तक कि कच्ची तौल का पूरा

सात पाव दूध शोषण हो जावे। फिर उसकी टिकियां बना कर ५ तोला वजन जस्त की दो प्यालियो मे बन्द करके ऊपर से लोहे का तार लपेट दें और उस पर सात बार कपरौटी करें। किंतु ध्यान रहे कि एक कपरौटी सूखने के उपरांत ही दूसरी करें। जब बिलकुल सूख जावे तो निर्वात स्थान में ७ सेर उपलों की आग दें और इसी विधि से ३ बार आँच देने के उपरान्त औषधि तैयार हो जाएगी।

सेवन विधि–१ चावल भर मात्रा मक्खन या मलाई में लपेट कर रोगी को निगलवा दिया करें। केवल तीन मात्राएँ सेवन कराना ही पर्याप्त होगा। चाहे २८ वर्ष पुराना श्वास रोग क्यों न हो, इसके सेवन से निश्चय ही दूर हो जायेगा। इसके अतिरिक्त यदि नपुंसकता के रोगी को यह औषधि सेवन कराई जाय तो नितान्त नामर्द भी मर्द बन जाता है। यह औषधि आजकल नपुंसकता की उत्तमोत्तम औषधियों में मानी है। कुष्ठ रोग के लिए भी अकसीर है और ज्वर के रोगी को उतरी हुई दशा में दे दो तो फिर कदापि ज्वर न होगा और दुर्बलता तो एक ही मात्रा से दूर हो जाएगी।

तृतीय प्रयोग

यह प्रयोग बलगमी दमा पर तत्काल चमत्कार दिखाता है। जिला बहावलपुर में एक जड़ी भूईफोड़ नामसे

प्रसिद्ध है, और वहीं मिलती है, उसे प्राप्त करके २-३ माशा जड़ी हुक्के में तम्बाकू के बीच में रख कर पिलावें। बस उसी दिन बलगमी दमा से छुटकारा प्राप्त हो जाएगा और यदि रोग पुराना हो तो ३-४ दिन तक इसी प्रकार पिलाना चाहिये।

चमत्कारी सन्यासी प्रयोग

काले मुर्ग की बीट अति सूक्ष्म पीस कर शीशी में सुरक्षित रखें और प्रति दिन ३ माशा की मात्रा पानी के साथ सेवन कराए। किन्तु रोगी पर इस दवा का भेद प्रकट न होने दें। कुछ दिन मे ही आराम हो जायेगा।

प्रसिद्ध सन्यासी प्रयोग

यह चुटकुला अधिक तर गावों में प्रसिद्ध है और इसके सेवन से सैकड़ो रोगी स्वस्थ हो चुके हैं। ऐसी गाय जो पहिली बार बच्चा दे, उसका दूध निकाल कर तुरन्त ही रोगी को पिलाए। ईश्वर कृपा से एक ही बार के सेवन से आराम हो जायेगा।

अद्भुत सन्यासी उपचार

एक जंगली कबूतर का पेट चीर कर अन्दर से मल आदि साफ कर लें। तदनन्तर १ छटांक काला नमक, १० तोला आक के दूध के साथ खूब घोटें और कबूतर के पेट में उसे भर कर गेहूँ के आटे से भली प्रकार बन्द करदें।

तदुपरान्त मिट्टी के कूजे में डालकर कपरौटी कर। जब कपरौटी सूख जाय, तो मन भर जंगली उपलों की आंच दें और ठंडा होने पर कूजे को उपलों में से निकालें तथा आटा आदि पृथक करके अन्दर के द्रव्य को बारीक पीसें। जब भली भांति बारीक हो जाए, तो शीशी में सम्भाल कर रखलें और आवश्यकता के समय १ रत्ती से २ रत्ती तक औषधि पानी के साथ रोगी को खिलाए। कुछेक मात्राओं में ही हर प्रकार का श्वास रोग जाता रहेगा।

उपरोक्त प्रयोग यद्यपि हमारे धर्म के अनुकूल नहीं, तथापि विशेष आवश्यकता के समय जो सज्जन चाहें, इससे लाभ उठा सकते हैं। यह प्रयोग एक यवन फकीर का है जो कि अनेक लोगों द्वारा अनुभव करने पर सफल सिद्ध हुआ है।

एक और प्रशंसित योग

हमारे यहां एक धनाढ्य सज्जन हैं जो कि साधु सत्संग के बड़े प्रेमी हैं। उनके द्वार पर जो भी साधु जाता है, दो चार दिन के आतिथ्य सत्कार बिना वापस नहीं आता और इसी कारण उनके यहां दो चार महात्माजन हर समय पड़े रहते हैं। दुर्भाग्यवश उनके बड़े भाई कई वर्ष से श्वास रोग से पीड़ित थे। एक बार लगभग ५-६ सन्यासी बैठे धर्म-चर्चा कर रहे थे कि अचानक उनके

बड़े भाई साहब भी वहीं आ बैठे। उस समय एक सन्यासी जी ने उनका कष्ट देखकर यह अद्भुत प्रयोग सेवन करने का कहा। उनके आदेशानुसार सेवन किया तो प्रभु की ऐसी कृपा कि वर्षों पुराना रोग कुछ दिनों में ही निर्मूल हो गया और एक साल पश्चात् जब वही महात्मा पुनः पधारे, तो उन्हें पूर्ण हृष्ट पुष्ट और निरोग देखकर अति प्रसन्न हुए। सौभाग्यवश उनके सुपुत्र साहब हमारे सहपाठी थे, उन्होंने सन्यासी जी का वह प्रयोग मुझे भी बताया। आज मैं उसी प्रयोग को पाठकों के कल्याणार्थ पुस्तक में अंकित कर रहा हूं। इस योग के विषय में पूज्यपाद सन्यासी जी ने कहा था कि हर प्रकार के श्वास रोग के लिए यह अचूक रामबाण है।

ᎶᏕ **प्रयोग**–थूहर की एक मोटी सी ताजा लकड़ी लेकर उसे चाकू आदि से खोखली करलें और उसमें दो तोला श्वेत फिटकरी भरदें, तथा अच्छी प्रकार कपरौटी करके चार सेर उपलों की आगदें, और ठण्डी होने पर निकाल लें। फिटकरी को सूक्ष्म पीसकर शीशी में रखलें और आवश्यकता के समय रोगी को २-२ रत्ती औषधि नित्य प्रातः सायं पानी के साथ सेवन कराएं। ईश्वर कृपा से थोड़े दिनों में ही रोग समूल नष्ट हो जायेगा।

श्वास रोग के सन्यासी प्रयोग तो समाप्त हुए, अब

हम कुछ ऐसे सुनहरे आदेश अंकित करते हैं जो कि श्वास के रोगियों के लिये बडे २ साधु सन्यासियों तथा अनुभवी वैद्य चिकित्सकों ने निर्धारित किए हैं। इन आदेशों का पालन करने से श्वास का रोगी शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ करता है। उन्हे ये आदेश सदैव ध्यान में रखने चाहिये।

श्वास रोगियो को सुहनरे आदेश

१—श्वास के रोगी को भोजनापरान्त कम से कम एक घन्टा पानी नही पीना चाहिए।

२—एक बार में ही डट कर पानी नही पीना चाहिए, वरन थोडा २ और रुक २ कर पीना चाहिए।

३—श्वास के रोगियो के लिए दिन में सोना बडा हानिकर है।

४—मलमूत्र त्याग की इच्छा को भूलकर भी रोकना नहीं चाहिये।

५—खुली हवा में टहलना और शुद्ध वायु सेवन करना श्वास रोगियों के लिए अत्यधिक हितकर है।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर उन पर आचरण करना श्वास रोगियों के लिए परमावश्यक है।

विशेष सूचना

चूंकि यह एक दुस्साध्य रोग है अतः यदि उपर्युक्त सन्यासी प्रयोगो से समूल नष्ट न हो सके तो आयु-

र्वदिक चिकित्सा प्रयोग करना भी लाभदायक सिद्ध होगा। हमारा 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' नामक पुस्तक में श्वास रोग के एक से एक बढ़कर योग दिये गये हैं, अतः उन का अध्ययन व प्रयोग अवश्य करें, ईश्वर कृपा से आप निश्चय ही रोग को निमूर्ल करने में सफलीभूत होंगे।

पार्श्व शूल तथा निमोनिया

पार्श्वशूल और निमोनिया दोनों पृथक २ रोग हैं। यद्यपि इन दोनों की चिकित्सा प्रायः एक समान ही है और लक्षण भी अधिकांशतः एक ही से होते हैं तथापि हम आपको उनकी पृथक २ पहिचान करने के लिये कुछ विशेष लक्षण बताते हैं। इन दोनों रोगों में अन्तर यह है, कि पार्श्वशूल केवल एक झिल्ली का शोथ होता है और निमोनिया एक फेफड़े के शोथ से होता है। निमोनिया की पहिचान करने के लिये दो विशेष लक्षण ये हैं :—

१—निमोनिया के रोगी का जिस ओर का फेफड़ा सूजा होगा, ठीक उसी ओर का कपोल भी लालिमा युक्त होगा।

२—उसी ओर का नथना भी चलता होगा अर्थात् सांस के साथ फूलता हुआ प्रतीत होगा, जिस ओर का शोथ युक्त होगा। ये दो पक्के चिन्ह हैं, जिनसे आप निमोनिया की भलीभाँति पहिचान कर सकते हैं।

प्रथम सन्यासी प्रयोग

यह प्रयोग पार्श्वशूल तथा निमोनिया दोनों के लिए अद्भुत लाभदायक है। यदि पीड़ा किसी भी प्रकार शांत न होती हो तो इसको एक मात्रा रात्री को खिलाकर देखें, पीडा तत्क्षण ही शान्त हो जायेगी। अब से कई साल पूर्व यह योग मौलवी हकीम हिदायतुल्ला साहब को किसी फकीर ने प्रदान किया था और एक मित्र के द्वारा हमारे पास तक पहुंचा है। उक्त हकीम साहब ने बताया था कि यह योग पीड़ा पर पलस्तर की भांति लग जाता है और पार्श्वशूल तथा निमोनिया को नितान्त मिटाकर ही रहता है। आशा है इस उत्तम योग से असंख्य रोगी जनों का कल्याण होगा।

योग—आवश्यकतानुसार छोटी सीपियाँ लेकर एक कूजे में रखकर २-२ अंगुल ऊपर तक आक का दूध डाल दें, फिर कूजे को कपड़मिट्टी करके १५ या २० सेर उपलों की आंच दें तथा खिली हुई सीपियों को खरल में बारीक पीस कर शीशी में सुरक्षित रखलें। तथा ४ रत्ती मात्रा खाड में मिला कर अर्क सौंफ अथवा अन्य किसी उचित अनुपान के साथ दें।

विशेष रहस्यमय सन्यासी प्रयोग

प्रायः जन साधारण जिन वस्तुओं को व्यर्थ तथा निष्प्रयोग समझ कर फेंक दिया करते है, सन्यासियों ने उन्ही में छुपे हुए अद्भुत गुणों का पता लगाया है और उनकी इस प्रकार की खोज से ससार का जो कल्याण हुआ है वह निस्सन्देह प्रशसनीय है। कहने का सारांश यह है कि ससार में परमात्मा की दी हुई कोई भी वस्तु यहां तक कि मिट्टी, भी व्यर्थ नहीं है, और छोटी से छोटी वस्तुओं में भी अदभुत गुणों का भण्डार भरा है। किन्तु हम उन गुणों से परिचित नही हैं। यह ईश्वर की लीला का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जिस वस्तु का शुद्ध अवस्था में एक आना मूल्य है, बिगडी हुई अवस्था में उसी का मूल्य सौ रुपए से अधिक हो जाता है। उदाहरण स्वरूप यह योग देखिए और इसका चमत्कारी प्रभाव देखकर उस प्रभु का गुणानुवाद कीजिये

प्रयोग—एक मुर्गी का अण्डा किसी सुरक्षित स्थान में रख दीजिए और पूरे एक वर्ष पश्चात जो कुछ उस अंडे में से निकले, उसे सूक्ष्म पीस कर शीशी में रख लीजिये। बस पार्श्वशूल की अक्सीर औषधि तैयार है। केवल १ चावल से २ चावल तक मात्रा बताशे या मुनक्के में रख कर रोगी को खिलादें और ऊपर से गर्म पानी या कोई

उचित अर्क पिलादें। पहिली ही मात्रा अपने चमत्कारी प्रभाव से आपको चकित कर देगी। अद्भुत रहस्यमय योगा में से है। साधारणतः फकीर और सन्यासी ऐसे जादुई प्रभावक योगों को प्रकट नही करते। यह तो ईश्वरेच्छा समझिए, कि कोई उदार हृदय सन्यासी इसे जनकल्याणार्थ प्रकट कर गया। परीक्षा करके लाभ उठायें।

पूर्व प्रकाशित सन्यासी रहस्य

मै पहिले ही निवेदन कर चुका हू कि यथा अवसर कुछ भाग्यवान लोगों को साधु-महात्माओ की सेवा शुश्रूषा करने पर कुछ रहस्यमय सन्यासी प्रयोग प्राप्त होते रहे हैं, और कुछ जन-सवी व्यक्तियों ने उन्हें पुस्तक रूप मे समय समय पर प्रकाशित करके देश के अगणित निर्धनो का कल्याण किया है। इसीसे सम्बन्धित एक सत्य घटना आपको सुनाता हूं।

हमारे घर पर एक महात्मा जी चिरकाल से आया करते थे। एक बार उन्होंने किसी प्रसगवश पार्श्वशूल व निमोनिया का यह विशेप गुप्त सन्यासी प्रयोग बताया। मैने कहा– महात्मा जी! यह सन्यासी प्रयोग तो एक पुस्तक में पहिले से ही विद्यमान हैं, मै इसे पढ चुका हूं। महात्मा जी बोले—यह नितान्त असम्भव है। यह तो सन्यासियों का ऐसा गुप्त रहस्य है, जिसे वे किसी प्रकार

भी प्रकट नहीं करते। यह तो मैंने प्रसन्न होकर तुम्हें बता दिया है। किन्तु मैंने इसे वर्षो जंगलों में मार मार फिर कर न जाने कितने कष्टों से प्राप्त किया था। मैंने बहुत समझाया, कि हो सकता है महात्मा जी ! आपकी ही तरह किसी और सन्यासी ने किसी अन्य व्यक्ति को बता दिया हो, किन्तु वे किसी प्रकार भी मानने को तैयार न हुए। सयोगवश मेरे पास 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' नामक पुस्तक पड़ी थी, उसे खोल कर वहीं दिखा दिया। तब तो महात्मा जी बड़े चकराए। खैर ! वह विशेष उल्लेखनीय प्रयोग आपको भी भेंट करता हूं।

४ योग–आवश्यकतानुसार बारहसिंगे का सींग लेकर चूर्ण करलें और मिट्टी के कूजे में डालकर मदार का दूध इतना डालें कि चूर्ण भली भांति आर्द्र हो जाय। फिर उसे अच्छी तरह कपड़ मिट्टी करके गढ़ा खोद कर १ मन उपलों की आंच दें और ठण्डा होने पर निकालें। यदि नितान्त श्वेत हो गया हो तो अच्छा है अन्था फिर आक के दूध में भिगो कर पुनः आंच दें और जब तैयार हो जाए तो १ रत्ती से दो रत्ती तक मात्रा में २ तो० शहद में चटाएं। इसकी एक मात्रा ही अन्य औषधियों की १० मात्राओं के बराबर गुण रखती है। यदि कष्ट साधारण हो, तो दिन में दो मात्राएं देना पर्याप्त है और यदि

कष्ट अधिक हो, तो ३-३ घंटे के अन्तर से दें। दो एक दिन के सेवन से ही पार्श्वशूल तथा निमोनिया को जड़ मूल से दूर कर देगा।

निमोनिया तथा पार्श्वशूल के लिये सन्यासियाना अक्सीर

शिगरफ रूमी १ तोला की डली लेकर ऊपर रजत चूर्ण १ तो० को अण्डे की पीतता घोल कर लेप कर दें। तत्पश्चात् श्वेतधान्याभ्रक को उपरोक्त विधि से कुक्कुटाण्ड पीतता से घोल कर लेप कर दें फिर काली मिर्च ६ माशे, पिप्पली ६ मा० बारीक पीस कर कुक्कुटाण्ड-पीतता मे मिला कर तीसरा लेप कर दें। फिर सुदृढ़ शरावसम्पुट करके सुखालें और एक छटांक उपलों का चूरा लेकर उसको आग लगादें। जब ज्वाला शांत हो चुके तो उसी प्रकार पुनः आंच दें और नितान्त ठंडी होने पर २ तोले बढ़ाते जावें यहां तक कि आध सेर तक पहुँचा दे। तत्पश्चात् १-१ छटांक बढ़ा कर दो सेर तक पहुँचाये किन्तु अग्नि हमेशा ज्वाला शांत होने पर देनी चाहिए। अन्त मे एक आंच २॥ सेर उपलों की दे। बस अक्सीर तैयार है। इसे निकाल कर बारीक पीसलें और शीशी में सुरक्षित रखलें। इसकी मात्रा ४ चावल से १२ रत्ती तक मक्खन या मलाई अथवा खांड मे रखकर रोगी को खिलाया करें।

लाभ पार्श्वशूल व निमोनिया के रोगी को इसकी एक ही मात्रा से आराम हो जाता है। साथ ही नपुंसकता व इन्द्रिय शिथिलता के लिये यह औषधि अमृततुल्य है। प्राकृतिक स्तम्भन उत्पन्न करती है सारांश यह कि अद्भुत गुणप्रद वस्तु है।

चमत्कारी लेप

पार्श्वशूल तथा निमोनिया में बाह्य चिकित्सा बड़ी लाभप्रद सिद्ध होती है सन्यासी चिकित्सा पद्धति में भी बाह्य चिकित्सार्थ चमत्कारी लेप विद्यमान हैं, जो कि आवश्यकता के समय अपूर्व लाभ दरशाते हैं।

Rx २ तोला चिकना मिट्टी को सूक्ष्म पीसकर भेड़ के दूध के साथ पीड़ा स्थल पर लेप करें। ईश्वर कृपा से लेप भली भाँति सूखने भी न पाएगा कि पीड़ा से तड़पता हुआ रोगी हंसने लगेगा। इस लेप से पार्श्वशूल को तत्काल आराम हो जाता है। स्वयं परीक्षा करके लाभ उठावें।

हृदय-रोग

उत्तमांगों में शिरोमणि शरीर साम्राज्य का सम्राट हृदय ही है इस बात को हम अङ्ग परिचय में लिख चुके हैं। अतः इसको रोगों से सुरक्षित रखना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। प्रायः हृदय के दो ही प्रमुख रोग हैं, पहिला हृदय दुर्बलता और दूसरा हृदय धड़कन। अपितु धड़कन का भी मूल कारण हृदय की दुर्बलता ही होती है। इस कारण हृदय को पुष्ट बनाए रखना ही उसे समस्त रोगों से सुरक्षित रखना है। यूं तो 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' मे हृदय को पुष्ट बनाने वाली उत्तमोत्तम आयुर्वेदिक भस्मों, तथा खाद्य औषधियों के योग प्रकाशित किये जा चुके है किन्तु वे सब बहुमूल्य द्रव्यों से निर्मित होते हैं, इस कारण केवल धनाढ्य व्यक्तियों के ही काम के हैं। भला निर्धन व्यक्ति उनसे किस प्रकार लाभ उठा सकते हैं ? यही दृष्टिगत रख कर हम यहां आपको कुछेक ऐसे सन्यासी प्रयोग भेंट करते हैं, जो कि एक दो पैसे में ही बनकर उन बहुमूल्य औषधियों से कम लाभदायक सिद्ध नहीं होंगे। किन्तु यह बात सदैव ध्यान मे रखनी चाहिए कि इनका उपयोग वही सज्जन करें, जिन्हें इन पर पूर्ण विश्वास हो, क्योंकि वही लोग इनसे लाभ प्राप्त कर सकते हैं। भई,

धनिक लोग तो यह सोचते हैं कि ये एक पैसे की औषधि क्या लाभ पहुँचा सकती है। जब ईश्वर ने रुपया पैसा दिया है तो क्यों न स्वर्ण भस्म और अन्यान्य मूल्यवान भस्में सेवन करूं? अतः उन्हें इन साधारण वस्तुओं पर विश्वास नहीं होता है और न वे इनसे लाभान्वित ही हो सकते हैं। लेकिन मेरे देश के असंख्य निधन भाइयो! तुम्हें यह विश्वास सदैव हृदय में रखना चाहिए कि उस परम दयालु ईश्वर ने तुम निर्धनों के लिये भी ऐसी २ वस्तुएं संसार में उत्पन्न कर रखी हैं जिनको हर व्यक्ति सरलता पूर्वक प्राप्त कर सकता है और धनिकों के हीरे जवाहरातों से बढ़ कर लाभ उठा सकता है। यही उस प्रभु की लीला है। इस पुस्तक में तो हम केवल एक दो सन्यासी प्रयोग ही आपकी भेंट कर रहे हैं, किन्तु 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' में तो हमने अनेक ऐसे २ सराहनीय योग अङ्कित किए हैं, जिन्हें पढ़कर और फिर आवश्यकता के समय प्रयोग में लाकर उनके चमत्कारी प्रभाव से दंग रह जायेंगे। उनमें केवल देहाती फल फूलों, पेड़ पौधों तथा बूटियों आदि से ही अपूर्व लाभ उपलब्ध करने की विधियां आपको मिलेंगी, जिन्हें पाकर आप मुदित हो उठेंगे। हां, हृदय की दुर्बलता दूर कर उसे पुष्ट व निरोग बनाने वाले सन्यासी प्रयोग स्वीकार कीजिए :—

हिरण के सींग का भीतरी भाग यथावश्यक प्राप्त करले और उसे मिट्टी के कोरे कूजे में बन्द करके आग में भस्म कर लें तथा उस भस्म को सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रख लें। यह औषधि हृदय की पीड़ा के लिये अकसीर है। आवश्यकता के समय १ से २ माशा तक की मात्रा में ठंडे पानी के साथ सेवन करें हृदय-पीड़ा तत्काल शांत हो जायेगी। यह प्रयोग सैकड़ों बार का परीक्षित है और आशा से अधिक गुणप्रद भी है।

द्वितीय सन्यासी प्रयोग

यह प्रयोग पूर्व कथित हस्त-लिखित सन्यासी संचिका से उद्धृत किया गया है। इस संचिका के विषय में हम पहिले भी पाठकों को बता चुके हैं कि यह एक अति प्राचीन सन्यासी की हस्त-लिखित संचिका है, जिसमें कि सैकड़ों ऐसे ही चमत्कारी और गुप्त प्रयोग अंकित हैं। यह संचिका दैव-संयोग से हमारे एक मित्र वैद्य जी को प्राप्त हो गई थी और उनके द्वारा ही उस संचिका के कुछ उत्तमोत्तम प्रयोग हमें प्राप्त हुए हैं, जो कि इस पुस्तक के विविध प्रकरणों में यथास्थान अंकित हैं। आपको जब आवश्यकता प्रतीत हो, इनकी परीक्षा कर देखें। इनके

गुणकारी प्रभाव स्वतः ही आपको मुग्ध कर लेंगे। ये तो पाठकों का सौभाग्य है कि ऐसा अनमोल कोष हमारे पास तक पहुंच गया अन्यथा भला ऐसे गुप्त प्रयोग प्राप्त कर लेना क्या सरल था ? हृदय रोगों के लिये वह प्रशंसनीय प्रयोग इस प्रकार है:—

६ सेव का रस आधा सेर, बादामी रंगवाली गाजर का रस पाव भर, मिश्री सफेद तीन पाव। प्रसिद्ध विधि से इनका शर्बत तैयार करलें और नित्य प्रातः सायं दो तोले शर्बत पानी में मिलाकर पिया करें कुछ ही दिनों में आप स्वयं अनुभव करेंगे कि धड़कन व दुर्बलता आदि दूर होकर हृदय पुष्ट होता जा रहा है।

हृदय व यकृत-दौर्बल्य के लिए रामबाण रजती भस्म फौलाद

लीजिये। अब हम आपको एक अतिस्तुत्य भस्म का योग भी बता रहे हैं, जो कि आयुर्वेद तथा यूनानी चिकित्सा की उत्तमोत्तम भस्मों में भी अपना विशेष महत्व रखता है। इस योग की प्रशंसा करना मानो सूर्य को दीपक दिखाना है। जो सज्जन बना कर सेवन करेंगे, ईश्वर कृपा से उसके चेहरे का तेज ही इस योग के गुणों को प्रकट कर देगा। यह योग स्वर्गीय पूज्यपाद स्वामी

लक्ष्मण जी ने प्रदान किया था, जो कि आज इस पुस्तक के पाठकों को भेंट किया जा रहा है।

G. योग—फौलाद चूर्ण ३ तोले, रजत चूर्ण ७ तोले। दोनो को उत्तम खरल में डाल कर अम्लबेत बूटी के रस में निरन्तर ८ घंटे तक खरल करे और फिर टिकियाँ बना कर आंचदें। इसी प्रकार ६ ७ आंचें दे। अत्युत्तम भस्म तैयार हो जाएगी।

सेवन विधि—१ रत्ती की मात्रा नूनी या किसी खमीरा में दें। हृदय व यकृत की दुर्बलता दूर करने में अक्सीर है, साथ ही प्रमेह नाशक भी है और कुछ ही दिन के सेवन करने मात्र से चेहरे की रंगत लाल हो जाती है।

विशेष सूचना

जो सज्जन उपरोक्त भस्म बनाने में कष्ट अनुभव करें, वे हमारे यहां से विशुद्ध रूप से बनी बनाई मंगा सकते हैं। मूल्य ८) प्रति तोला है। इस पते पर आर्डर भेज कर मंगावें :—

आमाशय रोग

आमाशय का संक्षिप्त विवरण प्रारम्भ में लिखा जा चुका है। विशेष विवरण के लिए 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' का अध्ययन करें। यहाँ हम अधिक न लिख कर केवल इतना ही पुनःस्मरण कराए देते हैं कि हमारा भोजन आमाशय में ही जाकर पकता है और फिर उसी से रक्त बनता है। अतः यह अत्यधिक महत्वपूर्ण अंग है। दुर्भाग्यवश आमाशय सम्बन्धी असंख्य रोग दिन प्रति-दिन बढ़ते ही जाते हैं। उदरशूल, हिचकी, वमन, उबकाई कोष्ठबद्धता और विशूचिका (हैजा) जैसे भयङ्कर रोग भी आमाशय विकार से ही उत्पन्न होते हैं। जिनमें विशूचिका (हैजा) के नाम से तो हमारे देश का बच्चा बच्चा परिचित है। अकेले भारतवर्ष में इस रोग से लाखों आदमी प्रति वर्ष मर जाते हैं। चूंकि 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' तथा 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' आदि पुस्तकों में उत्तम से उत्तम आयुर्वेदिक तथा यूनानी योग या सरल से सरल और अत्यल्प मूल्य में बनने वाले प्रयोग अन्य सभी आमाशय रोगों के लिए पर्याप्त प्रकाशित किए जा चुके हैं, अतः हम यहाँ आमाशय रक्षा के कुछ विशेष नियम बता कर केवल विशूचिका जैसे

भयंकर रोग के लिए ही एक से एक बढ़कर सन्यासी प्रयोग अंकित करेंगे।

आमाशय रक्षा के लिए सुनहरी आदेश

१—जब तक भूख खुलकर न लगे, कदापि भोजन मत करो और खाते समय दो चार ग्रास की भूख शेष रख कर ही उठ बैठो।

२—यदि चित्त में आलस्य अधिक हो तो उस दशा में भोजन नहीं करना चाहिए। और यदि करो, तो अति अल्प भोजन करो। अधिक खाने से आमाशय पर बोझ पड़ेगा और कोई न कोई रोग उत्पन्न हो जायगा।

३—लेमन, सोडा, बर्फ, तथा रेचन आदि का अधिक सेवन करने से आमाशय अति शीघ्र दुर्बल हो जाता है। हा विशेष आवश्यकता के समय कभी २ सेवन कर लेने मे कोई हानि नहीं।

४—एक साथ ही ५-६ प्रकार के भोजन अर्थात् विविध स्वादों के पदार्थ खाना स्वास्थ्य के लिए परम हानि-कारक है।

५—प्रतिदिन नियत समय पर नियमित भोजन करना ही स्वास्थ्य के लिए हितकर है। बार २ थोडा २ खाते रहने से रोग ग्रस्त हो जाने की आशंका है।

६—भोजनोपरान्त तत्काल सो जाना स्वास्थ्य के लिये विशेष हानिकारक है, अतः भोजन के पश्चात् थोड़ा टहलना आवश्यक होता है।

७—भोजन को सदैव भली प्रकार चबा २ कर खाना चाहिये, किन्तु यथा सम्भव शीघ्र ही खालो। वे लोग भूल करते हैं, जो भोजन को बिना चबाए ही निगल जाते है, या कि एक २ कौर को घंटों चबाते ही रहते हैं।

८—पानी को एकदम गटागट पी जाना बहुत ही बुरा होता है, इससे आमाशय की ऊष्मा बुझने की आशंका रहती है। पानी कम से कम तीन सांस लेकर पीना चाहिए।

९—सुगन्धित द्रव्य, तथा पोदीना, जीरा, बड़ी इलायची, तज आदि आमाशय के लिये परम लाभप्रद हैं। अतः इनको प्रायः सेवन करते रहना चाहिए।

१०—रोटी सदैव बिना छने आटे की खानी चाहिए। क्योंकि चिकित्सकों के मतानुसार भूसी में विटामिन होता है, जो कि आमाशय के लिये अत्यधिक पौष्टिक होता है।

११—वैसे तो दूध भूलोक का अमृत है, किन्तु यदि दूध के साथ खट्टी वस्तुएं सेवन की जायं, तो बड़ा हानि-

कर सिद्ध होता है; अतः दूध के साथ खट्टी वस्तुएं भूल कर भी सेवन नही करनी चाहिए।

१२—तरबूज, ककड़ी, खीरा आदि पदार्थ निराहार मुख कभी न खाने चाहिए। क्योंकि तीव्र भूख में इन वस्तुओं के खाने से पित्त बढ़ जाता है। उसी प्रकार भरे हुए पेट भी इन्हें नही खाना चाहिये, क्योंकि अजीर्ण होकर विशूचिका (हैजा) होने का भय रहता है।

१३—तांबे और पीतल के बर्तन में कलई कराए बिना भोजन नहीं करना चाहिए। क्योंकि इनमें भोजन विषाक्त हो जाता है।

उपरोक्त आदेशों का पालन करने वाला व्यक्ति ईश्वर कृपा से आमाशय के समस्त रोगों से बचा रहेगा।

हैज़ा (विशूचिका)

यह रोग बड़ा ही सांघातिक है और महामारी की भाँति वायु विकृति से फैलता है। जिस गांव या नगर में यह रोग फैलता है, वहां घर के घर और गांव के गाँव उजाड़ देता है। भारत में प्रति वर्ष लाखों घरों के दिये बुझ जाते हैं। इस रोग में अधिकता से वमन और दस्त होकर रोगी अत्यंत दुर्बल होता हुआ परलोक को सिधार जाता है।

विशूचिका के मूल कारण

प्रायः यह रोग वायु जल की दुष्टता, अधिक पेट भर कर भोजन खा लेना, और पहिले भोजन पचे बिना ही ऊपर से और खा लेना आदि कारणों से होता है किन्तु अर्वाचीन डाक्टरों के मतानुसार इस रोग का कारण एक बहुत ही छोटा वानस्पतिक कीड़ा है, जिसे डाक्टरी भाषा में कॉलरा बेसेलिस कहते हैं। इस कीड़ का जर्मनी के विख्यात डाक्टर कास्व ने १८८२ ई० में पता लगाया था। उनका कथन था कि यह रोग कदाचित् मनुष्य के अतिरिक्त अन्य किसी जीव को नहीं होता।

विशूचिका की पहिचान

साधारणतः वमन और रेचन का अधिकता से आना ही विशूचिका का प्रकट चिन्ह है, किन्तु फिर भी यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक वमन व रेचन विशूचिका से ही आते हैं। प्रायः अनाड़ी वैद्य और नीम हकीम वमन तथा दस्त आते देख कर तुरन्त कह दिया करते हैं कि अजी इन्हें तो हैज़ा हो गया है। बेचारा रोगी तो यह नाम सुनते ही अधमरा हो जाता है और रही सही हिम्मत घर की स्त्रियाँ रो २ कर पस्त कर देती हैं। अतः चिकित्सकों को यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिये कि चाहे सचमुच ही रोगी को कोई भयंकर रोग क्यों न हो, उसे बताकर कभी

साहसहीन नहीं करना चाहिये, अपितु यदि उसके हृदय में आशंका घुस भी गई हो, तो उसे दूर करने का प्रयास करते हुए, रोगी को प्रोत्साहित करते रहना चाहिये। यही बड़े २ विद्वान और अनुभवी चिकित्सकों का सर्व प्रमुख सिद्धान्त है। क्योंकि प्रायः औषधियों से भी अधिक लाभदायक वे उतनी ही उत्साहवर्धक बातें सिद्ध होती हैं, जोकि चिकित्सक अथवा रोगी के परिचायक उसे सुना सुना कर प्रोत्साहित किया करते हैं। अस्तु हर चिकित्सक को पहिले यह मूल सिद्धांत ध्यान में रख कर तब ईश्वर का नाम लेकर चिकित्सा प्रारम्भ कर देनी चाहिए।

विशूचिका की पहिचान के लिए निम्न ५ प्रमुख लक्षण हैं:--(१) रोगी को दस्त बहुत अधिक आते हैं। (२) वमन भी अधिक आती हैं। (३) पाँवों तथा पिंडलियों में खिंचावट उत्पन्न हो जाती है। (४) शरीर ठंडा पड़ जाता है। (५) मूत्र रुक जाता है। ये हैजे की पहिचान के लिये प्रमुख लक्षण हैं। वैसे इस रोगी की चार अवस्थाएं होती है। इन चारों अवस्थाओं का पृथक्-पृथक् वर्णन, उनके पृथक्-पृथक् लक्षण आदि में लिखे जाते हैं।

विशूचिका रोगी की अवस्थाएं

प्रथमावस्था--यह रोग साधारणतः प्रातः ४ बजे

से प्रारम्भ होता है, परन्तु कभी २ पहले सुस्ती सी प्रतीत होकर दस्त लग जाते है । दस्तों में पहिले विष्टा निकलती है फिर बाद में ठीक चावलों की पीच्छ की भांति दस्त आते हैं । यद्यपि दस्त पेट मे गड़बड़ होकर आते हैं परन्तु पेट में पीड़ा या मरोड़ नितान्त नही होती और प्रत्येक दस्त के पीछे बहुत ही दुर्बलता हो जाती है । साधारणतः दस्तों के एक घन्टा पश्चात् वमन होनी आरम्भ हो जाती है । वमन मे पहिले खाई हुई वस्तु निकलती है, फिर पीले रंग का जल निकलता है । तथा अन्त मे वमन में भी चावलों की पीच्छ की भांति आने लगती है । किंतु इसमें किसी प्रकार की पीड़ा नही होती । मानो कि मशक से जल निकल रहा है । रोगी की जीभ खुश्क कर श्वेत हो जाती है । आमाशय के स्थान को दबा देने से पीड़ा अनुभव होती है । रोगी की भूख नितांत मिट जाती है तथा प्यास बहुत अधिक लगती है । पावों तथा पिंडलियों मे खिचावट प्रायः इसी अवस्था में प्रारम्भ हो जाती है । यह अवस्था ६-७ घन्टे रह कर दूसरी अवस्था प्रारम्भ हो जाती है ।

द्वितीयावस्था--दस्त तथा वमन बहुत अधिक होने लगते है । साथ ही पावोंमें खिंचावट उत्पन्न होजाती है पेट तथा सिर में पीड़ा उत्पन्न हो जाती है, प्यास बहुत

अधिक लगने लगती है। बेचैनी तथा घबराहट सीमा से अधिक उत्पन्न हो जाती है, और जल या अर्क जो कुछ पिलाया जाय, तत्क्षण की वमन द्वारा निकल जाता है।

तृतीयावस्था—द्वितीय अवस्था समाप्त होने के उपरांत जब रोगी की तृतीयावस्था प्रारम्भ होती है तो सारा शरीर ठंडा पड़ जाता है, और शरीर की खाल सिकुड़ कर झुरिया पड़ जाती हैं। हाथ पांव नाक तथा मुख सिकुडकर नीले हो जाते हैं, आंखें सूख कर भीतर को धस जाती हैं बगल का टेम्प्रेचर (तापमान) ४ से ५ साधारण फारनहाइट के सामान्य से भी कम हो जाता है। अथात् ६४ या ६५ सेन्टीग्रेड हो जाता है। वरन् मुख में तो इससे भी घट जाता है। और स्त्री के गुप्ताङ्ग तथा गुदा में इतना बढ़ता है कि १०४ या १०५ अपितु कभी २ इससे भी ऊपर जा ठहरता है। यह बात ध्यान पूर्वक नोट करनी चाहिए।

नाडी की गति---इस अवस्था में नाडी की गति बहुत ही कठिनता से दुर्बल धागे की भांति प्रतीत होती है और नाडी की गति प्रति मिनट ६० से १०० तक पहुच जाती है।

श्वास गति—इसमें सांस छोटे २ प्रति मिनट २५ से ४० तक आने लगते हैं, जो कि अत्यन्त ठण्डे

होते है। बेचैनी तथा घबराहट बहुत ही अधिक बढ़ जाती है अतः रोगी इधर-उधर हाथ पांव पटकने लगता है।

स्वर—अत्यधिक क्षीण हो जाता है अपितु ऐसा प्रतीत होने लगता है, मानो रोगी काना फूंसी कर रहा है। बहुधा स्वर नितान्त मन्द हो जाता है और केवल होंठ हिलते प्रतीत होते हैं। मूत्र रुक जाता है। किसी २ रोगी को तृतीयावस्था मे वमन तथा दस्त रुक जाते हैं, और किसी २ को निरन्तर आते रहते हैं। यह अवस्था कुशलता पूर्वक बीत जाने पर चतुर्थावस्था प्रारम्भ होती है।

चतुर्थावस्था—यदि तृतीयावस्था कुशलता पूर्वक पार करके रोगी चतुर्थावस्था में आ गया, तो उसके स्वस्थ होने की आशा हो जाती है। क्योंकि इस अवस्था में रोग धीरे-धीरे घटना प्रारम्भ होता है। वमन तथा दस्त रुक जाते हैं, प्यास घट जाती है नाड़ी की गति तीव्र हो जाती है। शरीर में उष्णता का संचार होने लगता है, अपितु किसी २ रोगी को ज्वर भी हो जाता है। मुख पर स्वास्थ्य लाभ के चिन्ह और रमणीकता झलकने लगती है और धीरे २ रोगी स्वस्थ हो जाता है।

विशूचिका से बचे रहने के लिए सुनहरी शिक्षाएं

अब हम अपने प्रिय पाठकों को कुछ ऐसे नियम बताते हैं, जिनका पालन करने से आप इस दुष्ट रोग के आक्रमण से सुरक्षित रह सकते हैं।

१. सर्व प्रथम अपराधों और दुष्कर्मों से बचो, और अधिक से अधिक समय शुभ कामों में लगाओ।

२. चूंकि विशूचिका रोग गन्दगी से पैदा होता है, अतः शरीर, वस्त्र, घर तथा विशेषकर भोजन को अत्यन्त स्वच्छ रखें।

३. रोग का भय मन में कदापि न आने दें, वरन् मन को बहुत ही दृढ़ रखें। और सदैव यही विश्वास मन में जमावें कि यह रोग आपके पास तो फटक भी नहीं सकता है। क्योंकि यह रोग कायर लोगों को प्रायः हो जाया करता है।

४. विशूचिका के दिनों पानी को उबाल कर ठंडा करके पिए और कुंओं में पोटाशियम परमैंगनेट (लाल दवा) डालें, इससे जल स्वच्छ हो जाता है।

५. समस्त पात्र और खाने पीने के पदार्थों को ढक कर रखना चाहिए।

६. हैजे के दिनो में बहुत अधिक पेट भरकर न खाना चाहिए, अपितु कुछ आगे की भूख शेष रखनी चाहिए, किन्तु साथ ही यह भी ध्यान रहे कि विशूचिका के दिनों में भूखा भी नही रहना चाहिए। क्योंकि आमाशय का खाली रहना बडा हानिकारक होता है। जो लोग खाली पेट बाहर चले जाते हैं, प्रायः इसी रोग में ग्रस्त हो जाते है।

७ हैजे के दिनो मे पूडी कचोडी तथा सडे गले फल व बासी भोजन, तरकारिया आदि भूलकर भी सेवन नही करनी चाहिए।

८. हैजे के दिनों मे जुल्लाब लेना अत्यधिक हानिकारक होता है। यदि अकस्मात एक दो दस्त लगातार आ जावें, तो तुरन्त ही 'ठण्डक' नामक औषधि सेवन कर लेनी चाहिए, जिसका योग 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में प्रकाशित हो चुका है। यदि स्वयं न बना सकें तो हमसे २।) प्रति शीशी मंगालें

पता है:—

देहाती फार्मेसी

मुकाम व पास्ट कासन,

जिला गुड़गावां (ई० पी)

९—रोगी के दस्त तथा वमन आदि को राख आदि से तत्काल दबा देना चाहिए, क्योंकि इससे रोग के कीड़े फैल कर दूसरों को लग जाते हैं।

१०—हैजे के दिनों में प्याज का सेवन नित्य करना चाहिए।

विशूचिका के लिये चिकित्सा सिद्धान्त

विशूचिका के रोगी की वमन तुरन्त रोक देना भारी भूल है। क्योंकि इससे दूषित मल आमाशय के अन्दर ही रुक जाता है, जिसके कारण रोग शीघ्र ही मर जाता है। इसलिए चिकित्सकों को चाहिए कि पहिले दूषित मल को निकालने के लिए एक गिलास अर्धोष्ण जल में एक तोला बारीक पिसा हुआ नमक मिलाकर रोगी को पिलावें, ताकि खुल कर वमन हो जाय, और आमाशय दूषित मादे से रहित होकर स्वच्छ हो जाये। इसी प्रकार दस्तों को रोक देने से अफारा होने की आशंका रहती है। इसलिए दस्तों को भी एकदम नहीं रोक देना चाहिए, प्रत्युत कोई कोष्ठ-बद्धता नाशक क्वाथ ऐसा देना चाहिए, जो विशूचिका के लिये लाभकारी हो। जब आंतें तथा आमाशय विषैले मादे से पूर्णतया रहित हो जाए, तो निम्न सन्यासी प्रयोगों द्वारा रोग निवारण के उपाय करने चाहिए।

सन्यासियाना क्षार

सर्व प्रथम हम आपको एक उत्तम सन्यासियाना क्षार का प्रयोग भेंट करते हैं जो अपूर्व पाचक होने के साथ ही साथ आमाशय के अनेक विकारो को दूर करता है। आवश्यकता के समय जो सज्जन इसे बना कर प्रयोग में लायेंगे, ईश्वर कृपा से अभूतपूर्व लाभ प्राप्त करेंगे। मेरा दावा है कि यह प्रयोग वैद्यक के अच्छे २ कोष्ठ-बद्धता नाशक योगों से बढ़ कर ही है।

प्रयोग—पंजाब प्रान्त में लाठिया नामक बूटी प्रसारणी की किस्म की मिलती है, जिसके फूल ऊदे रंग के होते हैं। यदि फूल तोड़ कर खाया जाय, तो अत्यन्त तेजी और चरपराहट अनुभव होती है। इसकी फलियां भी मिर्च के समान तेज होती हैं। इस बूटी को छाया में सुखा कर जला लें और प्रसिद्ध विधि से इसका क्षार बना लें। यदि आपको क्षार बनाने की विधि ज्ञात न हो तो 'देहाती अनुभूत रोग संग्रह' में देख लें। उसमें समझा कर लिखी गई हैं। रोगी को इस क्षार की २ रत्ती मात्रा समोष्ण जल के साथ सेवन कराएं। आमाशय के समस्त विकारों को दूर कर देगी।

वमनहारी टोटका

हम पहिले ही बता चुके है कि विशूचिका के रोगी

की वमन एकदम नहीं रोक देनी चाहिए। अपितु पहिले पूर्व कथित विधि से खुल कर वमन करादें। हाँ जब आमाशय स्वच्छ हो जाए किन्तु वमन फिर भी जारी रहें, तो निम्न चुटकुलों द्वारा वमन को रोक देना चाहिये। ये सन्यासी चुटकुले इतने लाभप्रद सिद्ध हुए हैं कि आज-कल अनेक वैद्य तथा हकीम, जो कि जान गये हैं, इनका प्रयोग कराने लगे हैं। इनसे निश्चय ही वमन रुक जाती है।

प्रथम चुटकुला

चूल्हे की भटोर अर्थात् लाल मिट्टी बारीक पीस कर रखें और आवश्यकता के समय केवल १ माशा की मात्रा पानी के साथ रोगी को खिलावे, वमन तत्काल रुक जायेगी।

द्वितीय चुटकुला

मक्खी की बीट आवश्यकतानुसार इकट्ठी करलें और खरल करके पानी की सहायता से रत्ती २ की गोलियाँ बनालें। आवश्यकता के समय रोगी को १गोली पानी के साथ खिलादें। वमन तत्काल ही रुक जायेगी। यदि गोली अन्दर जाने के पूर्व ही वमन हो जाए, तो उसी समय एक गोली और देदें। ईश्वर कृपा से तत्काल प्रभाव दिखाएगी।

तृतीय चुटकुला

मोर के पंख को जला कर उसकी भस्म को मधु

(आदक) में मिला कर रोगी को चटाए। दो तीन अंगु-लियां चटाने से ही वमन तथा उबकाइयां बन्द हो जायेंगी।

८ चतुर्थ चुटकुला

अपामार्ग की जड़ ६ माशा लेकर सौफ के अर्क या पानी में घोट कर पिलाए। विशूचिका के लिये अकसीर है।

एक परीक्षित सन्यासी प्रयोग

यह सन्यासियों का विशेष प्रयोग वमन को तत्काल बन्द कर देता है। इसकी सैंकड़ो रोगियों पर परीक्षा की जा चुकी है, किन्तु ईश्वर कृपा से कभी निष्फल नहीं गया। चाहे वमन किसी कारण से भी क्यों न आता हो, इसकी एक दो मात्राएं ही नितान्त रोक कर देती हैं।

प्रयोग इस प्रकार है

यथावश्यक साफ लेकर घृत कुमारी के गूदे के साथ खरल करके मटर के दाने के बराबर गोलियां बनाले और आवश्यकता के समय प्रातः साय एक २ गोली भोजन के पश्चात् पानी से दिया करें। विशूचिका का वमन के लिए भी यह प्रयोग अत्यन्त गुणप्रद है।

एक सन्यासी का गुप्त योग

यह योग एक सन्यासी जी के हृदय का रहस्य है। इसे यदि जादू कह दिया जाय तो अतिशयोक्ति न होगी।

विशूचिका जैसे भयंकर और प्राण-घातक रोग के लिए ऐसा तत्काल प्रभावक तथा इतना सरल योग मैने आज दिन तक दूसरा नही देखा। इस योग के प्राप्त होने की कथा इस प्रकार है—

हमारे एक मित्र डाक्टर साहब हैं। उनके यहां एक महात्मा जी चिरकाल से आया करते थे और कई २ दिन तक उनके यहां अतिथि बन कर रहा करते थे। एक बार डाक्टर साहब के घर का ही एक लडका विशूचिका ग्रस्त हो गया। सौभाग्यवश उन दिनों वे महात्मा जी वही ठहरे हुए थे। उन्होंने जैसे ही सुना, वैसे ही डाक्टर साहब को बुला कर निम्नांकित प्रयोग बताते हुए सेवन कराने का आदेश किया। उनके आदेशानुसार १-१ घण्टे के अन्तर से एक दो गोली दी गई। आप शायद कठिनता से ही विश्वास कर सकेंगे कि प्रभु कृपा से ३ घण्टे के पश्चात् ही बालक स्वस्थ हो गया। वही योग हम आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहे हैं।

योग--यथावश्यक लाल मिर्च खरल में बारीक पीस कर पानी के साथ जंगली बेर बराबर गोलियां बना लें और आवश्यकता के समय ५ लौंग एक पाव जल में औटाएं। जब आधा पानी शेष रहे तो इस पानी के साथ एक गोली सेवन कराएं। इसी प्रकार १ १ घण्टे के अन्तर

से देते रहें। अत्यन्त चिन्ताजनक अवस्था में भी यह योग अपूर्व लाभदायक सिद्ध होता है। किन्तु यह ध्यान में रखें कि रोगी को ठण्डा पानी कदापि न देना चाहिए। ठण्डे पानी से परहेज रखना आवश्यक है।

अचूक सन्यासी योग

यह योग भी विशूचिका के लिए अचूक रामबाण है। जब कोई अन्य प्रयोग सफल न हो तो अन्त में इसको सेवन करायें। ईश्वर कृपा से निराशा के घोर अन्धकार में आशा की ज्योति मुस्करा उठेगी। विशेषता यह है कि यह योग एक बूटी का है, जो कि दयामय जगदीश्वर ठीक विशूचिका के दिनों में ही उपजता है योग इस प्रकार है:—

इन्द्रायण बूटी, जो कि तालाबों और जोहड़ों के तटों पर बहुत उत्पन्न होती है, जिसके पत्ते छोटे २ ठीक गोरख पान जैसे और फूल छोटे-छोटे लाल रंग के होते हैं। जब फूलती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु ने लाल कालीन तालाब के किनारे बिछा दिया है। आशा है कि अब आप इस बूटी को समझ गये होंगे। यह बूटी विशूचिका के लिए सर्वोत्कृष्ट अकसीर है। ६ माशा इन्द्रायण बूटी, ५ दाने काली मिर्च पाव भर जलमें घोटकर छानलें और घूंट २ करके पिलावें। तथा १५ या २०

मिनट के उपरान्त पुनः पिलावें। इसी प्रकार ३-४ बार पिलाने से वमन, दस्त, बेचैनी तथा प्यास आदि शान्त होकर रोगी के प्राणों में प्राण आजायेंगे। यहां तक कि बहुत से रोगी तो ३-४ बार के पिलाने से ही सो जाते हैं और विशूचिका के रोगी को यदि नींद आ जाय, तो समझ लो, रोग दूर हो रहा है। यह बूटी विशूचिका की प्रत्येक दशा में अतीव लाभदायक सिद्ध होती है। किन्तु स्मरणीय बात यह है कि बूटी सदैव टटकी लेनी चाहिए। यदि यह सम्भव न हो, तो एक दिन लाकर उसे कपडे में लपेट कर तथा भिगोकर रखें। इस प्रकार कई दिन तक वह टटकी के ही समान बनी रह सकती है।

एक विशेष सूचना

यद्यपि विशूचिका के लिए हमने यथा सामर्थ्य उत्त-मोत्तम सन्यासी प्रयोग संग्रह करके आप को भेंट किए हैं, तथापि विशूचिका जैसे सक्रामक रोग के लिए ये अपर्याप्त ही हैं। अस्तु 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' तथा 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' नामक हमारी पूर्व प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययन एक बार अवश्य करें उन पुस्तकों में हर रोग के श्रेष्ठतम आयुर्वेदिक योग विद्यमान हैं और आशा है कि उन पुस्तकों की मदद से आप भयानक से भयानक रोगों पर भी विजय प्राप्त करेंगे।

यकृत तथा प्लीहा रोग

यकृत तथा प्लीहा का पूर्व विवरण हम प्रारम्भ में लिख चुके हैं। ये दोनों अङ्ग हमारे शरीर के उत्तमांगों में बड़े ही महत्वपूर्ण हैं, इनके रोग तो अनेक हैं और उन समस्त रोगों का सविस्तार वर्णन व पृथक २ चिकित्सा 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' तथा 'दे० अ० यो० स०' में समझा कर लिखी गई है, वहाँ देख लें। यहां हम केवल पाण्डु रोग के लिए एक दो सन्यासी प्रयोग अंकित करते हैं। जिनसे ईश्वर कृपा से आपको निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी।

हां उनसे पूर्व हम आपको हित-सम्पादन के निमित्त कुछेक ऐसे नियम प्रस्तुत करते हैं, जिन पर आचरण करके आप अपने यकृत व प्लीहा को रोगों से सुरक्षित रख सकते हैं। इन नियमों को प्रत्येक चिकित्सक तथा प्रत्येक साधारण व्यक्ति के लिए स्मरण रखना अत्यावश्यक है।

सुनहरी-नियम

१. शीतल औषधियों व खाद्य पदार्थों का अधिक सेवन यकृत दोष उत्पन्न कर देता है, इसलिए सदैव शीतल वस्तुओं का सेवन करना उचित नहीं।
२. लज्जतदार वस्तुओं का सेवनाधिक्य यकृत में सुद्दा पैदा कर देता है।

३. कटु औषधियां और सुगन्धित वस्तुएं यकृत रोग में लाभदायक होती है।

४. यकृत रोग में जो औषधि दी जावे, वह चूर्ण रूप में अति सूक्ष्म होनी चाहिए, ताकि उसका प्रभाव सरलता पूर्वक यकृत तक पहुँच सके।

विशेष ज्ञान की बातें

१ यकृत का शोथ, चाहें वह किसी कारण से हो गया हो, उससे यकृतोदर रोग उत्पन्न हो सकता है।

२. यकृत शोथ में यदि अतिसार आरम्भ हो जावे, तो प्रायः घातक सिद्ध होता है।

३. यदि यकृत का शोथ प्लीहा में परिवर्तित हो जाए, तो इसे शुभ लक्षण समझना चाहिए।

४. यदि यकृतोदर के रोगी के अण्डकोषों पर शोथ हो जाय, तो रोगी के स्वस्थ होनेकी आशा नहीं रहती।

५. यकृतोदर रोगी को खांसी हो जान[illegible] सन्देश है।

पांडु रोग (पीलिय

इस रोग में पहिले आंखें, फिर नाक तथा मुख पीले हो जाते हैं। किसी २ का सारा शरीर ही पीला हो जाता है। इसके दो भेद हैं:—१—पीला। २—श्याम। पीत-

पांडु में पहिले मूत्र पीला तथा श्याम-पांडु रोग में श्यामता लिए हुए आता है, फिर यह रंग पहले आखों में तथा फिर नखो और फिर सारी देह पर प्रगट हो जाता है। पेट अफरा रहता है, भूख कम हो जाती है। अथवा बिल्कुल नहीं रहती है। चिकनी वस्तुओं से घृणा हो जाती है। टट्टी मलीन तथा दुर्गन्धि युक्त आने लगती है। चित्त की बेचैनी चरम सीमा को पहुँच जाती है। कई रोगियों को सारी वस्तुएं पीली ही पीली दिखाई देने लगती हैं, तथा शरीर पर खुजली भी होने लगती है।

पांडु रोग के अशुभ लक्षण

यदि रोग बहुत ही पुराना हो जावे और रोगी अति दुर्बल होकर प्रलाप करने लगे, अथवा उसके शरीर में खिचावट उत्पन्न हो जावे, तो रोगी के स्वस्थ होने को आशा नहीं रह जाती

पांडु रोग का सन्यासियाना चुटकुला

यह सन्यासियाना चुटकुला वैद्य दुर्गाप्रसाद जी ने हमारे एक मित्र वैद्य जी को प्रदान किया था। इस औषधि के कण्ठ के नीचे उतरते ही रोग कम होने लगता है।

मूली के हरे पत्तों को कूट कर रस निकाल लें, और उसमें यथेष्ट दानेदार चीनी मिलाकर छान कर रोगी को पिलावें। युवा रोगी के लिए आध सेर रस प्रति दिन

पर्याप्त है। कुछ दिन निरन्तर सेवन करने से पाण्डु रोग दूर हो जायेगा।

एक विचित्र टोटका

एक बार एक फकीर ने बताया था कि एक कुक्कुर का बच्चा, जो अभी बाँग न देता हो, रात के समय हनन करके गर्म २ ही पाण्डु रोगी के अण्डकोषों पर बाँध दें। प्रातःकाल वह पीला हुआ मिलेगा। दूसरी बार पुनः उसी प्रकार पेट चीर कर दूसरा बच्चा बांधदें, और जब तक वे पीले होते रहें हर रात बांधते रहें। ४–५ बार में रोग दूर हो जाएगा और फिर कुक्कुर पीला न होगा।

अद्भुत सन्यासी बूटी

रतन मुन्डी बूटी, जिसके पत्ते बुर वाले, फूल नीले तथा जड़ लाल होती है, इसको ऊंट बहुत खाते हैं, लेकर, जड़ सहित २ तो० औटा कर मिश्री मिलाकर रोगी को पिलाएं। पुराने से पुराना पाण्डु रोग ३ दिन में दूर हो जाएगा।

एक और टोटका

बिषखपरे की जड़ के छोटे २ टुकड़े करके डोरे में बांधकर रोगी के गले में लटकादें। रोग दूर हो जाएगा। सन्यासियों का यह गुप्त टोटका है।

सूचना—पाण्डु रोग के लिए सुलभ प्राकृतिक बूटियों आदि के विशेषतम सरल योग के लिए 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' अवलोकनीय है।

प्लीहा वृद्धि

यह बड़ा ही अशुभ रोग है। जिसके पीछे पड़ जाता है, उसे खाने पीने, उठने-बैठने तथा चलने-फिरने में भी असमर्थ बना देता है। प्लीहा हमारे शरीर की बाईं ओर की पसलियों के नीचे स्थित एक छोटा सा अवयव है। यह पित्त का प्रधान स्थान है। इसका लाभ यह होता है कि यकृत से पित्त को खींच कर आमाशय के मुख पर थोड़ा २ टपकाता रहता है, इससे हमें भूख लगती है। प्राचीन चिकित्सकों के मतानुसार प्लीहा जितनी छोटी होगी, मनुष्य उतना ही मोटा और स्वस्थ्य होगा और प्लीहा जितनी बड़ी होगी मनुष्य उतना ही कृशकाय होगा। कुछेक आधुनिक डाक्टरों का कथन है कि यदि प्लीहा को शरीर में से निकाल दिया जाय, तो मनुष्य मरता नहीं। हां खाने-पीने में असन्तोष बढ़ जाता है, उसे खाने से तृप्ति नहीं होगी किन्तु प्लीहा नितान्त लाभरहित नहीं समझना चाहिए।

यूं तो प्लीहा के अनेक रोग हैं, जिनका सविस्तार वर्णन 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में आप पढ़ चुके होंगे।

उनमें प्लीहा वृद्धि रोग ऐसा है, जो कि हमारे देश में अत्यधिक पाया जाता है। अतः हम आपको इसके कुछ उत्तमोत्तम सन्यासी प्रयोग भेंट करेंगे। किंतु विशेष जानकारी के लिए आपको उक्त पुस्तक का पठन अवश्य करना होगा।

प्लीहा वृद्धि के मूल कारण

यह रोग प्रायः मौसमी ज्वर में ग्रसित रहने के उपरात या ज्वर दशा में ठण्डा पानी पीने से उत्पन्न हो जाता है। अथवा कभी २ वात जनक पदार्थों का सेवनाधिक्य भी इस रोग का कारण हो जाता है।

पहिचान

बाईं ओर की पसलियों के नीचे टटोलने से एक टुकडा सा प्रतीत होता है, वरन् कई रोगियों का बढ़ते २ सारा पेट रोक लेती है। इस रोग से मनुष्य निकम्मा हो जाता है।

प्रथम सन्यासी चुटकुला

६ जब कभी ओले बरसें, तो पाव भर ओले एकत्र करके प्लीहा पर बाधें। पहिले तो एक ही बार बाधने से, नहीं तो दो बार के बाँधने से तो निश्चय ही प्लीहा पूर्ववत् हो जायेगी। किंतु पहिले रोगी को जुल्लाब देवें। ओले न मिलें तो बर्फ भी बांधी जा सकती है।

सन्यासियाना अर्क

पूष माह के महीने मे एक स्वच्छ वस्त्र चने के पौदों पर बिछा कर किसी पात्र में निचोड़ लें। इसी प्रकार दो बोतल ओस प्राप्त करलें, और रोगी को नित्य ५ से १० तोला तक प्रति दिन पिलाया करें। इससे तिल्ली अपने वास्तविक रूप में आ जाएगी। यह प्रयोग पूज्यपाद स्वामी जगदीशानन्द जी ने हमारे फूफा जी को उस समय बताया था, जब कि उनके लड़के की तिल्ली बढ़ गई थी। ईश्वर कृपा से एक बोतल के समाप्त होते २ उसकी प्लीहा ठीक हो गई थी। मेरा आंखों देखा अनुभव है। आप भी यथा समय लाभान्वित हों।

एक लाभदायक बात

प्लीहा के रोगी को भोजन करने व पानी पीने के समय प्लीहा स्थान को दबा लेना चाहिए। इससे रोग बढ़ने नहीं पाता, अपितु घटने में भी शीघ्रता हो जाती है।

सूचना—प्लीहा के उपरोक्त सन्यासी प्रयोग ही हमारे पास थे, जो भेंट कर दिये गए। अधिक जानकारी के लिए 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' पुस्तक बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी।

अन्तड़ियों के रोग

अन्तड़िया हमारे शरीर में क्या काम करती हैं, यह आपको पुस्तक के प्रारम्भ में अंग परिचय में बताया जा चुका है। यहाँ पहिले आंतों के रोगों के सम्बन्ध में कुछ ऐसी उपयोगी बात बताएं जो कि प्रत्येक वैद्य, हकीम, तथा जन साधारण को जानना अत्यावश्यक है। तदनन्तर रोग विवरण तथा सन्यासी प्रयोग लिखेंगे।

चिकित्सकों के जानने योग्य बातें

१---यदि रोगी को मरोड़, वमन, हिचकी तथा मूर्छा साथ साथ हों, तो उसकी मृत्यु हो जाने की आशङ्का है।

२---यदि रोगी की नाभी के चारों ओर पीड़ा हो, और रेचन देने पर भी शांत न हो, तो यकृतोदर की सम्भावना है।

३---यदि रक्तातिसार के रोगी को भूख खूब लगती हो, और साथ ही तीव्र ज्वर भी हो, तो उसके जीवित रहने की आशा कम ही रह जाती है।

४ --यदि रक्तातिसार के रोगी को सहसा वमन होने लगे, तो रोगी स्वतः ही ठीक हो जावेगा। यह शुभ चिन्ह है।

५---यदि मल कई रंग का आए, तो यकृत को ठीक करने

का प्रयत्न करें। क्योंकि यह यकृत विकार से ही होता है।

मलवेग रोकने के दुष्परिणाम

प्रायः यह देखा गया है कि कई मनुष्य आलस्यवश अथवा किसी कार्य में लीन होने के कारण मलवेग को रोके बैठे रहते हैं। यह टेव बहुत ही हानिकारक है। ऐसे लोग प्रायः निम्न रोगों मे से किसी न किसी रोग के शिकार हो बैठते हैं, और घोर कष्ट उठाते हैं। अतः मैं पुनः चेतावनी दिए देता हूं कि आप में कोई भी यदि स्वस्थ तथा निरोग रहना चाहते है, तो मल व मूत्र त्याग की इच्छाओं को कदापि न रोकें, अपितु आवश्यक से आवश्यक काम छोड़कर भी पहिले यह कार्य करें।

१. मलवेग को रोकने वाले व्यक्ति की भूख बन्द हो जाती है, पेट में गुड़ गुड़ होती रहती है, और चित्त पर आलस्य छाया रहता है।

२. कभी २ भयानक उदर शूल हो जाता है।

३ कभी २ गुदा में ऐसी पीड़ा उत्पन्न हो जाती है, मानो कोई चाकू से मांस काट रहा हो।

४. प्रायः ऐसी कोष्ठबद्धता उत्पन्न हो जाती है कि जिसकी चिकित्सा भी कष्ट-साध्य होती है।

५. हर समय खट्टे डकार आया करते हैं और भोजन में अरुचि हो जाती है।
६. शरीर हर समय जकड़ा हुआ सा और टूटता रहता है।
७. कभी ऐसे व्यक्ति को एलाउस रोग हो जाता है, जिसमें कि मल रोगी के मुख द्वारा निकलने लगता है।

विशेष सूचना

जो वस्तु आमाशय को लाभदायक है वही अंतड़ियो के लिए भी लाभदायक होती है। तथा जो आमाशय के लिये हानिकर है, वह आंतों के लिए भी हानिकर होती है।

प्रवाहिका

इस रोग को आपकी बोलचाल में मरोड़ कहते हैं। यह एक अति दुखद रोग है, जो कि बड़ी आंतों मे किसी तीक्ष्ण मल अथवा अवरोध पड़ जाने से हो जाता है। इसके दो भेद हैं, एक प्रवाहिका वास्तविक और दूसरी प्रवाहिका कृत्रिम। प्रायः यह रोग बासी तथा सड़ा हुआ भोजन खाने से तथा कच्चा दूध अधिक पीने से अथवा काष्ठनद्धता तीव्र रेचने लेने से उत्पन्न हो जाता है।

प्रवाहिका की पहचान

इस रोग में पहिले पेट में मरोड़ उठती है फिर पतले-पतले पीप मिले हुए दस्त आने लगते हैं और बहुत बल

लगाने पर मरोड के साथ दस्त आते हैं। वास्तविक प्रवाहिका में अधिक बल लगाने पर आंव के कुछ बिन्दु आकर गुदा पर जलन सी उत्पन्न करते हैं, और कृत्रिम प्रवाहिका अवरोध (मुद्दा) पड़ने से होती है। अतः इसमें कभी २ अवरुद्ध मल भी निकल जाता है। अथवा रक्त आने लगता है। साधारणतया आप उपयुक्त लक्षणों में से वास्तविक प्रवाहिका और कृत्रिम प्रवाहिका की भली भांति पहिचान कर सकते हैं। किन्तु यदि फिर भी समझ में न आए तो निम्न विधि से आप निश्चयात्मक परिणाम पर पहुँच सकते हैं।

प्रवाहिका पहिचान की विधि

यहा हम आपके लाभार्थ दोनों प्रकार की प्रवाहिका का भेद जानने के लिए एक उत्तम विधि लिखते हैं। यह एक प्रसिद्ध आयुर्वेदिक विधि है। चूंकि रोगों की पहिचान करना हर वैद्य हकीम के लिये परमावश्यक है, अतः हमने आपको इस पुस्तक में भी रोगों के विषय में पर्याप्त विवरण दिया है इनसे रोगी के रोग का पता लगा कर फिर ईश्वर का नाम लेकर सन्यासी प्रयोग अनुभव करें। ईश्वर कृपा से निश्चय ही सफलता प्राप्त करेंगे जो कि रोगियों को मूल्यवान आयुर्वेदिक योग सेवन कराते है क्योंकि आपकी चिकित्सा अपेक्षाकृत सस्ती

और लाभकारी सिद्ध होगी। ईश्वर कृपा से रोगियों का आपके पास तांता लगा रहेगा।

हां तो विधि इस प्रकार है:—

रात के समय रोगी को रेहां अथवा ईसबगोल अथवा हलियारे के ६ माशा बीज घी या बादाम के तेल से चुपड़ कर फका दें। यदि प्रातःकाल विष्टा के साथ साबत बीज निकल आए तो समझ लीजिये कि रोगी को वास्तविक प्रवाहिका है। यदि बीज न निकले तो कृत्रिम प्रवाहिका समझनी चाहिए। क्योंकि बीज मलावरोध के साथ आंतों में रुक जायेंगे।

चिकित्सा का मूल सिद्धान्त

प्रवाहिका के रोगी को देखते ही सर्व प्रथम विष्ठ बद्ध पदार्थ सेवन करायें, क्योंकि जो अवरोध रोग का कारण बने हुए हैं, उनका भीतर रुक जाना घोर पीड़ा तथा कोलंज आदि का कारण बन जाता है। अतः पहिले मृदु विरेचन द्वारा अवरुद्ध मल निकाल देना चाहिए। फिर विष्ठ बद्ध पदार्थों से ही लाभ हो जाता है। वैद्यगण यह सिद्धान्त ध्यान में रखें।

विशेष सन्यासी प्रयोग

यह प्रयोग सन्यासियों के हृदय का विशेष रहस्य है। इसके प्रकट होने की कथा इस प्रकार है:—

हमारे एक मित्र के गाँव में एक बार प्रवाहिका इतने जोर से फैली कि घर २ में इसके रोगी दृष्टिगोचर होने लगे। न जाने यह किस प्रकार की प्रवाहिका थी, जो किसी प्रकार भी वैद्यो के काबू में ही नही आती थी। संयोग वश एक महात्मा जी उस गांव से होकर निकले। दोपहर का समय था, धूप बहुत तेज थी। प्यास से व्याकुल हो महात्मा जी हमारे मित्र के द्वार पर पानी पीने आए। हमारे मित्र ने उन्हे सादर बिठा कर जल पान कराया। स्वस्थ चित्त होकर जब वे बैठे, तो उन्होंने हमारे मित्र के पिता जी को रोग शैय्या पर पड़े देखा। पूछने पर उन्हें विदित हुआ कि वे प्रवाहिका रोग में ग्रसित हैं। हमारे मित्र ने महात्मा जी को यह भी बताया कि सारा गांव ही आजकल इस कठिन रोग में ग्रस्त पडा है, और कोई चिकित्सा सफल नही हो रही है। तब दयार्द्र हो वे महात्मा जी यह गुप्त योग बता कर अपनी राह चले गए। सर्व प्रथम हमारे मित्र ने यह योग अपने रुग्ण पिता जी पर ही अनुभव किया, और ईश्वर की ऐसी कृपा, राम-बाण की भांति सिद्ध हुआ। दूसरे दिन ही वे पूर्णतया रोग मुक्त हो गए। तब तो हमारे मित्र ने उस योग को बनाकर गांव के अन्य पीड़ितों को बाँटना शुरू किया। और जिस रोगी को औषधि दी गई, दूसरे दिन ही वह ठीक हो

गया। और कुछ दिनों में ही वह रोग उस गांव से दूर भाग गया। सचमुच ही लोग उन दिनो हमारे मित्र को धन्वन्तरि का अवतार समझने लग गए थे। आज वही प्रयोग हम आप लोगों को भेंट कर रहे हैं। आशा है कि आवश्यकता के समय आप भी तदानुसार ही यश प्राप्त करेंगे।

योग-शीशम के पत्ते ६ माशा,हरा पुदीना १ तोला या सूखा ६ माशा आवश्यकतानुसार मिश्री मिला कर ठंडाई की भांति पानी के साथ घोट छान लें और रोगी को प्रातः साय पिलाएँ। ईश्वर कृपा से पहिले ही दिन अन्यथा दूसरे तीसरे दिन अवश्य ही रोग दूर हो जाएगा।

द्वितीय सन्यासी प्रयोग

दो माशा भांग घी मे भूनकर रात के समय शहद के साथ चटाएं। रोगी को खूब नीद आएगी और प्रवाहिका व अतिसार भी शांत हो जाएगे।

प्रवाहिका के सुगम चुटकुले

१—पीपल को छाल का कोयला दो माशे फंकाकर ऊपर से मिश्री का शर्बत पिलाएं।

२—कीकर के पत्ते दो तोला घोट छानकर मिश्री मिलाकर पिलाए। मरोड़ तथा दस्तों के लिए अत्यधिक लाभ कारी है।

३—केले की फली खांड लगा कर रोगी को खिलाएं, प्रवाहिका पर जादू के समान प्रभाव दिखाती है।

सग्रहणी

यह रोग भी बड़ा ही कष्टप्रद है। इसमें मटियाले रंग के दो चार दस्त प्रतिदिन आकर दो दिन में स्वतः ही कोष्ठ बद्धता हो जाती है। और फिर पूर्ववत् दस्त आने प्रारम्भ हो जाते है। इसमे रोगी दिन २ दुर्बल होता हुआ स्वर्ग सिधार जाता है। इस रोग के कुछ अत्युत्तम सन्यासी प्रयोग आपकी सेवा मे प्रस्तुत किये जाते हैं जो ईश्वर कृपा से अतीव गुणकारी हैं।

प्रथम सन्यासी प्रयोग

यथावश्यक कौड़ियां लेकर जला लें और पीस कर शीशी में सुरक्षित रखें। इसमें से लगभग १ माशा औषधि शहद में मिलाकर रोगी को थोड़ा सा नमक मिश्रित करके चटा दें। कुछ दिन इसी प्रकार सेवन कराने से परम लाभ प्रतीत होगा। सैकड़ों रोगियों पर अनुभूत अक्सीरी प्रयोग है।

विशेष सूचना

सग्रहणी का केवल एक ही उत्तम सन्यासी प्रयोग हमें प्राप्त हो सका है। जो कि इस रोग की चिकित्सा के लिए अपर्याप्त ही हैं। अतः संग्रहणी के उत्तमोत्तम आयु-

वैदिक योगों के लिए 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' का अध्ययन करें यदि सरल और सस्ते योग प्राप्त करना चाहें, तो 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' नामक पुस्तक एक बार अवश्य पढ़ें।

कोष्ठबद्धता

इस रोग को आप लोग 'कब्ज' के नाम से जानते हैं यह बड़ा ही भयानक रोग है और आए दिन अधिकतर लोग कुपथ्य अथवा अनियमितता के कारण इसमे ग्रस्त हो जाया करते हैं। प्राचीन चिकित्सकों ने कोष्ठबद्धता को अगणित रोगों की जननी कहा है, और निस्सन्देह यह सत्य भी है। कोष्ठबद्धता के कारण ही अनेक रोगों का जन्म होता है और यदि कोष्ठबद्धता दूर हो जाए तो वे रोग भी प्रायः स्वतः नष्ट हो जाते हैं। यदि शौच नियमित रूप से पूर्ववत् खुल कर न आए, अर्थात् कभी दूसरे या तीसरे दिन आया करे अथवा कम-मात्रा में आये तो समझ लीजिए कि कोष्ठबद्धता हो गई है। इससे शिर शूल, प्रति-श्याय, दृष्टि-मांद, चित्त की अशांति, भूख की अल्पता, अजीर्ण, अफारा तथा बवासीर आदि २ रोग उत्पन्न हो जाने की आशंका रहती है। अस्तु हमें चाहिये कि इस रोग को साधारण न समझते हुए तत्काल इसकी चिकित्सा करें और शीघ्रातिशीघ्र कोष्ठबद्धता दूर करने का प्रयत्न करें।

कोष्ठबद्धता के मूल कारण

अधिकतर लोगों को चाय अधिक प्रयोग करने, धूम्र-पान अर्थात् हुक्का बीड़ी सिगरेट अधिक पीने, मानसिक परिश्रम अधिक करने, घी दूध का सेवन नितान्त न करने आदि कारणों से अन्तडियां सूख कर कोष्ठबद्धता हो जाया करती है।

कोष्ठबद्धता की पहिचान

शौच में समय अधिक लगता है अर्थात टट्टी देर से उतरती है और बड़ी कठिनता से दुर्गन्ध युक्त सूखी टट्टी निकलती है। कभी २ खून मिली हुई टट्टी आती है। कोष्ठबद्धता २ प्रकार की होती है:—१. अस्थायी कोष्ठ-बद्धता और २—नैत्यिक कोष्ठबद्धता।

अस्थायी कोष्ठबद्धता तो साधारण औषधियों के सेवन से ही दूर हो जाती है, किन्तु नैत्यिक कोष्ठबद्धता बड़ी कठिनाई से दूर होती है। इसके लिए सर्व प्रथम चाय व धूम्रपान त्याग देना चाहिए। तदन्तर ऐसे पदार्थ खाएं जिनसे आन्तों की शुष्कता दूर हो। कुछ ऐसे उपाय अङ्कित किए जाते हैं, जिनसे साधारणतः ही आप कोष्ठबद्धता दूर कर सकेंगे।

कोष्ठबद्धता नाशक उपाय

१—गेहूं के अनछने आटे की रोटी आंतों की क्रिया-गति

को तीव्र करती है, अतः कोष्ठबद्धता दूर करना इसका प्रथम कार्य है। इसके प्रयोग से नैत्यिक बद्धकोष्ठता वाले को भी वह लाभ पहुंचता है, जो कि औषधि सेवन से भी नहीं, अतः अनछने आटे की रोटी खाया करें।

२—भोजन के साथ पानी पीना अत्यावश्यक है, परन्तु पानी अधिक नहीं पीना चाहिये। चिकित्सकों का अनुभव है कि कुछ लोगों को भोजन के साथ पानी न पीने से ही कोष्ठबद्धता रहा करती है।

३—प्रातःकाल उठ कर ठंडा पानी पीना कोष्ठबद्धता दूर करने का सर्वोत्तम उपाय है, किन्तु इसका नैत्यिक स्वभाव डालना आमाशय के लिए हानिकारक है।

४—कभी-कभी भोजन में स्निग्ध-द्रव्यों की अल्पता के कारण भी कोष्ठबद्धता हो जाती है, अतः घी दूध मक्खन का सेवन अवश्य करना चाहिये।

५—प्रातः सायं स्वच्छ वायु में पैदल चलना भी कोष्ठ-बद्धता की प्राकृतिक चिकित्सा है।

अब हम कोष्ठबद्धता दूर करने के लिए कुछेक सुगम सन्यासी प्रयोग आपको भेंट करते हैं, जिन से ईश्वर कृपा से थोड़े से मूल्य में ही आप इस रोग से छुटकारा पा सकेंगे।

सन्यासियाना विरेचन

यह विरेचन अत्यधिक लाभकारी है। यद्यपि देखने में साधारण सा है, किन्तु इसके गुण अद्भुत हैं। विशेषता यह है कि एक बार का बना हुआ कई दिनों तक काम देता है और दूषित नहीं होता और इसे बनाने में कुछ भी व्यय नहीं होता।

प्रयोग- यथावश्यक गेहूं का आटा बारीक कपड़े में छान कर किसी चीनी की प्याली में रखे और उसमें थोहर (जो कि चौड़े पत्ते का हो) का दूध इतना डालें कि आटा गोलिया बनाने योग्य हो जावे। बस २-२ रत्ती की गोलिया बनावें और २ से ४ गोलियां तक गर्म दूध के साथ खावें। दस्त होकर सारा मल निकल जायेगा और चित्त की बेचैनी दूर हो जायेगी।

उत्तम सन्यासी प्रयोग

यह प्रयोग भी कोष्ठबद्धता दूर करने के लिए परम लाभकारी है और आयुर्वेदिक औषधियों की भांति मूल्यवान भी नहीं है। भाई है ही सन्यासी प्रयोग। भला सन्यासियों के पास धन कहां ? अस्तु उन्होंने तो ऐसी ही वस्तुएं खोज निकाली हैं कि जिनमें 'हरा लगे न फिटकरी, रंग चोखा आ जाय'। सन्यासियों की औषधियां तो प्रकृति की गोद में सर्वत्र प्राप्य हैं और बिना किसी

मूल्य के जितनी चाहो प्राप्त कर लो। यही कारण है कि आज कल के अधिकाँश वैद्य ऐसे सरल सन्यासी चुटकुले प्राप्त करने के लिए दिन रात खोज में लगे रहते हैं। प्रयोग इस प्रकार है :--

सिरस के बीज पहिले दिन एक, दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन, ताजा पानी के साथ सेवन करें और फिर इसी प्रकार १-१ नित्य बढ़ा कर ४० तक पहुचादें। कोष्ठ-बद्धता निश्चय ही दूर हो जावेगी।

सन्यासियाना बूटी प्रयोग

गुलबनफशा या गुल गावजबा पिशावरी (एक ऊदे रंग के फूल होते हैं) लेकर पीसलें और उसके बराबर ही खांड मिला कर रात के समय १ तोला की मात्रा प्रतिदिन ताजा पानी से खिलाया करें। बिना किसी घबराहट और कष्ट के प्रातःकाल खुलकर दस्त आजायगा। चित्त प्रसन्न रहेगा।

सूचना—यह बूटी अमृतसर में ६ रु० सेर के भाव से गुल गावजबां पेशावरी के नाम से ही मिलती है।

सर्वोत्तम फकीराना प्रयोग

इससे उत्तम और लाभकारी प्रयोग आज तक देखने में ही नही आया। केवल १ दिन के सेवन मात्र से नैत्यिक

कोष्ठबद्धता भी सदा के लिए दूर हो जाती है और चित्त स्वस्थ हो जाता है।

प्रयोग—१ तो० तुख्म जवाना रात के समय पानी से निगलवा दिया करे। प्रातःकाल खुल कर दस्त आने लगेगा। आश्चर्यजनक गुणप्रद प्रयोग है।

नोट—चूंकि यह प्रयोग पीर अब्दुल रहीम साहब निजामाबादी से हमारे एक मित्र वैद्य को प्राप्त हुआ था। उक्त सज्जन ने लिखा था कि हमारे यहां इसको तुख्म जवाना ही कहते हैं। इसका वैद्यक नाम पुस्तकों में ढूंढने पर भी नहीं मिला, अतः इन्हीं के शब्दों में अंकित कर दिया गया है। जो सज्जन इसे प्रयोग करना चाहें वे इसे निजामाबाद से प्राप्त करने की कोशिश करें।

उत्तमोत्तम सन्यासी रेचन

यह प्रशंसित प्रयोग एक प्राचीन शाही संचिका से उद्धृत किया गया है, जोकि कोष्ठ-बद्धता दूर करने के लिए अत्युत्तम प्रयोग है। आशा है पाठक गण आवश्यकता के समय इससे अपूर्व लाभ उपलब्ध करेंगे।

प्रयोग—संखिया, दारचिकना, रसकपूर, नौशादर, प्रत्येक १ तोला, थोहर के दूध में तीन घंटे निरन्तर खरल करके सत्व उड़ालें, फिर दो तोला जयपाल के तेल में खरल करके सत्व उड़ावें। बस औषधि तैयार है। एक

खशखश के बराबर मात्रा मलाई या मक्खन में मिला कर या अजवायन में डाल कर खिलादें। भोजन में केवल गेहूं की रोटी और बस। उपदंश, फोडा, फुन्सी आदि रोगो के लिए भी उत्तम रेचन है।

वृक्क तथा मूत्राशय के रोग

पुस्तक के प्रारम्भ में अंग परिचय कराते हुए इन दोनो अंगों का महत्व आपको बतलाया जा चुका है। अधिक सविस्तार वर्णन 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' नामक पुस्तक में देखें। यहां हम वृक्कों तथा मूत्राशय के कुछ प्रमुख रोगों का वर्णन करेंगे ताकि आप भली प्रकार रोगों की पहिचान कर सकें, और प्रस्तुत सन्यासी प्रयोगों से पूरा २ लाभ उठा सकें। सर्व प्रथम हम आप को प्राचीन विद्वान चिकित्सकों के कुछ स्मरणीय अनुभव भेंट करते हैं, जो कि वृक्कों तथा मूत्राशय के रोगो की चिकित्सा करते समय आपके लिए अत्यधिक उपयोगी प्रमाणित होंगे।

विद्वान चिकित्सको के अनुभव

१—यदि मधुमेह के रोगी के किसी अंग पर कर्रा (वृप) बन जाय, तो वह किसी भी प्रकार न मरेगा।

२—मधुमेह के रोगी प्रायः यकृत दौर्बल्य व क्षय रोग में ग्रसित होकर ही जीवन-लीला समाप्त करते है।

३—यदि मूत्र बादल की भांति का हो, तथा शरीर में घबराहट सी रहे तो वृक्क रोग की लम्बाई मालूम करनी चाहिए।

४—यदि मूत्र में पतला रक्त और बूंद २ करके मूत्र आए अथवा पेड़ू तथा सीवन के पास पीड़ा होती हो, तो मूत्राशय का रोग समझना चाहिए।

५—मूत्र के ऊपर साधारण झाग आना इस बात का चिन्ह है कि रोग वृक्क में है।

६—जो वस्तु यकृत को बल देती है, वही वृक्कों को बल पहुँचाती है।

वृक्क शूल

जिसे आप लोग अपनी भाषा में दर्द गुर्दा कहते हैं, वैद्यक भाषा में उसी रोग का नाम वृक्क शूल है। यह बड़ा ही कष्टप्रद रोग है, और अधिकतर लोग इससे पीड़ित दृष्टिगोचर हो रहे हैं। अतः यहां इस रोग के कारण, निदान आदि बतला कर वृक्क शूल पर चमत्कारी प्रभाव दिखाने वाले सन्यासी प्रयोग भेंट किए जाते हैं। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह पाठकों को इनसे लाभान्वित करे।

वृक्क शूल के कारण

प्रायः बर्फ का पानी, ठंडाई अथवा चावल आदि शीतल वस्तुओं के अधिक सेवन करने से वृक्को में खिचा-वट उत्पन्न होकर पीड़ा होने लगती है।

वृक्कशूल के लक्षण

इस रोग में वृक्कों से पीड़ा उठ कर टीसें पीठ मे अथवा अंडकोषों में निकलती हैं। बार-बार मूत्र की इच्छा होती है, परन्तु मूत्र बूंद २ करके आता है। यदि मूत्र का कारण पथरी होती है, तो साथ में रक्त भी आता है। कई बार वृक्कशूल मे रोगी का उल्टी भी आया करती हैं। कोलज अर्थात् मलावरोधोद्भव अन्तड़ीपीड़ा तथा वृक्क शूल प्रत्यक्षतः मिलते जुलते रोग हैं, किन्तु हम आपको आयुर्वेद की एक ऐसी अनुभूत और उत्तम विधि बताते हैं, जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति वास्तविक रोग को भली प्रकार पहिचान सकता है।

कोलज तथा वृक्कशूल की पहिचान

जब आपको यह जानने की आवश्यकता पड़े कि अमुक रोगी को वृक्क शूल है अथवा कोलंज ? तो निम्न विधि प्रयोग करें।

विधि---६ तोला इमली को पानी में उबालें तथा १ माशा सनाय पिसी हुई ऊपर छिड़क कर रोगी को

पिलावें। यदि कोलंज की पीड़ा होगी, तो इससे एक दो दस्त होकर तुरन्त पीड़ा घट जायगी। और वृक्कशूल होगा, तो पोड़ा मे तनिक भी अभाव न होगा। अब हम आपको वृक्क शूल के उत्तमोत्तम सन्यासियाना चुटकुले तथा प्रयोग बताते है, जो कि आवश्यकता के समय अचूक राम बाण सिद्ध होते हैं। जो सज्जन इन्हें अनुभव करेंगे, वे इनके गुण देखकर आयुर्वेदिक व एलोपैथिक चिकित्सा को भूल जायेंगे।

विशेष सूचना

यह सम्भव नहीं कि हर समय हर व्यक्ति पर ये सन्यासी चुटकुले सफल ही हों, अतः यदि आप एक सफल चिकित्सक, बनना चाहते हैं, तो 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' तथा 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' नामक हमारे दो अनमोल चिकित्सा ग्रन्थ आपके पास होने अत्यावश्यक हैं। इन पुस्तकों में आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के उत्त-मोत्तम योग संग्रहीत किए गए हैं। घर २ में इन पुस्तकों का होना भी परमावश्यक है।

प्रथम सन्यासी चुटकुला

जगली कबूतर की श्वेत बीटें चुनकर बारीक पीस लें और १ माशा को पुड़िया गर्म पानी के साथ रोगी को खिला दें। प्रायः एक ही मात्रा से वृक्क शूल नितान्त

मिट जाता है। यदि एक मात्रा से पर्याप्त लाभ न हो, तो घंटे भर पश्चात् पुनः एक पुड़िया दें, ईश्वर कृपा से निश्चय ही लाभ हो जायगा। इस प्रयोग की स्वयं मैंने भी परीक्षा की है और अद्भुत लाभकारी पाया है।

सुगम लटका

प्रतिदिन मूली का १० तोला ताजा रस निकाल कर उसमें उत्तम बीकानेरी मिश्री मिलाकर रोगी को प्रतिदिन निराहार मुख पिलाएं। एक दो दिन में ही वृक्कों की पीड़ा शांत हो जायेगी। यह चुटकुला न केवल वृक्कशूल, अपितु दर्द मसाना व रेत पथरी आदि रोगों के लिए भी परम लाभप्रद सिद्ध हुआ है

पथरी

वृक्कों अथवा मूत्राशय में रेत या पथरी का उत्पन्न हो जाना एक अति कष्टदायक रोग है। इस की पीड़ा रोगी के लिए असह्य हो जाती है। जब पथरी मूत्राशय में चुभती, है तो रोगी पीड़ा के मारे लोटपोट हो जाता है। प्रारम्भ में पथरी मूंग या चने के बराबर होती है, किन्तु जब यह वृक्कों से निकल कर मूत्राशय में आ जाती है, तो उस पर मूत्र के गाढ़े द्रव्य की तहें जमकर उसे पथरी बना देती है।

पथरी वृक्कों में है या मूत्राशय में ?

अब आपने यह तो समझ ही लिया कि पथरी का स्थान वृक्क तथा मूत्राशय हैं। किन्तु यह जानने के लिए कि पथरी वृक्को में है अथवा मूत्राशय मे, अभी कुछ और लिखने की आवश्यकता है। अस्तु इसके पृथक २ चिन्ह लिखे जाते हैं, ताकि चिकित्सक को परीक्षा करने में कठिनाई न हो। हर चिकित्सक का प्रथम कर्त्तव्य है कि पहले रोग का सही २ निदान करे, तदुपरान्त चिकित्सा प्रारम्भ करे। आरोग्यता प्रदान करना न करना तो दैवेच्छा पर निर्भर है।

वृक्कों की पथरी के लक्षण

यदि रेत या पथरी वृक्कों में होगी तो रोगी की कमर में हल्की २ पीडा रहती है, जिसकी टीसें अण्डकोष, जघा तथा कभी २ सुपारी तक जाती है। तनिक सी भाग दौड़ करने या ऊंट की सवारी करने से पीड़ा बढ़ जाती है। बार २ रक्त मिश्रतसा मूत्र आता है अथवा मूत्र त्याग के पश्चात् थोडा सा रक्त आता है। कोष्ठबद्धता की अवस्था में रोगी को वमन भी होने लगती है।

जब दोनों वृक्को में बडी बडी पथरियाँ उत्पन्न हो जाएं तो वृक्क मूत्र त्याग करने से विवश हो जाते हैं अतः मूत्र बन्द होकर रोगी परलोक गामी हो जाता है।

मूत्राशय की पथरी के लक्षण

जब पथरी मूत्राशय में होती है, तो रोगी के पेड़ तथा सीवन के निकट घोर पीड़ा और खुजली सी रहती है। बार २ मूत्र त्याग की इच्छा होती है, किन्तु मूत्र बड़े कष्ट से आता है। कभी २ मूत्र त्याग करते हुए अनिच्छा पूर्वक टट्टी निकल जाती है और मूत्र त्याग कर लेने के पश्चात् भी लघुशंका की इच्छा बनी रहती है। मूत्र गाढ़ा हो जाता है और चलने फिरने से पीड़ा बढ़ जाती है।

निदान की उत्तम विधि

सन्ध्या समय किसी कांच या चीनी के पात्र में रोगी से मूत्र त्याग कराए और पात्र को ढक कर रखदें। प्रातःकाल देखें कि रेत या कण किस रंग के हैं। यदि लाल रंग के दृष्टिगोचर हों, तो समझ लीजिए कि पथरी गुर्दों में है, और यदि कण श्वेत रंग के हों, तो पथरी मूत्राशय में समझना चाहिए। यह इस रोग के निदान के लिए चिकित्सकों की सर्वोत्तम विधि है।

पेशाब जारी करने की उत्तम विधि

यदि मूत्राशय में पथरी रुक जाय, और इस कारण मूत्र न आता हो, तथा रोगी घोर कष्ट पा रहा हो, तो उसे

चित्त लिटा कर दोनों पांव ऊपर को उठाए, और पेडू की हड्डी पर गरम २ पानी डालें तथा नीचे से ऊपर को मलें। ईश्वर कृपा से इस विधि से थोड़ी देर में ही खुल कर पेशाब आजाएगा, और रोगी का कष्ट निवारण हो जाएगा।

पथरी की चिकित्सा

डाक्टरों के पास पथरी का सिवा ऑपरेशन के अन्य कोई उपाय नहीं। हां आयुर्वेदिक व यूनानी चिकित्सा में ऐसे २ योग विद्यमान हैं, जोकि पथरी को औषधियों द्वारा रेत बना कर मूत्र मार्ग से निकाल देते हैं। उत्तमोत्तम योग 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' के द्वितीय भाग में प्रकाशित किये जा चुके हैं। इस पुस्तक के अनुकूल हमें इस रोग के लिए केवल एक ही सन्यासी प्रयोग प्राप्त हो सका है जो कि शाही सचिका से उद्धृत करके पाठकों की भेंट किया जा रहा है।

सन्यासियाना प्रयोग

* यह वृक्कशूल तथा पथरी दोनों के लिए अक्सीर है :—पावभर कलमी शोरा किसी बड़ी सी लोहे की कड़छी में डाल कर दहकते हुए कोयलों की आंच पर रखदें। जब शोरा पिघल जाय, तो एक मिलावा डाल कर शोरे को पुख्ता करें, यहां तक कि एक के बाद एक ८ मिलावे जल जावें। शोरा स्याई हो जायगा। सेवन विधि यह है

कि पहिले १ रत्ती अफीम मिला कर एक माशा शोरा पानी में घोल कर पिलावे और रोगी को गरम पानी में पिलावें, शीघ्र गिनती के दिनों में आराम हो जायगा।

दो उपयोगी बाते

१—कई लोगों को कोमल हड्डियाँ, कच्चे चावल, छालिया आदि चबाने की आदत होती है, जो कि बड़ी हानि-कर है। प्रायः इन वस्तुओं से ही पथरी पड जाती है।

२—कई स्त्रिया को चिकनी मिट्टी, कोयले, मुलतानी मिट्टी, ठेकरी आदि खाने की आदत होती है। इनसे भी प्रायः स्त्रियां के भी पथरी पड जाती है।

मूत्रकृच्छ्र (सुजाक)

इस साघातिक रोग के नाम से आप सभी भली भाँति परिचित होंगे। क्योंकि इस रोग की वेदना इतनी कष्टप्रद और असह्य होती है कि कई बार तो इसके रोगी पीड़ा से बचने के लिए आत्मघात तक करने पर उतारू हो जाते हैं। सचमुच ही मूत्रकृच्छ्र का रोगी मूत्रत्याग के समय जो असह्य वेदना सहन करता है, वह प्राणांत काल की वेदना से कम नहीं होती और प्राणांत काल की वेदना तो मनुष्य एक बार ही सह कर सदा के लिए उससे मुक्त हो जाता है, किन्तु मूत्रकृच्छ्र के रोगी को दिन में कई २ बार वैसी ही वेदनाएं सहनी पडती हैं, और कई दिनों तक उसकी

ऐसी दयनीय अवस्था रहती है, जिसका अनुमान करना भी कठिन है। भाई इसकी पीडा तो वही भली भांति समझ सकता है, जो कि कभी इस रोग में ग्रस्त रह कर सहन कर चुका हो। इतना ही नहीं, वरन् यौवन की उमगें और तरुणावस्था की तरगें सभी नष्ट हो जाती हैं। पुंमत्व-शक्ति साथ छोड़ जाती है और प्रमेह, शीघ्रपतन जैसे सन्तति घातक रोग पीछे लग जाते हैं और जो भी रोग एक बार गले पड़ जाता है वह भली भांति जड़ें जमा लेता है और जब तक कि मूत्रकृच्छ्र रोग समूल नष्ट न हो जाए, ये रोग कभी पीछा नहीं छोडते। कहने का अभिप्राय यह है कि इस रोग का रोगी अनेक रोगों का घर बन जाता है और अपने स्वास्थ्य को सदा के लिए गंवा बैठता है।

मूत्रकृच्छ्र के मूल कारण

प्रायः यह रोग वेश्याओं से प्रसंग करने से होता है अथवा गर्भाशय स्राव की रोगिणी ऋतुमती स्त्रीसे भी संभोग करने से हो सकता है। कभी २ अधिक मद्युपान व मांसादि उष्ण पदार्थों के अधिक सेवन से भी हो जाता है। हस्त-मैथुन तो इसका प्रमुखतम कारण है। जो विलासी मनुष्य इनके भयंकर कुपरिणाम को नहीं जानते, वे अपनी पति-व्रता पत्नियों पर भी यह भद्दा धब्बा लगाये बिना नहीं

रहते। और 'हमतो डूबे हैं सनम तुम को भी ले डूबेंगे' उक्ति के अनुसार सचमुच ही अपने साथ उनके जीवन को भी नीरस बना देते हैं। आधुनिक चिकित्सकों के मतानुसार इस रोग का कारण एक कीटाणु होता है, जो कि अणुवीक्षण यन्त्र द्वारा दृष्टि गोचर होता है, जिसको गोनोकाक्स नाम से प्रसिद्ध किया जाता है। यह कीटाणु रोगी की पीप मे होता है। कभी २ यह रक्त में समाविष्ट होकर रक्त को गन्दा तथा विषैला कर देता है। जिसके कारण मूत्रकृच्छ के रोगियों को फोड़े फुन्सी गठिया आदि रोग लग जाते है। ऐसी अवस्था को मूत्रकृच्छ कीटाणु प्रभाव या गोनोकाक्स इन्फेक्शन कहते हैं।

मूत्रकृच्छ् के लक्षण

सम्भोग के पश्चात् उसी समय, अथवा दूसरे, तीसरे, पाँचवें, सातवें दिन मूत्र नली का छेद कुछ लाल व सूजा हुआ प्रतीत होता है, जिसमें जलन तथा खुजली पाई जाती है। और फिर कुछ नीलिमा युक्त पीप सी निकलने लगती है। कुछ दिन ऐसी स्थिति रहती है तदुपरान्त पीड़ा व जलन बढ़ जाती है और पीप गाढ़ी हो जाती है। जनेन्द्रिय बहुत ही सूज जाती है, अपितु कभी २ तो शोथ इतना बढ़ जाता है कि मूत्र भी बन्द हो जाता है, अथवा रक्त आने लगता है। लगभग दो तीन सप्ताह तक

यही अवस्था रह कर फिर कुछ घटी हुई प्रतीत होती है और यदि विधिवत् चिकित्सा की जाए तो ठीक हो जाता है, अन्यथा क्रुरी बन जाता है, इसका प्रतिकार बड़ा ही कठिन है।

मूत्रकृच्छ्र की चिकित्सा

अधिकांश चिकित्सकों का मत है कि मूत्रकृच्छ्र एक बहुत ही दुस्साध्य रोग है, और हर व्यक्ति के लिए इसकी चिकित्सा कर सकना असम्भव है। कभी २ तो बड़े २ उत्तम योग भी असफल होते देखे गए हैं। इसका मूल कारण यह है कि भिन्न २ प्रकार के मनुष्यों के मूत्रकृच्छ्र रोगों के अन्शों के विचार से चिकित्सा भी भिन्न २ ही होनी चाहिए अर्थात् रोग की प्रारम्भिक अवस्था में चिकित्सा कुछ और होनी चाहिए, मध्यकाल में कुछ और तथा घाव हो जाने पर भिन्न चिकित्सा की आवश्यकता होती है। 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में चिकित्सा के इसी सिद्धांत के आधार पर योगों के साथ साथ यह भी बताया गया है कि कौन सा योग किस अवस्था में लाभदायक होता है। इस रोग की चिकित्सा का दूसरा स्मरणीय सिद्धान्त यह है कि यदि घाव लिंग-मूल (इन्द्रिय की जड़) में हो, तो खाद्य औषधि लाभदायक होती है, और यदि लिंग-मुंड में घाव हो, तो केवल पिचकारी अधिक लाभदायक सिद्ध

होती है, किन्तु इन्द्रिय के मध्य में घाव होने पर खाद्य औषधि व पिचकारी दोनों का उपयोग आवश्यक होता है। ये तो रहे आयुर्वेदिक व डाक्टरी चिकित्सकों के सिद्धांत। किन्तु नीचे हम आपको जो सन्यासी प्रयोग भेंट कर रहे हैं, वे इस रोग को हर दशा से जड़ से मिटाकर रख देते हैं। हां इतना अवश्य निवेदन करूंगा कि यदि दुर्भाग्यवश किसी महाशय को इनसे पूरा २ लाभ न पहुंचे तो वे उपरोक्त पुस्तक से सहायता लेकर आयुर्वेद के उत्तमोत्तम योग भी अनुभव में लाएं। ईश्वर कृपा से उन्हें भी स्वास्थ्य लाभ होगा। प्रथम तो ये सन्यासी प्रयोग ही ऐसे अचूक रामबाण सिद्ध होते हैं कि कभी निष्फल नहीं जाते। यदि इन प्रयोगों को अनुभव करने के पूर्व इन्द्रिय-रेचन ले लिया जाय, तो अति शीघ्र प्रभाव होता है, और रोग निर्मूल हो जाता है।

गुप्त सन्यासी प्रयोग

हमारे यहां के एक टण्डन जी बड़े ही धनाढ्य पुरुष थे उनके पौत्र साहब के साथ हमारा घनिष्ट मैत्री सम्बन्ध है। उन्हीं मित्र महोदय की अनुकम्पा से यह प्रयोग मुझे प्राप्त हुआ है। मै आशा करता हूं कि मेरे सुहृदय मित्र राधेनाथ जी टण्डन इस बात का बुरा न मानेंगे, यदि मै अपने पाठकों को यह स्पष्ट बता दूं कि टण्डन जी बड़े

विलासी प्रकृति के थे, जैसे कि प्रायः धनाढ्य व्यक्ति विलासी तो हुआ करते हैं। एक बार वेश्या प्रसंग के कारण उन्हें मूत्रकृच्छ्र रोग हो गया। अन्यान्य पारिवारिक सदस्यों की लज्जा के कारण वे तो किसी को बता ही न सके, और जब व्यथा बढ़ती हो गई तो वे वहां ठहर भी न सके, और भ्रमण का बहाना करके शिमला पहुंचे। वहां उनका अपना निजी बंगला था। वहां जाकर उन्होंने डाक्टर बुलाए, और चिकित्सा प्रारम्भ कराई। चूंकि रोग आरम्भ हुए कई दिन हो चुके थे, अतः औषधियां तो लाभ करते ही करते करेंगी। औषधियाँ कोई जादू तो होती ही नहीं कि तत्काल पीड़ा दूर करदें। संयोग वश उसी समय एक महात्मा जी उन की कोठी पर पधारे। टण्डन जी असह्य वेदना से छटपटा रहे थ। महात्माजी को उनकी यह दशा देखकर तरस आ गया और उन्होंने उन्हें यह प्रयोग सेवन करने को कहा। ईश्वर की ऐसी कृपा कि दूसरे दिन ही टण्डन जी को पर्याप्त आराम प्रतीत हुआ। तब तो उन्होंने डाक्टरी चिकित्सा बिल्कुल ही बन्द कर दी और निरन्तर इसे ही सेवन करते रहे। ३ दिन में रोग जड़ से चला गया। तब टण्डन जी ने आकर कुछ लोगों कयह प्रयोग बताय और कहा कि महात्मा जी के कथनानुसार कठिन से कठिन और पुराना मूत्रकृच्छ्र भी ७ दिन

में ही निर्मल हो जाएगा। वही प्रयोग आज इस पुस्तक के पाठकों को भेंट किया जा रहा है।

प्रयोग इस प्रकार है :—

१ छटाक हरी नीम की छाल को मिट्टी की कोरी हाँडी में २॥ सेर जल में डालकर पकाओ और जब नितान्त कोमल हो जावे तथा पानी भी सूखने के निकट हो, तो बारीक पिसे हुए १० तोला कलमी शोरे की चुटकी देते जायें व नीम की लकड़ी से उसे हिलाते जावें। जब सारी छाल जलकर काली पड़ जावे और शोरा भी समाप्त होकर राख हो जावे तो आग पर से उतार कर कपड़ छान कर लें। बस दो रत्ती, मात्रा नित्य प्रातःकाल दूध की लस्सी के साथ सेवन करायें। हर प्रकार के मूत्रकृच्छ्र के लिए अचूक रामबाण है।

एक सुगम प्रयोग

देखने में यह प्रयोग जितना ही साधारण है, गुणों में उतना ही बढ़ चढ़कर है। जब चाहें, परीक्षा कर देखें।

फालसे की जड़ की छाल १ तोला रात को पानी में भिगो कर रख दें और प्रातःकाल के समय मल छानकर व मिश्री मिला कर प्रति दिन रोगी को पिलाया करें। ईश्वर कृपा से सप्ताह मात्र में रोग मुक्त करके आपको आश्चर्य चकित कर देगा।

अन्यान्य सुगम चुटकुले

५ तोला अथवा यदि प्राप्त हो सके, तो १० तोला केले का जल मिट्टी के कोरे कूजे में डाल कर रात भर बाहर लटका रखे, और सवेरे पहिले ? माशा कलमी शोरा खिला कर ऊपर से केले का जल पिलावें। इसी प्रकार निरन्तर ७ दिन के सेवन करने से ६९ प्रकार का मूत्रकृच्छ्र निश्चय ही दूर हो जायगा।

द्वितीय चुटकुला

६ माशा हजार दानी बूटी, २ तोला चोबचीनी और १॥ पाव मिश्री सबको बारीक पीस कर सात पुड़िया बनालें और नित्य प्रति १ पुड़िया प्रातःकाल के समय आध सेर पानी में घोल कर पिलाया करें। प्रभु कृपा से कठिन से कठिन मूत्रकृच्छ्र भी ३ ही दिन में घट कर एक सप्ताह के अन्दर २ निर्मूल हो जाएगा। यह प्रयोग किसी सन्यासी ने हमारे एक मित्र वैद्य को प्रदान किया था। उनका कहना है कि मने योग को अब तक लगभग पचास रोगियों पर अनुभव किया है आज तक भी असफल नहीं हुआ।

अन्तिम प्रयोग

श्वेत चन्दन १ तोला, धनिया १ तो० और गुलाब

पुष्प १ तो०, आवश्यकतानुसार मिश्री मिला कर घोट छानलो और प्रातः सायं रोगी को प्रतिदिन पिलाया करें। मूत्र की जलन और पीड़ा रोकने के लिए अत्युत्तम औषधि है।

विशेष सूचना

'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' पुस्तक में भी ऐसे २ रामबाण योग अंकित हैं, जो कि बिना पैसों के बनकर सैकड़ों रुपये के योगों से बढ़कर लाभदायक सिद्ध होते हैं। जिन्होंने उसे पढ़ा है, वह इस बात को जानते हैं

बवासीर (अर्श)

भारत में आजकल अधिकता से फैलने वाले कष्ट साध्य रोगों में से एक बवासीर भी है। वैसे बवासीर 'बासुरा' का बहुवचन है, और बासुरा का शब्दार्थ है 'मांस की वृद्धि'। किन्तु चिकित्सकों की भाषा में बवासीर उन मस्सों को कहते हैं, जो कि गुदा पर और उसके चारों ओर उत्पन्न हो जाया करते हैं और एक कष्टप्रद रोग का रूप धारण कर लेते हैं।

बवासीर के भेद

यद्यपि प्राचीन चिकित्सकों ने बवासीर के कई भेद बताए हैं, किन्तु बवासीर दो प्रकार की ही मुख्य है। एक तो वह है, जिसमें रक्त तथा पीले रंग का पानी विष्ठा के

मार्ग से मस्सों में से निकलता रहे, इसे खूनी बवासीर कहते अथवा रक्तार्श कहते हैं। किन्तु दूसरे प्रकार की बवासीर मे रक्त आदि कुछ नही निकलता, वरन् गुदा पर खुजली होती रहती है, इसको बवासीर बादी अथवा वातार्श कहते हैं। हम आपको इन दोनों प्रकार की बवासीर के पृथक् २ लक्षण बताते हैं।

रक्तार्श यानी खूनी बवासीर के लक्षण

इसमें प्रायः अजीर्ण तथा कोष्टबद्धता की शिकायत रहती है। टट्टी जाने पर बड़े कष्ट के साथ थोड़ी २ टट्टी आती है। रक्त कभी तो टट्टी के साथ मिलकर आता है, और कभी बूंद २ करके टपकने लगता है। रक्त की मात्रा रोगी की भिन्न २ प्रकृति के अनुसार न्यूनाधिक हुआ करती है। अर्थात् किसी को कुछ बूंद आती है, तो किसी किसी को कुछ तोले अपितु कभी २ पाव भर से लगाकर सेर भर तक रुधिर निकल जाता है। यदि रोग पुराना हो जाता है, तो बैठे हुए अथवा मूत्र त्याग करते हुए भी रक्त निकल जाता है। साथ ही मस्सों में बड़ी तीव्र वेदना होती है और गुदा में सूजन भी उत्पन्न हो जाती है।

वातार्श के लक्षण

इसमें मस्सों से रक्त तो नही निकलता, किन्तु इसकी पीड़ा रक्तार्श से कम नही होती। पेट में वात फिरती

रहती है, और दुस्साध्य कोष्ठबद्धता हो जाती है। शरीर सदैव टूटता रहता है, और कमर तथा जंघा में पीडा रहती है। पाचनशक्ति खराब हो जाती है, तथा भूख घट जाती है और रोगी के मुख तथा शरीर की रंगत फीकी पड जाती है।

अब हम आपको बवासीर के अत्युत्तम सन्यासी प्रयोग भेंट करते है। इसके पूर्व हम आपको यह बता देना चाहते हैं कि बवासीर एक ऐसा दुस्साध्य रोग है, जो कि आयुर्वेद तथा यूनानी चिकित्सा की उत्तमोत्तम औषधियों से भी बहुत समय में जाता है। निस्सन्देह 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में प्रकाशित आयुर्वेदिक योग बडे लाभकारी है, किन्तु उनसे भी महीनो में जाकर पूरी २ सफलता प्राप्त होती है। अतः इस रोग के लिए सन्यासियों ने विशेप खोज बीन की थी और वे सफल भी हुए थे। उन्होने ऐसी २ उत्तम और चमत्कारी वस्तुए खोज निकाली है, जो कि गिनती के दिनो में ही बवासीर के मस्से गिराकर रोग को जड़मूल से दूर कर देती है। विशेपकर हमारे देश का हर वैद्य हकीम तथा जनसाधारण इस बात से भली भाँति परिचित है कि बवासीर के लिए 'सन्यासी धूनियां' बस अचूक रामबाण होती हैं, किन्तु विशेप खोज बीन के पश्चात् भी वे धूनियां लोगो को प्राप्त

नहीं हो पाती थी। हम इस पुस्तक के पाठकों को इस रोग के विशेषाति विशेष गुप्त सन्यासी प्रयोग व सन्यासी धूनियां बताते हैं, जिनसे आवश्यकता के समय अपूर्व लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

दस दिन में अर्श को समूल नष्ट करने वाला विशेष सन्यासी प्रयोग

एक वैद्य महोदय को एक बार किसी सन्यासी ने यह योग प्रदान कर दिया था। अनुभव करने पर जब उन वैद्य महोदय ने इस प्रयोग का चमत्कारी प्रभाव देखा, तो कृपणता से भर उठे। बस योग को हृदय कोष्ठ में छुपा कर लगे चिकित्सा करने, और कुछ दिनों में ही दूर २ तक उनकी कीर्ति का झंडा लहराने लगा। लोगों ने बड़े प्रयास किए कि किसी भाँति वह योग प्राप्त हो जाय, किन्तु कृपण वैद्य महोदय के हृदय मे छुपा रहस्य निकालने में किसी को सफलता प्राप्त न हो सकी। कई वर्ष उपरांत जब कि वैद्य जी का अन्तकाल निकट आया, तो उन्होंने अपने हृदय का रहस्य अपने पुत्र को बता दिया। सौभाग्यवश उनके पुत्र बड़े उदार हृदय व्यक्ति निकले। उन्होंने इसे लोक कल्याण के लिए सहर्ष प्रकट कर दिया। वही अति सरल

किन्तु चमत्कारी प्रयोग 'सन्यासी चिकित्सा शास्त्र' के पाठकों को अर्पण किया जा रहा है।

योग इस प्रकार है: —

टोटक बूटी १ तो०, गेहूँ के दाने १०, रात को पाव भर जल में भिगो कर और भोर सवेरे आवश्यकतानुसार मिश्री मिला कर घोंट छान लें, और रोगी को पिलाया करें। भगवतानुकम्पा से दस दिन के सेवन मात्र से हर प्रकार की बवासीर को नितान्त आराम हो जायगा। विशेष गुण तो परीक्षा करने पर ही विदित हो सकेंगे।

अपूर्व सन्यासियाना तैल

२० नग काले बिच्छू, जो अभी मरे हों, सेर भर मीठे तेल में जलाकर रखें। यह तेल मस्सों पर लगाते रहने से कुछ ही दिनों में मस्से शान्त हो जाते हैं। मूत्राशय की पथरी के लिए अहलील के भीतर तीन बूंद टपकाने से पथरी खण्ड २ होकर टूट जाती है। अद्भुत प्रभाव कारक प्रयोग है। परीक्षा कर देखें।

विशेष सन्यासियाना धूनी

सर्प की काली केंचुली, कुचला, हरताल वरकिया, खार पुश्त का चर्म प्रत्येक १-१ तोला, गूगल भैंसिया २ तोला, सबको भली भांति कूटकर जंगली बेर के समान

गोलियां बनावें। और आवश्यकता के समय एक छेद युक्त चौकी के ऊपर बैठ कर प्रसिद्ध विधि से धूनी लिया करें। ईश्वर कृपा से कुछ दिन में ही मस्से नष्ट हो जायेंगे।

धूनी का दूसरा प्रयोग

यह धूनी भी अर्श के लिए अत्यधिक फलप्रद सिद्ध होती है। यद्यपि साधारण सा योग है, तथापि बड़ा ही गुण कारक है।

प्रयोग इस प्रकार है :—

भंग के पत्ते, कबूतर की बीट ५-५ तोला लेकर बारीक पीस लें और मिलाकर समान मात्रा की सात पुड़ियां बनालें। तथा प्रति दिन एक पुड़िया आग पर झाड़ कर प्रचलित विधि से धूनी लें। ईश्वर कृपा से सात दिन में समस्त मस्से झड़कर अर्श रोग शांत हो जाएगा। यह कई बार का परीक्षित प्रयोग है।

एक दिन में बवासीर को दूर करने वाला आश्चर्यजनक सन्यासी योग

एक बार मेरे परम मित्र डाक्टर इन्द्रप्रसाद जी जगा-धरी वालों के चिकित्सालय में एक यकृत शोथ से पीड़ित सन्यासी चिकित्सा कराने आए। डाक्टर साहब ने उन्हें कुछ दिनों में ही ठीक कर दिया। तब प्रसन्न होकर पुर-

स्कार स्वरूप उन्होने यह आश्चर्यजनक विशेषाति विशेष गुप्त योग उन्हे प्रदान किया था।

योग इस प्रकार है :—

बघेरे पशु के यकृत का रुधिर लेकर सुखालें। और उसमे से १ रत्ती मात्रा कोयलों पर डाल कर मस्सों को धूनी द। यदि ईश्वर की कृपा हुई तो एक बार मे ही मस्से झड़कर स्वास्थ्यलाभ हो जायेगा। भला सोचिए तो सही कि कैसा चमत्कारी प्रयोग है।

अनुभूत सन्यासी प्रयोग

ॐ पवाड की जड़ और कण्टकारी की जड समान परिमाण मे लेकर चूर्ण बनालें और प्रति दिन प्रातः सायं ३-३ माशा की मात्रा दही के साथ दिया करें। यह योग कई रोगियों पर परीक्षित है और असीम लाभकारी है। अति शीघ्र हर प्रकार की बवासीर को दूर कर देता है।

अन्य चुटकुला

यह चुटकुला भी सन्यासियो का विशेष रहस्य है, जो कि बवासोर के मस्सों के लिए अतीव लाभदायक है।

मनुष्य की हड्डी तथा कोड़ी दोनों को समभाग लेकर जलालें और बारीक पीस लें। थोड़ा सा पानी मिला कर मस्सों पर लेप किया करें। शीघ्र ही मस्से झड़ जायेंगे।

अति सुगम सन्यासी प्रयोग

कुछ वस्तुएं देखने मे तो निष्प्रयोजन सी प्रतीत होती है, किन्तु यथार्थतः उनमें अद्वितीय गुण भरे हुए हैं। यह अति सरल सन्यासी चुटकुला हमारे एक मित्र वैद्य जी किसी विशेष नाम से अपने रोगियों को सेवन करा रहे है। और वे इससे नितान्त रोग मुक्त हो जाते हैं, तथापि यदि योग का रहस्य उन पर प्रकट हो जाय तो सम्भवतः वे मन ही मन गालिया दें। अतः हम अपने प्रिय पाठकों और विशेषकर चिकित्सकों को भी यही राय देते हैं कि इस प्रयोग को रोगी पर प्रकट न होने दें, अपितु औषधि की भाँति बनाकर सुन्दर शीशीयों में रख छोड़ें और फिर देखें कि यह प्रयोग कितना गुणप्रद सिद्ध होता है।

६ **प्रयोग**--आवश्यकतानुसार उपले लेकर जलालें और उनकी राख को कपड़े से छान कर शीशी में रखलें। आवश्यकता के समय रोगी को ६ माशा मात्रा बासी पानी के साथ सेवन कराया करें। यह प्रयोग न केवल बवासीर अपितु रक्त दोष, कण्डू, तथा कोष्ठबद्धता के लिए भी अक्सीर है।

अर्शनाशक सन्यासी चूर्ण

यह योग भी एक सन्यासी ने प्रदान किया था।

इसके निरन्तर दो सप्ताह के सेवन से बवासीर चाहे किसी प्रकार की क्यों न हो, नितान्त दूर हो जाती है, और फिर जीवन भर यह रोग कभी नही होता।

८ प्रयोग इस प्रकार है :—

कचूर एक प्रसिद्ध वस्तु है, इसे लेकर बारीक पीसलें और इसमें से ६ माशा मात्रा प्रतिदिन प्रातः सायं पानी के साथ निगल जाया करें। ईश्वर कृपा से आपको किसी वैद्य हकीम अथवा डाक्टर के पास नही जाना पड़ेगा। दो सप्ताह के भीतर ही भीतर आप बवासीर से मुक्त हो जायगे। किन्तु औषधि का निरन्तर सेवन परम आवश्यक है।

सन्यासी वटी

ये गोलियाँ बादी बवासीर के लिए अति लाभकारी हैं। यदि आप वैद्यो और हकीमों की चिकित्सा कराते कराते तग आ गए हों, जरा इस सन्यासी वटी का भी सेवन कर देखें। ईश्वर कृपा से जो लाभ महीनों और सप्ताहों की चिकित्सा में भी उपलब्ध न हुआ था, इन गोलियो से गिनती के दिनो मे ही दृष्टिगोचर होने लगेगा। इसके अतिरिक्त रक्तार्श के लिए भी लाभप्रद हैं, किन्तु वातार्श पर तो जादू सा प्रभाव दिखाती हैं।

योग इस प्रकार है —

कुकरौंदा बूटी, जिसे कुछ लोग कुक्कड़छिड़ी के नाम से भी सम्बोधित करते हैं, खूब हरी भरी लेकर खरल में डाल कर कूटें और मलमल के स्वच्छ वस्त्र में दबा कर रस प्राप्त करलें। कम से कम १ सेर रस निकाल कर उसे कलईदार देगची में डालकर चूल्हे पर रखें और नीचे मन्द २ आग जलाते रहें। जब द्रव्य गाढ़ा हो जाय, तो उसमें ४ माशा काली मिर्च बारीक पीस कर मिलादें और नीचे उतार कर जंगली बेर के बराबर गोलियां बना लें। और १-१ गोली नित्य प्रातः सायं बासी जल के साथ सेवन करते रहें। ईश्वर की कृपा चाहिए, निश्चय ही लाभ हो जायेगा।

एक साधु का गुप्त योग

पंजाब प्रान्त में एक साधू बवासीर की चिकित्सा के लिए बहुत प्रसिद्ध था। उसकी दवा ऐसी अक्सीर थी कि एक ही दिन में बवासीर का नाम तक नहीं रहता था। वह अपनी ओर से योगको छुपाए रखने का भरसक प्रयास करता था, किन्तु दैव संयोग वश हमारे एक परिचित वैद्य जी को उसका भेद प्राप्त हो गया। जोकि आज इस पुस्तक के पाठकों को बता देना भी मैंने अनिवार्य समझा।

योग इस प्रकार है :—

एक खटमल पकड़ कर केले की फली के मध्य बन्द कर दें और वही फली रोगी को खिला दें। किंतु उसे यह भेद ज्ञात न होने पाए। तब एक दिन में ही रोग मिट जायगा। दुर्भाग्यवश यह रोग मेरा परीक्षित तो नहीं है, किन्तु इसकी प्रशंसा अनेक व्यक्तियोंके मुखसे सुन चुका हूँ।

चमत्कारी बूटी

मुण्डी बूटी की घुंडियां ७ नग लगभग १५ तोले पानी में घोट छान कर नित्य प्रातः रोगी को पिलाया करें। कुछ ही दिनों में रक्तार्श निर्मूल हो जायगा और खून आना तो प्रथम दिवस ही रुक जाता है।

फकीरी चुटकुला

इस चुटकुले के प्राप्त होने की कहानी भी बड़ी विचित्र है, जोकि मुझे मेरे मित्र श्री गोपी नाथ जी 'घायल' (यह उनका तखल्लुस है) ने एक बार सुनाई थी। उनके गांव के एक वृद्ध महाशय कई वर्ष से बवासीर में ग्रस्त थे और घोर पीड़ा उठा रहे थे। अकस्मात् एक साधु उनके द्वार पर आ गया। उन्होंने अपना कष्ट महात्मा जी को भी सुनाया। महात्मा जी पहिले तो शांत भाव से सुनते रहे, अचानक उनकी दृष्टि चारपाई के दूसरी ओर रक्खे हुक्के पर जा

पडी क्योंकि वे वृद्ध महाशय हुक्का पिया करते थे। बस फिर क्या था ? महात्मा जी को तत्काल ही योग ध्यान में आ गया, और वे उसे बता कर चले गए। ईश्वर कृपा से रोगी ने महात्माजी के कथानुसार तलाश करके सेवन किया तो प्रभु की ऐसी कृपा हुई कि वर्षों पुराना रोग केवल तीन दिन में ही दूर हो गया। गाव वाले भी यह देखकर चकित हो गए और साधुओं का बडा आदर करने लगे।

यह योग इस प्रकार का था :—

एक ऐसा हुक्का तलाश करें जिसमें कि चरस पिया जाता हो। उसकी नय के भीतरी भाग से मैल निकाल कर सुरक्षित रख लें, और उसमें से १ ग्रेन अर्थात् आधी रत्ती परिमाण की मात्रा प्रतिदिन पानी के साथ निगल जाया करें। ३ दिन में कठिन से कठिन और पुराने से पुराना अर्श भी जाता रहेगा।

विशेष सूचना

चरस के हुक्के प्रायः साधु सन्यासियों के ही पास हुआ करते हैं, क्योंकि अधिकांश सन्यासी चरस अवश्य पिया करते हैं अतः उन में ही तलाश करें। उक्त रोगी महाशय ने भी गांव के बाहर एक मन्दिर में रहने वाले साधु से ही प्राप्त किया था।

तुच्छ वस्तु के गुण

हम पहिले भी निवेदन कर चुके हैं कि तुच्छ से तुच्छ वस्तु को भी निरर्थक समझना भारी मूर्खता है। यह ईश्वर की लीला है कि ऐसी तुच्छ वस्तु में भी ऐसे गुण भर दिए हैं, जो कि बहुमूल्य औषधियों में भी नहीं पाए जाते और इस दशा मे सन्यासियों के अन्वेषण निस्सन्देह सराहनीय हैं। नीचे हम आपको एक ऐसी वस्तु का सन्यासी प्रयोग भेंट कर रहे हैं, जिसे आप निरर्थक समझ कर फेंक दिया करते हैं और वह हमारे देश के गाँव २ में जितनी चाहें, प्राप्त होती है। इसका चमत्कारी लाभ तो अनुभव करने पर ही ज्ञात होता है।

प्रयोग इस प्रकार है—

इमली की छाल को पानी मे पीस कर चने के बराबर गोलियां बनालें और ३ गोलियां नित्यप्रति पानी के साथ रोगी को सेवन कराएं। ईश्वर कृपा से बिना एक भी पैसा व्यय किए रोगी स्वस्थ व रोग मुक्त हो जायगा।

सन्यासियाना अक्सीरी क्षार

ऊंट की मींगनी, जिन्हें लेंडे भी कहते हैं, लगभग २ सेर ऐसे लें जो कि वर्षा से भीगे न हों, और उनको कूट कर ४ सेर पानी में भिगो दें तथा निरन्तर ८ दिन तक भीगा रखें। फिर उनका स्वरस ले

कर पानी निथार कर छान लें और कड़ाई में डालें तथा उसमें शीशा, नमक व नोशादर प्रत्येक ६-६ माशे मिलाकर आग पर चढ़ाएं और प्रसिद्ध विधि से क्षार बनालें। बस अक्सीर तैयार है। नित्य प्रातः साय शौचादि से निवृत हो कर थोड़ा सा क्षार मस्सों पर लगा दिया करें। कुछ दिनों तक इसी प्रकार निरन्तर लगाते रहे, प्रभु कृपा से अर्श रोग मिट जायगा। बांधने की आवश्यकता नहीं है।

यदि क्षार बनाने की विधि न आती हो, तो 'देहाती अनुभूत योग संग्रह, में देखलें। उसमें समझाकर लिखी गई है। अन्यान्य आयुर्वेदिक भस्मों की विधियां भी उक्त पुस्तक में वर्णित हैं।

स्वर्ग तुल्य काश्मीर के सन्यासी द्वारा प्रदत्त अर्श के मस्सों को जड़ से उड़ा देने वाला आश्चर्यजनक तैल

यह योग हमारे एक मित्र वैद्य श्री एस. ए. तहसील-दार साहब को काश्मीर के एक सन्यासीने प्रदान किया था जो कि परीक्षा करने पर इतना गुणप्रद सिद्ध हुआ है कि प्रशंसा नहीं की जा सकती। उक्त सज्जन ने लगभग एकसौ से ऊपर रोगियों पर इसे अनुभव किया है, और अर्श के

मस्सों को जड़ से मिटा देने में सर्वथा अकसीर पाया है। कुछेक वैद्यों को, जिन्हें यह रहस्यमय योग विदित हो चुका है, इसी योग के कारण अपूर्व यश प्राप्त हो रहा है, और वे धड़ाधड़ अपने रोगियों पर इसे प्रयोग कर रहे हैं। सम्भवतः कोई कृपण व्यक्ति तो इसे किसी प्रकार भी प्रगट नहीं करता।

योग इस प्रकार है—

१ तोला श्वेत संखिया लेकर उसमें बकरी के २१ पित्ते क्रमशः १–१ डाल कर खरल करते जावें जब सारे पित्तों का पानी शोषण हो जावे, तो उसकी गोली बना लें और एक खद्दर के कपड़े की ३–४ तहें करके उसमें गोली को रखें और ढीली सी पोटली बांध दें। फिर १ सेर गाय के घी के मध्य में लटका कर २॥ घण्टे निरन्तर मद२ आंचपर पकावें। किंतु ध्यान रहे कि घी पोटली से दो अंगुल ऊपर रहे, और यह भी स्मरण रखें कि यह क्रिया किसी कलईदार देगची अथवा रोगन-दार मृतिका पात्र मे करें, तथा आंच तेज न होने दें। बस ऐसी आँच हो कि घी कड़क जाय अन्यथा घी में आग लग जायगी। एक पहर के उपरान्त उतार कर घी को शीशी में भर लें और सुरक्षित रखें।

इसकी सेवन विधि इस प्रकार है :—

एक बार जितना राड़न हो सके, मस्सों पर लगा दिया करें। २-१ दिन मे ही मस्से मुरझा जायेंगे। यदि किसी रोगी के मस्से अन्दर हो तो वह इस घी को अंगुली पर लगा कर एक बार अन्दर लगा दें। बस एक बार का लगाना ही पर्याप्त होगा। भोजन में तीन दिन तक मीठे चावल अथवा मिठाई खाएं, नमकीन पदार्थों वायु कारक वस्तुओं से नितान्त परहेज रखें। पूर्ण अनुभूत प्रयोग है।

बवासीर की धूनी

एक मुन्शी जी ने बतलाया कि मै पहाड़ पर रहा करता था। संयोगवश वहां पास में ही एक कुटिया मे सन्यासी रहा करते थे। उनके पास एक जादू की भांति प्रभाव दिखाने वाला योग था, जिसकी दूर २ तक धूम-मची हुई थी। जब मुझे विदित हुआ तो मैंने भी उनका सत्संग करना आरम्भ किया। धीरे २ हमारे अच्छे सम्बन्ध स्थापित हो गये और मे उनका कृपा पात्र बन गया। तब एक दिन मैंने वह गुप्त योग प्रदान करने के लिए उनसे प्रार्थना की। सन्यासी जी टाल न सके और कुछ विचार करके अन्त को बता ही दिया। मै आज वही गुप्त योग अपने प्रिय पाठकों को भेंट कर रहा हूं।

प्रयोग इस प्रकार है :—

गाय के सींग का गूदा ३० माशे, सिरके के बीज ३० मा० दोनों कूटकर बारीक पीसलें और तमाम दवा की ३ पुड़िया बनालें। आवश्यकता के समय भूमि में गढ़ा खोद कर उसमें अंगारों की एक पुड़िया डालें और गढ़े पर रोगी को बिठा कर मस्सों को धूनी दें और वहीं बैठे हुए रोगी को १ छटांक घी पिलादें। इसी प्रकार लगातार ३ दिन धूनी देते रहने से पूर्णतया लाभ हो जायेगा। चूंकि यह योग एक मित्र के द्वारा प्राप्त हुआ था, अतः ज्यों का त्यों लिख दिया है, अभी तक मैंने स्वयं अथवा मेरे किसी विश्वस्त मित्र वैद्य ने इसकी परीक्षा नहीं की है। हां उनकी सम्मति से द्रव्य गुण युक्त हैं, अतः योग की सत्यता की आशा की जाती है।

विशेष सूचना

बवासीर की एक और भी किस्म है जिसे 'रीह की बवासीर' कहते हैं। इसका सविस्तार वर्णन व अनुभूत आयुर्वेदिक योग 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में लिखे जा चुके हैं। चूंकि इस रोग के सन्यासी प्रयोग विशेष खोज बीन तथा प्रयास करने पर भी उपलब्ध नहीं हो सके, अतः हम उसका वर्णन इस पुस्तक में नहीं दे रहे हैं।

अब हम आपको रक्तार्श व वातार्श के कुछ अति सुगम

चुटकुले भेंट कर रहे हैं, जो कि यथा समय बड़े ही काम के सिद्ध होते हैं।

अति सरल चुटकुले

प्रथम

नारियल का छिलका जला कर राख बनालें और कपड़े से छान कर समभाग मिश्री मिलालें। १ तोले की मात्रा नित्य प्रातः बासी पानी से सेवन करें। कुछ दिनों में ही रोग जाता रहेगा। रक्तार्श का रक्त आना तो एक दो मात्राओं के सेवन से ही रुक जाता है।

द्वितीय

करंजुआ की गिरी बारीक पीसलें और ३ माशे चूर्ण ताजा जल के साथ नित्य प्रातः सेवन करायें। १०-१५ दिन निरन्तर सेवन करने से लाभ हो जाता है।

तृतीय

आवश्यकतानुसार कुड़ा छाल लेकर बारीक पीस ले और ४ माशा प्रातः सायं दो तोले गौघृत के साथ दिया करें। ईश्वर कृपा से अर्श रोग मिट जायेगा।

चतुर्थ

मुट्ठी भर सरयाली के बीज प्रति दिन पानी के साथ खिलाया करें। २१ दिन के सेवन से लाभ हो जायेगा। विशेष कर रक्तार्श के लिए अतीव गुणकारी है।

पंचम

लडतुडे से मिलता जुलता गूंदनी एक वृक्ष होता है, उसके २ तोला पत्ते आधपाव पानी में मिलाकर रगड़ लें और छान कर प्रातः सायं पिया करें। रक्तार्श के लिए परम लाभदायक है। अतिशीघ्र रक्त का आना बन्द हो जाएगा।

षष्ठम

जिस मनुष्य को जड़ी बूटियों का तनिक भी ज्ञान है, वह अवश्य जानता है कि गेंदा बवासीर के लिए अगद है। बवासीर के लिए सेवन विधि यह है कि १ तोला गेंदा के पत्ते और १० नग काली मिर्च आधपाव पानी में घोटें छानकर पिलाएं। अर्श का रक्त चाहे कितनी ही तेजी से क्यों न बहता हो २-३ मात्राओं से ही रुक जायेगा। और कुछ दिनों के निरन्तर सेवन से रोग नितान्त मिट जाता है।

सप्तम

अबाबील की बीट जितनी मिल सके, एकत्र करके बारीक पीसले और सुरक्षित रखे। तथा शौचादि के उपरान्त नित्यप्रति उपलों की धुआं रहित आग पर १ तोला दवा डालकर मस्सों को धूनी दें। और चारों ओर से शरीर को कपड़े से ढक लें, ताकि धुआं सीधा मस्सों पर

लगे। कुछ दिनों तक इसी प्रकार धूनी देने से मस्से झड़ जाते हैं।

अष्टम

प्रायः बैलों या गायों के टूटे हुए सींग, जो पृथ्वी में दबकर वर्षा ऋतु में फूट निकलते हैं, उनका चूर्ण एकत्र करलें और उसमें से एक माशा जंगली कण्डों की निर्धूम अग्नि पर डालकर धूनी दिया करे बिना किसी कष्ट के कुछ ही दिनों में मस्से झड़ जाते है।

नवम

जंगली उपले आवश्यकतानुसार लेकर भूमि में गढ़ा खोदकर डालदें और उनकी आग लगाकर ऊपर से पीतल की थाली औंधा दें, तथा एक ओर से धुआ निकलने को तनिक सा छिद्र रहने दें। शेष सब स्थान ढक दें। इस प्रकार करने से सारा धुवा उडकर तेल के रूप में थाली के भीतरी भाग पर जम जायगा। उसको उतार कर सुरक्षित रखें। इनकी सेवन विधि यह है कि प्रातः सायं शौचादि से निवृत होकर इस तेल को मस्सों पर लगाया करें। कुछ दिन तक नित्य लगाते रहने से मस्से मुरझा कर नष्ट हो जाएंगे। यह प्रयोग एक अत्तार हकीम को किसी सन्यासी से प्राप्त हुआ था

दसम

१ तो० आम्बा हल्दी बारीक पीसकर उसमें १ तो० मोम मिलाले और १-१ रत्ती की गोलियां बनाले । तथा प्रातः साय १-१ गोली ताजा पानी से खिलायें । बवासीर के लिए अचूक औषधि है ।

कुछ अन्यान्य सुगम चुटकुले

११ हुक्के के दुर्गन्धियुक्त सड़े हुए जल से शौच लेते रहें, कुछ दिनो मे मस्से दूर हो जायेंगे ।

१२ गोखरू जिसे लोग भांखड़ा भी कहते हैं, की जड़, छाल, पत्ते, फूल, फल आदि पांचों भाग छाया में सुखा कर बारीक पीसले और ६ माशा ठंडे पानी से दिया करें ।

१३. कीकर के फूल तथा खांड बारीक पीस कर मिलाले और १ मुट्ठी जल के साथ सेवन करें । न केवल अर्श, अपितु प्रमेह के लिए भी लाभदायक है ।

१४. कीकर की निर्बीज कच्ची फलिया छाया मे सुखाकर बारीक पीसलें और समभाग मिश्री मिलाकर १ तो० प्रातःकाल के समय ठंडे जल से सेवन करायें । हर प्रकार के अर्श के लिए अति लाभदायक है ।

१५. आक के पीले पत्ते को गाय के घी से चुपड़ कर

दीपक की ज्वाला पर गर्म करके मस्सों पर बांध दें, पीड़ा तुरन्त दूर हो जाती है।

१६. गन्ने की गंडेरियां छीलकर मिट्टी की कोरी प्याली में रखकर ऊपर से केवड़ा छिडक कर मलमल के रूमाल से ढककर सारी रात पड़ा रहने दें और दूसरे दिन प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व खाया करें। अर्श के लिए बहुत लाभप्रद है।

सन्धियों के रोग

सन्धियों से हमारा अभिप्राय शरीर के उन जोड़ों से है, जहां पर दो हड्डियां आकर परस्पर मिलती हैं। हमारे शरीर में लगभग १८० छोटे बड़े जोड़ हैं, और ये जोड़ दो प्रकार के हैं :—(१) सचेष्ट (२) निश्चेष्ट। सचेष्ट जोड़ वे कहलाते हैं, जो कि काम करते समय चेष्टा करते हैं, अर्थात् हम उस जोड़ के स्थान पर अंग को मोड़ सकते हैं हिला डुला सकते हैं। जैसे कि टांगों में पिंडलियों के जोड़, हाथों में कुहनी के जोड़ आदि आदि। तथा निश्चेष्ट जोड़ वे हैं, जो चेष्टा नहीं करते, अपितु जड़वत स्थिर रहते हैं, जैसे कि खोपड़ी की छत के जोड़ आदि। शारीरिक विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकों में सचेष्ट जोड़ भी कई

प्रकार के बताए गए हैं, अतः हम उस प्रशस्त प्रसङ्ग में न पड़ कर अपने मुख्य विषय पर आते हैं, और वह है— सन्धियों के रोग। जब हमारे शरीर का कोई अवयव रोगों से सुरक्षित नहीं रह पाता, तो भला हड्डियाँ और उन के जोड़ों में रोग होना कोई आश्चर्य की बात तो नहीं है। हाँ, साहब! इन जोड़ों में भी कभी २ भयङ्कर पीड़ा उत्पन्न हो जाती है, इस पीड़ा के चिकित्सा ग्रन्थों में अनेक भेद वर्णित हैं। हम उनमें से कुछ प्रमुख भेदों का वर्णन यहाँ लिख रहे हैं, और उनके लिए उत्तमोत्तम *सन्यासी प्रयोग* भी भेंट कर रहे हैं, जिनसे आवश्यकता के समय आप पूरा २ लाभ उठा सकते हैं। यदि विशेष जानकारी प्राप्त करना अभीष्ट हो, तो 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' व 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' नामक पुस्तकों का अवलोकन करें।

आम-वात

इस रोग को सर्व साधारण गठिया के नाम से जानते हैं। यह बड़ा ही कष्टप्रद रोग है, इसके रोगी के शरीर का जोड़ २ पीड़ा से आक्रान्त हो जाता है और कभी २ रोगी उठने बैठने में भी विवश हो जाता है। बड़े जोड़ों में पीड़ा होना आम-वात कहलाता है, और अंगुली, टखने आदि छोटे जोड़ों में पीड़ा होना सन्धि-वात कहलाता है। यह रोग पुराना हो जाने पर बड़ी कठिनता से जाता है।

सन्धि रोगों की चिकित्सा

चूंकि यह रोग चारों दोषों से उत्पन्न होता है, अतः आयुर्वेदिक चिकित्सा में भी ऐसे योग कम ही मिलते हैं, जो कि सब प्रकृतियों के विभिन्न रोगियों के अनुकूल हों और सब प्रकार की पीड़ाओं के लिए लाभदायक हों। आयुर्वेदिक चिकित्सा में तो प्रायः बाह्य रूप से लगाए जाने वाले तेल ही अधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं, किन्तु सन्यासियों ने ऐसे प्रयोग खोज निकाले हैं, जो कि हर प्रकृति के रोगी के लिए व हर प्रकार की पीड़ा के लिए समान रूप से लाभदायक हैं। किन्तु फिर भी यह मूल सिद्धान्त सदैव याद रखना चाहिए कि प्रायः इस रोग का कारण कोष्ठ बद्धता भी होती है, अतः रोगी को पहिले रेचन सेवन कराएं तदनन्तर ये प्रयोग सेवन कराएं। ईश्वर कृपा से निश्चय ही लाभ हो जायगा।

सन्यासियों का हृदयाङ्कत योग

यह योग किसी मूल्यवान भस्म अथवा औषधियों से नहीं बनता, अपितु नितान्त ही साधारण व सर्व प्राप्य जड़ी बूटियों से बनता है, उस पर भी अद्भुत प्रभाव कारक है। इसकी पहिली मात्रा ही अपना चमत्कार दिखाती है और कतिपय मात्राएं ही रोग को जड़ मूल से दूर कर देती हैं। यह सन्यासियों का विशेष हृदयाङ्कत योग

है और इसका प्रकट हो जाना निश्चय ही सर्व साधारण के लिए सौभाग्य की बात है। यदि ऐसे आश्चर्यजनक चुटकुले, जो कि जादू के समान प्रभाव दिखाते है, हर व्यक्ति को ज्ञात हो जायं, तो वे बेचारे अपने खून पसीने की कमाई क्यों वैद्य और डाक्टरों को लुटाते फिरे। अतः मै तो बार २ यही कहूंगा, कि हमारी यह 'सन्यासी चिकित्सा शास्त्र' पुस्तक घर २ में होनी परमावश्यक है। इस से आवश्यकता के समय आप बिना एक भी पैसा व्यय किए अपनी चिकित्सा आप कर सकते है। क्या मैं अपने प्रिय पाठकों से आशा करू कि वे देश के निर्धन भाइयों के कल्याणार्थ इस पुस्तक के विषय में और इसकी उपयोगिता के विषय में अन्य भाइयो को भी बतायेंगे।

हाँ तो प्रयोग इस प्रकार है :—

भटकटाई १ सेर, हरमल के पत्ते १ सेर, सोहाजने के पत्ते आधासेर, सोहाजने की जड़ पाव भर। सब बूटियों को एक बड़ मिट्टी के उपयोग में लाये हुए घडे में डालकर लगभग १२ सेर पानी भरदें और आधा पाव अजवाइन की किसी मलमल के स्वच्छ कपडे मे ढीली सी पोटली बांध कर उसी घडे में छोड दें, तथा घड़े का मुंह ढक्कन व आटे की सहायता से भली भांति बन्द कर दें, ताकि भाप न निकल सके। फिर घडे को एक देगदान अथवा बड़े चूल्हे

पर चढा कर उस समय तक आग जलाएं, जब तक कि घड़े में अनुमानतः केवल २ सेर पानी रह जाय, तदुपरांत उतार कर अजवाइन की पोटली निकाल लें और किसी पात्र में फैला कर छाया में सुखा लें। अथवा अच्छा हो कि पोटली से निकाल कर भली भांति बारीक पीस कर जंगली बेर के परिमाण की गोलियां बना लें और दो गोलियां प्रातः सायं गरम दूध के साथ रोगी को सेवन कराएं। यह सब प्रकार की वातज व कफज पीडाओं की अचूक खाद्य औषधि है अब बाह्य रूप में मालिश के लिए तैल देखिए। अजवाइन पकाते समय घड़े में जो दो सेर जल शेष रह गया था उसमें आध सेर मीठा तैल डाल कर किसी कलईदार पात्र में आग पर पकावे और जब पानी जल कर तैल मात्र शेष रह जाय, तो उसे शीशियों में भरकर सुरक्षित रखें। इस तैल की ऊपर से मालिश करें और उपरोक्त औषधि भी सेवन करें, ईश्वर कृपा से कुछ दिनों में ही रोग नितान्त जाता रहेगा।

द्वितीय प्रयोग

आकसन बूटी की जड़ यथावश्यकता लेकर छाया में सुखा लें और सूक्ष्म पीसकर उसमें समपरिमाण में खांड मिलालें तथा ६ माशा से १ तोला तक मात्रा दूध के साथ रोगी को प्रतिदिन दोनों समय सेवन कराए। ईश्वर कृपा

से खाट पर पड़ा हुआ रोगी भी कुछ ही दिनों में स्वस्थ हो जायेगा।

८ तृतीय प्रयोग

तम्बाकू के हरे पत्तों की कोमल कोंपल, लाल अरण्ड के पत्ते, धतूरे के कोमल पत्ते, आक की कोंपलें। बराबर २ लेकर बारीक पीस लें, चने के बराबर गोलियां बनालें। और १—१ गोली प्रातः सायं दोनों समय सेवन कराएं।

पथ्यापथ्य—इस रोग में वातजनक व शीतल पदार्थों का सेवन कदापि नहीं करना चाहिए, अपितु गर्म मसाला पड़ी चने, मूंग की दाल, चाय, बिस्कुट, अंजीर, मुनक्का आदि खाना चाहिए।

रींघनवाय का उत्तम प्रयोग

हुलहुल बूटी, जिसे पंजाब प्रान्त में बकरा बूटी भी कहते हैं, रीघनवाय की पीड़ा के लिए अक्सीर है। जिस टाँग में रीघनवाय की पीड़ा होरही हो, उस टांग की पिंडली पर ठीक उसके ऊपर जिसमें पीड़ा हो, इस बूटी को घोंट कर और टिकिया बनाकर बांध दें। टिकिया अधिक से अधिक रुपये जितनी बराबर होनी चाहिए। लगभग ८—६ घन्टे उपरात पट्टी खोल कर देखें, स्थान लाल हो जायगा। फिर कुछ समय उपरात वहां पर छाला पड़ जायेगा। उस

छाले को सुई आदि से फोड़दें, उसमें से पीला पानी निक-लना प्रारम्भ होगा। जब देखें कि छाले में से पर्याप्त पीला जल निकल चुका है, तो उस पर पानी से धुला हुआ मक्खन लगायें। एक दो दिन में घाव ठीक हो जायगा और पीड़ा भी दूर हो जायेगी। यह बूटी सर्प-विष तथा जन्गे के लिये भी बड़ी ही लाभकारी है और सन्यासियों ने इसके छुपे गुणों का बड़े परिश्रम से पता लगा पाया है। इसके अन्यान्य प्रयोग भी आगे के प्रकरण में अंकित किए जायेंगे।

एक विशेष सूचना

चूंकि गीगनवाय अर्थात् लगड़ा को पीड़ा का एक ही सन्यासी प्रयोग हमें प्राप्त हो सका है, जो पाठकों को भेंट कर दिया गया है। अतः हमने इस रोग का पूरा विवरण यहां नहीं लिखा। यदि आप इसके कारण लक्षण व अन्यान्य प्रयोग जानना चाहें, तो 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' अथवा 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' मंगाकर पढ़े। पर्याप्त ज्ञान उपलब्ध होगा।

त्वचा के रोग

त्वचा अर्थात् शरीर-चर्म के रोग तो असंख्य हैं, किन्तु यहां हम केवल कुछेक बहुप्रचलित रोगों तथा दाद, खुजली, चम्बल, फोड़, फुन्सियाँ तथा उपदंश आदि के ही उत्तमोत्तम सन्यासी प्रयोगों को अंकित करते है। इन रोगों का विस्तृत विवरण 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' में लिखा जा चुका है, यहां केवल इतना बता देना परम आवश्यक समझता हूँ कि यह रोग रक्त विकार के कारण उत्पन्न होते हैं और कभी २ तो रक्तशोधक औषधियों के सेवन मात्र से ही ये रोग निर्मूल हो जाते हैं। अस्तु सर्व प्रथम कुछेक रक्तशोधक सन्यासी योग लिखता हूँ, जो कि रक्त को शुद्ध करके दाद, खुजली, चम्बल, तथा फोड़े फुन्सी आदि को मिटा देते हैं, अपितु उपदंश तक को नष्ट करने में सफल होते हैं।

रक्त शोधक सन्यासी बूटी

ये सन्यासियों की रहस्यमयी गोलियां अपूर्व रक्त शोधक हैं, पुरानी से पुरानी खुजली, दाद, चम्बल, उपदंश (आतशक), यहां तक कि कुष्ट रोग तक को लाभकारी हैं।

जिला फर्रुखाबाद, इटावा व कानपुर आदि के गाँवों में एक बार दाद व खुजली बड़े जोरों से फैली। जिसे देखो, वही खुजलाते २ परेशान था, अपितु कुछ रोगी

तो सड़े हुए से दिखाई पड़ते थे। अचानक एक गांव में किसी सन्यासी ने कुछ रोगियों को निम्न योग बताया, जिसके चार पांच दिन के सेवन से ही वे लोग ठीक हो गये बस, फिर क्या था ? महात्मा जी की कीर्ति के साथ-साथ यह योग भी गाव २ में तेजी के साथ फैल गया और ईश्वर कृपा से कुछ दिनों में ही गाव के गांव इस रोग से मुक्त होगये। हमें यह योग हमारे इटावा निवासी मित्र श्री वीरेन्द्रकुमार जैन प्रोप्राइटर जनरल फार्मेसी इटावा ने प्रदान किया था। बड़ा ही चमत्कारी प्रभावक प्रयोग है—

हरताल वरकी १ तोला, काली मिर्च व शिंगरफ प्रत्येक ६-६ माशा, तीनों वस्तुओं को खरल में डाल कर सूक्ष्मातिसूक्ष्म पीस, फिर थोड़ा २ पानी मिलाकर ५ दिन तक खरल करें। पानी केवल उतना ही डाला जाय कि औषधियां आर्द्र बनी रहें। तदुपरान्त दो तोला किशमिश मिलाकर ३-४ घन्टे तक खरल करें और १-१ रत्ती की गोलियां बनालें। नित्य प्रति केवल १ गोली प्रातःकाल के समय ठंडे पानी के साथ सेवन कराए। ईश्वर कृपा से कुछ ही दिनों में बिगड़े से बिगड़ा रोग भी दूर हो जायगा।

अपूर्व रक्तशोधक बूटियां

हिरणखुरी तथा ब्रह्म-दण्डी बूटियां रक्त शुद्ध करने

के लिए सब सन्यासियों की मानी हुई हैं। क्योंकि ये बूटियां दद्रु, कण्डु आदि ही नहीं अपितु कुष्ठ तक को लाभ पहुंचाती हैं।

इन बूटियों की सेवन विधि यह है :—

हिरणखुरी व ब्रह्मदण्डी दोनों १–१ तोला, काली मिर्च ७ नग, तीनों द्रव्यों को पाव भर पानी में घोंट छान कर पिलावे। रक्त के समस्त विकारों को दूर करके नितान्त शुद्ध कर देगी।

दाद का विचित्र चुटकुला

यह सन्यासी चुटकुला दाद को केवल एक दिन में मिटा देता है। जंगली अजार, जिसको कैमरी और फगवाड़ा भी कहते हैं, उसका दूध दाद के लिए अकसीर ही है। दाद स्थान पर तनिक सा दूध चुपड़ दो, यद्यपि पीड़ा तो होगी, किन्तु उसी दिन से दाद सदा के लिए उड़ जायेगा और कुछ ही दिनों मे नवीन त्वचा उत्पन्न हो जायगी।

चम्बल नाशक तैल

बकरे के खुरो का पाताल यन्त्र द्वारा तैल निकलकर प्रति दिन चम्बल पर लगाएं, रोग मिट जायगा। एक फकीर का बताया हुआ योग है।

खिजली दाद खाज की
एकमात्र औषधि

यह योग श्रीयुत हकीम पं० बेलीराम जी जिला लायलपुर वालों को सन् १९०८ में एक सन्यासी से प्राप्त हुआ था। उनका कथन है कि मैंने इस योग की सहस्रों रोगियों पर परीक्षा की है और आज तक कभी असफलता नहीं हुई। जिस सन्यासी से यह योग मुझे प्राप्त हुआ था, उनकी आज्ञा थी कि इस योग को अन्य रोगियों को मुफ्त ही बांटा जाय। अस्तु मैंने आज तक इसका एक पैसा भी मूल्य नहीं लिया। पाठकों से भी मेरा विनम्र निवेदन है कि वे भी इसे मुफ्त ही बांटें। मैं सन् १९०८ से बराबर इसे प्रयोग कर रहा हूँ। जो रोगी सबको इलाज कराकर निराश हो चुके हों, उन्हें तनिक सा परिश्रम करके यह तेल बना कर दद्रु और कुछ दिनों तक निरन्तर सेवन कराये। ईश्वर कृपा से निश्चय ही शत प्रतिशत सफलता प्राप्त होगी। यहां तक कि इसे यदि दाद और खाज के समस्त योगों का शिरोमणि कह दिया जाय, तो यह अतिशयोक्ति न होगी।

योग इस प्रकार है ;—

नीलाथोथा, कमीला, बालची, मुर्दासंग, हरताल वरकिया, प्रत्येक ढाई-ढाई तोला, नारियल का छिलका एक

सेर। समस्त द्रव्यों को जौकुट कर लें। फिर एक बिना कलाई की हुई ताम्बे की देगची में एक पक्की ईंट का टुकड़ा रख कर उसके चारों ओर जौकुट की हुई औषधि डाल दें, और ईंट के टुकड़े के ऊपर एक चीनी, या गिल्वर का प्याला रख दें। फिर देगची के मुंह पर पीतल की बाल्टी या और कोई बर्तन ऐसा रक्खे जिसका पेंदा देगची के मुंह पर फिट आ जाय। फिर गेहूँ के गुंधे हुए आटे से मुंह ऐसा बन्द करें कि देगची के भीतर की भाप बाहर न निकल सके। तत्पश्चात् बर्तन को चूल्हे पर चढ़ाकर नीचे बेरी की लकड़ी की आग मन्द २ जलाएं, और ऊपर वाले बर्तन में ठंडा पानी भर दें। जब वह पानी गरम हो जाय, तो उसे निकाल कर पुनः ठंडा जल भर दिया करें। इसी प्रकार क्रिया को जारी रखते हुए निरन्तर ४ घंटे आग दें फिर बन्द करदें और सर्वाङ्ग शीतल हो जाने पर ऊपर के बर्तन को हटा कर देखें, अन्दर रखा प्याला काले रंग के तेल से भरा हुआ मिलेगा। यही वह अक्सीरी तेल है, जो कभी निष्फल नहीं गया। दाद या चम्बल के छिलकों को साबुन से धोकर खुर्दी का प्रकार करके रूई की फुरेरी से इस तेल को लगाया करें, अतिशीघ्र समस्त रक्तविकार से उत्पन्न रोगों को दूर कर देगा।

विशेष सूचना

तेल बनाते समय पानी वाले बर्तन में लोहे या पत्थर

का भारी टुकड़ा रख देना चाहिए, ताकि भाप से बर्तन की मुख-मुद्रा टूटने का भय न रहे।

स्वामी जी का परम हृदयाङ्कित योग

यह योग हमारे एक परम मित्र को उदार हृदय स्वामी सरस्वती नन्दजी ने प्रदान किया था। यद्यपि यह योग स्वामी जी ने प्रकट करने के लिए नहीं दिया था, तथापि जब मेरे मित्र ने जनकल्याण के लिए उनसे प्रकाशनार्थ आज्ञा मांगी, तो उन्होंने सहर्ष अनुमति देदी। स्वामी जी ने कहा था कि यह योग संसार को आश्चर्य में डाल देने वाला है। क्योंकि इसके लगाते ही ऐसे २ चमत्कारी प्रभाव प्रकट होते हैं, जिन्हें देखकर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। इसके लेप करते रहने से कुष्ठ, श्वित्रकुष्ठ आदि रोग तक सुगमता पूर्वक दूर हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें अनेक ऐसे २ गुण हैं जो कि वर्णन नहीं किये जा सकते। स्वामी जी ने बताया था यह योग एक अति प्राचीन हस्तलिखित जैन ग्रन्थ से प्राप्त हुआ था।

योग इस प्रकार है :—

४ तोले शुद्ध पारा खरल में डालकर मूली के पानी के साथ खरल करते रहने से पारा मूर्छित हो जायगा। अब इसमें एक रत्तल (आधा सेर) मूली का पानी मिलाकर उसमें एकपाव हरिद्रा अर्थात् हल्दी की गांठें डालो।

जब सारा मूली का पानी उन गांठों में शोषण हो जावे, तो उतना ही तीसरी बार और डाल दें। अब इनका रंग काला पड़ जायगा। इन हल्दी की गांठों को आवश्यकतानुसार लेकर उसमें समभाग आम की गोंद और मैन्सिल मिलाकर अति सूक्ष्म पीसलें और आवश्यकता के समय नीबू के रस में मिलाकर रोग के स्थान पर लेप किया करे। यूं तो इस योग के अनन्त गुण हैं, किन्तु उपरोक्त सेवन-विधि केवल त्वचा रोगों के लिए ही है। कुछ दिवस के निरन्तर सेवन से न केवल दद्रु, चम्बल अपितु कुष्ट रोग भी नष्ट हो जायगा। चाहे त्वचा सड़-गल ही क्यों न गई हो, कुछ ही दिनों में स्वच्छ होकर कुन्दन के समान चमक उठेगी।

एक और प्रशंसित योग

यह योग श्रीमान् अहमदशाह सन्यासी द्वारा प्राप्त हुआ था, जो कि परीक्षा करने पर अत्यन्त सफल सिद्ध हुआ है और आज अनेक वैद्य हकीम तक इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा कर रहे हैं। जो सज्जन इसे बनाकर प्रयोग में लायेंगे, ईश्वर कृपा से इसके चमत्कार-गुण देख कर मुग्ध हो उठेंगे।

योग इस प्रकार है :—

बावची तथा गंधक-आमलासार प्रत्येक १-१ तोला,

मुर्दासंग व कमीला प्रत्येक ६ माशा, तूतिया १॥ तोला, पारा २ माशा और मक्खन १० तोला।

प्रथम पारे और मक्खन को छोड़ कर शेष द्रव्यों का अति सूक्ष्म चूर्ण बनाले और फिर मक्खन को २१ बार पानी में धोकर उसमें भली भांति मिलावे व मलहम सा तैयार करले। इसके पश्चात पारे को हथेली पर रख कर अंगुली से रगड़े। जब पारे का रंग कालासा पड़ जाय तो उस मलहम में मिला दें तथा रोग के स्थान पर लगाया करें। कुछ ही दिनों में दद्रु, चम्बल तथा कुष्ठ आदि रोग समूल नष्ट हो जायंगे

'सन्यासी' पत्र का योग

यह योग सन् १९१४ में एक महाशय ने 'सन्यासी' नामक पत्र में प्रकाशित कराया था। यद्यपि सन्यासी प्रयोगों की इस पुस्तक में आयुर्वेदिक योगों की कोई आवश्यकता नहीं तथापि योग बड़ा ही लाभकारक सिद्ध हुआ था अतु अपने प्रिय पाठकों की भलाई के विचार से ही अङ्कित किए देते हैं। अगर भाई किसी सन्यासी का दिया हुआ न सही, 'सन्यासी' पत्र का दिया हुआ तो है ही। अतः इसे भी हम सन्यासी प्रयोगों में ही सम्मिलित किए लेते हैं। आशा है, हमारे पाठकगण प्रसन्न ही होंगे। पाठकों के सूचनार्थ यह भी बताए देता हूँ कि इस योगको

प्रकाशित कराने वाले (मनशाराम इसे ।।) प्रति डिबिया के भाव से बेचा करते थे और हाथों हाथ विक्रय हुआ करती थी।

योग इस प्रकार है :—

सत गंधबिरोजा ४ तो०, सिन्दूर, मुर्दासंग व मिट्टी का तेल प्रत्येक १-१ तो०। पहले सत गंधबिरोजा को खरल में डाल कर पानी मिला कर बारीक रगड़ें। जब पानी मैला हो जावे, तो वह पानी फेंक कर दूसरा डाल दें। इसी प्रकार ५-६ बार बदलने से गंधबिरोजा स्वच्छ हो जायगा। अब इस में मिट्टी का तेल मिला दें तो पतला सा हो जायगा। तदुपरान्त इसमें सिन्दूर और मुर्दासंग का चूर्ण मिलाकर खूब हिलायें। बस लाल रंग की मलहम तयार हो जायगी। पड़े पड़े स्वतः जम जायगी और अंगारों पर रखने से पिघलेगी यदि न पिघले तो थोड़ा सा मिट्टी का तेल और मिला देना चाहिए। इस मलहम की सेवन विधि यह है कि एक फाया बना कर उस पर मलहम लगावें और फाये को घाव पर रख दें। बस एक फाया ही पर्याप्त होगा। जब तक घाव नितान्त ठीक न हो जायगा फाया नहीं उतरेगा और घाव के ठीक हो जाने पर स्वतः ही छूट जायगा। यदि घाव में से पीप आती हो तो इसे उतार कर बदला जा सकता है। फोड़े पर इस मलहम को लगा दीजिये या तो उसे वहीं का

वहो मिठा देगा, अन्यथा फोड़ देगा। इसके अतिरिक्त अन्यान्य त्वचा रोगों के क्षत को भी अल्प समय में ही सुखा देता है। अत्युत्तम व पूर्ण अनुभूत योग है।

सन्यासियों का जादूई रहस्य

यह सन्यासियों का एक विशेष रहस्यमय योग है, जोकि मेरे एक मित्र वैद्य को एक सन्यासी से अफीम छुड़ाने वाली गोलियों का योग बताने के परिवर्तन में प्राप्त हुआ था। यदि यही योग किसी अन्य कृपण व्यक्ति को मिल जाता तो सम्भवतः वह इसे हृदय कोष्ठ में बन्द करके रखता और कदापि प्रकट न करता। इस विषय में मुझे अपने मित्र की उदारता की प्रशंसा करनी पड़ती है।

योग इस प्रकार है :—

एक तोला पीली कौड़ियां सर्प के मुख में डालकर उस के मुख को बन्द करदें और बांध दें, ताकि खुल न सके फिर एक हांडी में उस सर्प को बन्द कर के कपरौटी करें तथा ६ मास तक निरन्तर हांडी को कूड़े में दबा कर रखें। ६ मास उपरांत कौड़ियां निकाल कर पीस लें और उनके समभाग श्वेत संखिया का विधिवत उड़ाया हुआ सत्व मिला कर खरल करें और शीशी में सम्भाल कर रखें।

'सेवन विधि—सिर और गुदा को छोड कर शरीर के शेष किसी अङ्ग पर तनिक सा चाकू से नश्तर लगाकर उस पर एक चावल भर दवा मलदें और ऊपर पान का पत्ता रख कर पट्टी बाध दें। तनिक देर पश्चात् टीसें उठ कर फोडे में जाने लगेंगी और इसी प्रकार कुछ देर तक टीसों का भ्रम जारी रह कर ईश्वर कृपा से उसी दिन आराम हो जाएगा।

विशेष सूचनायें

१--चूंकि इस दवा में सर्प और संखिया दो प्रकार के तीव्र विष सम्मिलित है, अतः जिस दिन रोगी को यह दवा सेवन कराएँ उस दिन घी, दूध खूब पिलाएँ इससे चिरकाल के अधिक से अधिक बिगडे हुए फोडें भी ठीक हो जाते हैं।

२—दूसरी सूचना यह है कि संखिया का सत्व उडाने की पूर्ण आयुर्वेदिक विधि 'देहाती अनुभूत योग सग्रह' में वर्णित है, अतः जो लोग उसकी विधि न जानते हों वे उक्त पुस्तक की सहायता लें।

स्वित्रकुष्ठ को एक दिन में चिकित्सा
विशेष सन्यासी प्रयोग

यद्यपि स्वित्र-कुष्ठ एक ऐसा रोग है, जो कि चिर-

काल तक चिकित्सा करने के उपरान्त भी कठिनता से ही आता है और कई बार तो आयुपर्यन्त प्रयत्न करते रहने पर भी यह रोग हटने का नाम नहीं लेता, इसलिए हमारे यहां इसे कच्चा कोढ़ कहते हैं। किन्तु फिर भी हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि भगवान की सृष्टि में ऐसी २ अद्भुत वस्तुएं हैं, जिनके चमत्कारी प्रभाव देखकर हमें चकित रह जाना पड़ता है। यहां एक ऐसा ही चमत्कारक सन्यासी प्रयोग अङ्कित किया जाता है, जो कि अपने दिव्य गुणों से अनुपम है। ईश्वर ने चाहा, तो इससे केवल एक ही दिन में स्वित्र-कुष्ट जाता रहेगा।

प्रयोग इस प्रकार है —

एक ऐसा काला सर्प, जो कि नीचे की ओर से भी नितान्त काला हो, उसको सिर व दुम की ओर से काट कर उसका रुधिर किसी चीनी की प्याली में एकत्र करें, और रुई की फुरेरी से स्वित्र-कुष्ट के दागों पर लगायें। जब तक दाग रक्त को चूसते रहें, तब तक आप बार २ लगाते रहें। जब चूसना बन्द करदें, तो रक्त लगाना भी बन्द कर दें ईश्वरेच्छा से उसी दिन दाग मिट जायगें। निस्सन्देह ऐसा प्रयोग आप को दूसरा न मिल सकेगा। अकेला ही हजारों रुपये का योग है।

श्वित्रकुष्ठ के लिए उत्तम लेप

यह लेप भी श्वित्र-कुष्ठ के लिए अद्‌भुत लाभकारी है—मोर की हड्डी एक तोला और भिलावा ४ नग एक मिट्टी के कूजे में डालकर भली भाँति कपरौटी करके राख बना लें और ठंडा होने पर निकाल कर किसी डिबिया आदि में सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय सिरका में घोट कर लेप तैयार करलें और प्रति दिन दागों पर लगाया करें। ईश्वर कृपा से कुछ दिनों में ही श्वित्र-कुष्ठ मिट जायगा।

कुष्ठ का सन्यासी प्रयोग

यह प्रयोग बड़ा ही सरल और अत्यधिक प्रभावक है। स्वयं परीक्षा करके लाभ उठावें।

योग इस प्रकार है :—

आवश्यकतानुसार रोहू मछली के चाने लेकर खूब बारीक पीस लें और प्रति दिन थोड़ा सा पानी मिला कर दागों पर लेप किया करें। साथ में कोई कोष्ठकुष्ठ नाशक योग भी सेवन करते रहें, और इस लेप को भी लगाते रहें। ईश्वर कृपा से १५—२० दिन के निरन्तर सेवन से रोग मिट जायगा।

दद्रु, चम्बल, कुष्ठ आदि के सुगम चुटकुले

प्रथम

एक हकीम साहब ने बतलाया कि एक बार मेरे मुख पर एक दाग बहुत ही रद्दी किस्म का होगया था। अनेक चिकित्सकों से इलाज कराया, किंतु कोई लाभ न हुआ। अन्त में संयोगवश एक सन्यासीने काजीदस्तार का दूध लगाने के लिए कहा। सन्यासी जी के कथानुसार तमाम दाग पर काजीदस्तार का दूध लेप कर दिया गया। किंतु लगाते ही असह्य जलन होने लगी। खैर पंखे पर पानी छिड़ककर हवा की गई और ज्यों त्यों करके वह जलन शांत हुई। किन्तु एक बार के लगाने से ही दादकी सफेद कीलें कूजा मिश्री की भांति निकल गई और उसी दिन से उस दुष्ट रोग से छुटकारा हो गया। तदनन्तर देहाती फार्मेसी, पो० कासन जिला गुड़गांवा के वैद्यजी ने भी इसका अनुभव दाद के एक अन्य रोगी पर किया और पूर्ण सफलता प्राप्त हुई।

विशेष सूचना

यह बूटी काजी दस्तार के नाम से ही प्रसिद्ध है, जो पंजाब के दोआबा प्रान्त और लाहौर के आस पास अत्यधिक पाई जाती है। देहाती फार्मेसी के वैद्यजी ने सिरसा के विक्टोरिया गार्डेन से प्राप्त करके अनुभव किया था।

द्वितीय

आवश्यकतानुसार पीली काही सरसों के तेल में भली प्रकार घोटलें और चम्बल पर लेप कर दें। ईश्वर ने चाहा तो प्रथमबार में ही, अन्यथा दूसरी बार लेप करने से निश्चय ही रोग न रहेगा।

तृतीय

चोक नामक एक प्रसिद्ध जड़ी है, जो कि पंसारियों के यहां भी इसी नाम से हर स्थान पर मिल जाती है। आवश्यकतानुसार चोक लेकर थूक में घिस कर दाद पर लेप करदें। आशा है २-२ बार के लेप करने से ही दाद नितान्त मिट जायगा।

चतुर्थ

खरबूजा के बीजों की मींगी पानी में इतनी घोटें कि मक्खन जैसी बन जाय। इसे प्रातः साय दाद पर लगाने से गिनती के दिनों में ही लाभ हो जाता है।

पंचम

भेड की सफेद ऊन को जलाकर राख बनालें और १०० बार के धुले हुए मक्खन में मिला कर दाद व चम्बल पर लगाया करें। ईश्वर कृपा से उत्तमोत्तम मलहमों के समान प्रभावकारक सिद्ध होगी। देहाती फार्मेसी के अधिकांश रोगियों को यही प्रयोग कराई जाती है।

उपदंश (आतशक)

इस रोग के नाम से भी आप लोग भली भांति परिचित होगे। यह एक अत्यन्त भयंकर और संक्रामक रोग है, जो कि रोगी का छूत लगने अथवा वंश परम्परागत रूप से माता पिता से प्राप्त होता है। आधुनिक चिकित्सकों के मतानुसार इस रोगका कारण एक सूक्ष्म लहरदार कीड़ा होता है, जो कि अणुवीक्षण यन्त्र द्वारा देखा जा सकताहै। इसे अंग्रेजी में स्पायरो-कीटा-पेलेरडा कहते है। सन् १९०५ में इसका डा० शुडीन ने पता लगाया था।

एक समय था जब कि भारत में इस रोग को चिकित्सकों के अतिरिक्त और कोई न जानता था। जब अंग्रेज भारत में आये, तो अपने साथ अन्य अनेक रोगों के साथ इसे भी लाए और यह रोग भारत में भी यत्र तत्र फैलने लगा और आज भारत का हर व्यक्ति इस स भली भाँति परिचित है अपितु बहुत कम ही ऐसे व्यक्ति होगे, जो कि इस रोग से सुरक्षित रह सके हो।

उपदश के मूल कारण

चू कि यह रोग छूआ छूत का है अतः उपदश रोग से पीड़ित स्त्रियों का सग करने, उनके आलिङ्गन तथा चुम्बन करने और उनके वस्त्र धारण करने से हो जाता है इसके अतिरिक्त ऋतुमती स्त्रियों के साथ प्रसंग करने

से भी यह रोग हो जाता है तथा किसी २ को अपने माता पिता से भी मिलता है।

उपदंश की पहिचान

इस रोग से प्रायः सर्व प्रथम जननेन्द्रिय पर एक लाल फुन्सी प्रकट होती है, जोकि शनैः शनैः बढ़ती हुई फूट कर घाव के रूप में हो जाती है किन्तु घाव में पीड़ा बहुत थोड़ी हुआ करती है, अपितु घाव को दबाने से कड़ी प्रतीत होती है। इसी प्रकार धीरे २ उसका पानी शरीर के अन्य भागो पर लगने से फुंसिया तथा घाव उत्पन्न हो जाते हैं। यहा तक कि कई व्यक्तियो के तो सारे शरीर पर घाव तथा लाल चकत्ते से प्रकट हो जाते हैं और सब शरीर फूट निकलता है।

अब हम आपको इस भयकर रोग से बचने के लिए उत्तमोत्तम सन्यासी प्रयोग भेंट करते हैं। इससे पूर्व हम आप को यह बता देना चाहते है कि यह रोग बड़ा ही भयङ्कर है। मनुष्य के सुखमय जीवन को यह कष्टमय और नारकीय बना देता है। दुर्भाग्यवश हमारे देश के नवयुवक आँखें बन्द कर के जवानी की आंधी के साथ उड़ने लगते हैं और पतन व कष्टों के इस गहनगर्त में शीघ्र ही जा गिरते हैं। आजकल जिस नवयुवक को देखिए उसे ही यह छूत का रोग लगा हुआ है। उनके चेहरे पीले दिखाई देते हैं,

आँखों की ज्योति क्षीण हो जाती है और ऐसा प्रतीत होता है मानों वे वर्षों के रोगी हैं। हमने अपनी दूसरी पुस्तक 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' में इस रोग के लिए विशेष रूप से खोज २ कर उत्तमोत्तम योग अंकित किए हैं। उस पुस्तक की सहायता से आप बिना एक भी पैसा व्यय किए ईश्वर की दी हुई प्राकृतिक वस्तुओं यथा पेड़ पौधों, बूटियों इत्यादि से ही इस भयङ्कर रोग से छुटकारा पा सकते हैं। भाई हमने तो अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया, अब उससे लाभ उठाना न उठाना आपका काम है। इसके अतिरिक्त 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में भी आपको इस रोग के निवारणार्थ आयुर्वेदिक व यूनानी चिकित्सा के चोटी के योग मिल सकते हैं जिन्हें परमात्मा ने धनधान्य खूब दिया है वे इस पुस्तक के मूल्यवान योगों से लाभान्वित हों और हमारे निर्धन भाई यदि पूरे विश्वास के साथ पूर्वोक्त पुस्तक 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' के योगों का विधिवत् सेवन करेंगे तो ईश्वर कृपा से इन मूल्यवान योगों की अपेक्षा बढ़ कर ही लाभ उठाएंगे। हमारी तो ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह हमारे देश के गरीब अमीर भाइयों को इस भयङ्कर रोग से बचाए और उन्हें सद्बुद्धि प्रदान करे ताकि वे मानव-जीवन के महत्व और संसारिक भोगों के दुष्परिणाम को भली भांति समझ सकें।

किन्तु अधिकांश चिकित्सकों के मतानुसार व स्वयं अपने अनुभव से इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि उपदंश, मूत्रकृच्छ्र, गुप्त रोगों व सर्प दंश आदि के लिए सन्यासियों ने जैसे २ उत्तमयोग खोज निकाले हैं, उनकी समानता आयुर्वेद, यूनानी चिकित्सा व ऐलोपैथिक चिकित्सा आदि के चोटी के योग भी नहीं कर सकते। इस बात को मैं ही नहीं, अपितु हर व्यक्ति स्वीकार करता है। अस्तु नीचे जो प्रयोग आपको भेंट किए जा रहे हैं, आवश्यकता के समय लाखों रुपया के सिद्ध होंगे। यही वे योग हैं, जिनके लिए साधु, सन्यासी बड़े २ जंगलों पहाड़ों आदि की खाक छानते फिरते हैं और तब कहीं उन्हें अपने गुरुओं से प्राप्त होते हैं और विशेषकर वैद्य हकीम तो उनकी खोज में दिन रात लालायित रहते हैं। आशा है, हमारी यह पुस्तक उन अगणित लोगों की मनोकामना पूरी करेगी।

उपदंश को समूल नष्ट करने वाला प्रथम सन्यासी प्रयोग

यह योग सन्यासियों का अति प्रशंसित योग है और जिन वैद्यों को यह विदित हो चुका है, उन्होंने इसको सौ २ रोगियों पर परीक्षा करके परमगुणकारी पाया है। देहाती फार्मेसी, मु० पो० कासन, जिला गुड़गावां के वैद्य

जी ने स्वयं मुझसे इसकी बड़ी प्रशंसा की है और वे भी अपनी फार्मेसी के उपदंश रोगियों को प्रायः यही सेवन कराते हैं। ये गोलियां देखने में तो अति साधारण प्रतीत होती हैं, किन्तु लाभ में बड़े २ मूल्यवान योगों से बाजी मार ले जाती हैं। इसे देखकर मैं सोचता हूं कि सचमुच ही उस प्रभु की लीला बखान नहीं की जा सकती, जिसने ऐसी छोटी २ वस्तुओं में भी कितने आश्चर्यजनक गुण भर दिये हैं और इस मृत्युलोक के मानव पर कितना महान उपकार किया है ? और अन्त में यही मुख से निकल जाता है कि 'प्रभोशोभा महीं यसी।'

योग इस प्रकार है :—

रीठे के छिलके को धूप में सुखाकर खरल में सूक्ष्म पीस ले और फिर कपड़ छान करके पानी की सहायता से १-१ रत्ती की गोलियां बनालें। इनकी सेवन विधि यह है कि पहले रोगी को कोई उत्तम रेचन सेवन कराए, तदनन्तर इन गोलियों का सेवन करें। १ गोली नित्य प्रातः निगल कर ऊपर से गाय का दही पावभर, कुछ जल मिला कर पिलाए। अधिक से अधिक १५ दिन इन गोलियों का सेवन कराना पर्याप्त है। साथ ही साथ मलहम भी लगाते रहे, तो अति शीघ्र लाभ हो जाता है। यद्यपि हमारे उक्त वैद्य जी ने अब तक इनका सेवन केवल उपदंश के नये

रोगियों को ही कराया है और वे नितान्त रोग मुक्त हो गए, किन्तु अन्य वैद्यों, जिन्होने इनकी पूर्ण परीक्षा की है, का कथन है कि चाहे पुराने से पुराना और बिगड़े से बिगड़ा उपदंश ही क्यो न हो, ये गोलिया अपूर्व फलप्रद सिद्ध होती है और सभी रोगी इनसे लाभान्वित होते हैं। किन्तु इनके सेवन काल में रोगी को घृत का अधिकाधिक सेवन कराएं और गरम तथा खट्टी वस्तुओं से परहेज करना अत्यावश्यक है। विधिवत सेवन करने से कुछ दिना मे ही चमत्कारी लाभ दृष्टिगोचर होगा।

द्वितीय सन्यासी अक्सीर

यह योग मेरे एक परममित्र वैद्य को ऊना निवासी श्रीयुत वैद्य रामदास जी ने प्रदान किया था। उन्हें यह योग किसी सन्यासी से प्राप्त हुआ था। उक्त सज्जन का कथन था कि इस प्रयोग की जितनी भी प्रशंसा की जाय, अपर्याप्त है। यह सन्यासियों का एक अतिगुप्त प्रयोग है। मैने एक सन्यासी का बड़ा भारी उपकार करके इस योगको प्राप्त किया था। इससे अधिक भेद खोलने में मै असमर्थ हूँ। किंतु प्रतिकार स्वरूप उस सन्यासी ने यह प्रयोग प्रदान करके हमारा अपितु सारे देश का जो उपकार किया है, उसके सामने मेरा उपकार अति तुच्छ हो गया है। उपदंश रोगी की अवस्था चाहे कितनी ही खराब क्यो न

हो, इसकी तीन मात्राओं से ही निश्चय आराम हो जाता है और अल्पकाल में ही वह पूर्णस्वस्थ व रोगमुक्त हो जाता है। मैंने इसके समान उत्तम प्रयोग आज तक न देखा ही था और न सुना ही था। सारांश यह है कि अद्वितीय प्रयोग है। पाठकगण स्वयं परीक्षा करके इसके गुण जान लेंगे।

प्रयोग इस प्रकार है :—

एक पीले रंग का लगभग ११ छटांक वजन का मेंढक लेकर उसका पेट चीर कर अन्दर से बिल्कुल साफ कर लें और उसके हाथ पांव काट डालें। तत्पश्चात् उसमें पारा-चिकना, रसकपूर, शिंगरफ रूमी, श्वेत संखिया समभाग भरकर ऊपर से कपरोटी करदें और फिर १३ सेर उपलों की आग में फूंक दें। भस्म हो जायेगी। उसे पीस कर सुरक्षित रूप से शीशी में भरलें।

सेवन विधि—२ चावल से ४ चावल तक की मात्रा हलुवा या मलाई में लपेट कर दें। नया उपदंश तीन दिन में और पुराने से पुराना अधिकाधिक एक सप्ताह में जड़ मूल से दूर हो जायेगा।

एक फकीर का योग

एक उपदंश रोगी की दशा उपदंश से बिगड़ कर कुष्ठ तक पहुंच गई थी, उसकी इन्द्रिय बिल्कुल सड़ गई थी और कोई व्यक्ति उसे अपने पास बैठने तक न देता था।

बेचारा निराश होकर जीवन से भी उकता गया था और आत्महत्या करने को उद्यत था।

अचानक एक फकीर ने उसकी यह दशा देखी और उसे तरस आ गया। वह फकीर उसके निकट आया और कहने लगा—'बेटा शाम का भूला अगर सुबह घर आ जाय, तो भूला नहीं कहलाता। अगर अब भी तुम कुसंगति और कुकर्म करना छोडने की शपथ लो तो मैं तुम्हें नया जीवन दे सकता हूँ। वह व्यक्ति उस फकीर के चरणों में गिर गया और फूट २ कर रोने लगा। कहने लगा—"महाराज! मैं तो अब अपने जीवन से भी निराश हो चुका हूँ, अपनी एक बार की भूल का काफी फल भोग चुका हूँ, यदि ईश्वर कृपा से मुझे पुनः स्वास्थ्य लाभ हुआ, तो फिर वही भूल कदापि न करूंगा। महाराज! कृपा करके मुझे बचाइए।" उसके इस करुण विलाप से फकीर का हृदय द्रवीभूत हो उठा और उसने रोगी को निम्नाङ्कित योग प्रदान किया। जिसकी गिनती की मात्राओं से ही वह इस प्रकार रोग मुक्त हुआ कि माना उसे कभी यह रोग हुआ ही न था। जो लोग उससे घृणा करने लगे थे, और उसे पास बैठने तक न देते थे, यह आकस्मिक परिवर्तन देखकर वे लोग दंग रह गए और बड प्रेम से उसे अपने पास बिठाने लगे। उस रोगी ने इस प्रकार दूसरा

जीवन प्राप्त करके अब शेष जीवन को सत्कर्मों में लगाने का निश्चय किया। और इसलिए उस फकीर के बताए हुए योग को अन्य भाइयों के कल्याणार्थ प्रकट कर दिया। यदि इसी प्रकार अन्य लोग भी ठोकर खाकर दूसरों का पथ-प्रदर्शन करने लगें और अपने अनुभवों से दूसरों का कल्याण करने लगें, तो निस्सन्देह भारत से भयङ्कर रोग अति शीघ्र भाग जाये। खैर!

योग इस प्रकार है :—

श्वेत संखिया ३ माशा, थोहर का दूध २० तोला, काली मिरच नग १० मे कपरौटा करके १० उपलों की अग्नि दें। भस्म हो जायगी। इसे १ खश के दाने के बराबर मात्रा मुनक्का में लपेट कर रोगी को खिलाएं। खाने के लिए रोटी घी में चूर करके दें, किन्तु खाड न मिलावें। अन्य सभी वस्तुओं से परहेज आवश्यक है। केवल सात दिन के सेवन से ही ईश्वर कृपा से रोग निर्मूल हो जायगा।

यात्री योगी की अनमोल भेंट

उपदंश नाशक बटी

इस अद्भुत योग की प्राप्ति की कथा भी बड़ी ही विचित्र है। हमारे परम मित्र श्रीयुत रामस्वरूप जी दीक्षित

एक बार झांसी के लिए रेल यात्रा कर रहे थे। संयोग-वश जिस डिब्बे में वे यात्रा कर रहे थे उसी मे एक योगी महाराज भी बैठे हुए थे। किसी प्रकार बात चीत के प्रसंग मे उपदश रोग का भी वर्णन छिड़ गया और तब उन योगीजी ने हमारे मित्र को निम्न प्रयोग प्रदान किया था। चूंकि योग परीक्षा करने पर अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुआ है अतः पाठको को भेट किया जाता है। योग इस प्रकार है:—

शिगरफ रूमी १ तोला, पीत संखिया १ माशा। दोनों को खरल में डालकर पीसें, और नर बकरे के पित्ते का पानी शामिल करके खरल करते जायं। यहां तक कि आठ दिन तक पित्तो का पानी मिलाते रहें और निरन्तर खरल करते रहें। तत्पश्चात मसूर के दाने के बराबर गोलिया बनालें और एक गोली नित्य प्रातःकाल रोगी को हलुवे में लपेट कर खिलाया करे। इसके निरन्तर सेवन से एक सप्ताह मे हर प्रकार का उपदश निर्मूल हो जाता है। और बिना किसी मलहम के लगाए ही क्षत शुष्क हो जाते है। इसके अतिरिक्त यह औषधि अपूर्व शक्तिदायक भी है। रोग मुक्त हो जाने पर भी २१ दिन तक बराबर सेवन कराए, ताकि विष नितान्त निर्मूल हो जाय।

विशेष हिदायत

यदि रोगी पुरुष है, तो नर बकरे के पित्तो के पानी मे खरल करें। किन्तु यदि रोगिणी स्त्री है, तो बकरी के पित्तों का जल लेना चाहिए।

उपदंश का अपूर्व योग

(जो कि एक सन्यासी ने कमांडर-इन-चीफ को दिया था)

यह योग हकीम मिरजा खुरशीद अली खां साहब कमाण्डर-इन-चीफ को एक प्रसिद्ध सन्यासी ने प्रदान किया था। जो कि हर प्रकार के विषैले द्रव्यों से रहित है और किसी प्रकार की हानि पहुंचने की आशंका भी नही है। अब आप स्वय अनुमान लगा सकते हैं कि जिस योग की एक कमाण्डर-इन-चीफ तक ने प्रशंसा की थी वह योग कितना महान् होगा। मै समझता हूं कि इस योग की अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है। समझदार पाठक गण स्वतः ही परीक्षा करके इसके दिव्य गुणों को देख लेंगे।

प्रयोग इस प्रकार है :—

२ माशा कपूर की डली लेकर कॉच या चीनी के उत्तम खरल में घोंट कर बारीक करलें फिर उस मे १८

तोला अरण्डी का तेल डाल कर खूब खरल करें, यहां तक कि तेल का रंग दूध के समान श्वेत हो जाए। बस औषधि तैयार है। इसे किसी चीनी के पात्र में डालकर सुरक्षित रखलें। इसकी सेवन विधि यह है कि चाय का एक चम्मच (Tea Spoon) भरकर नित्य प्रातःकाल रोगी को पिलाया करें। यह दवा ऐसे उपदंश के लिए भी लाभकारी सिद्ध होती है कि जिसमें रोगी के शरीर पर दाग पड गए हों तथा उन में से रक्त बहता हो, गिनती के दिनों में ही आराम हो जायगा। नया उपदंश तो प्रायः एक सप्ताह में ही मिट जाया करता है, हां यदि रोग पुराना हो, तो दवा अधिक बना लें। कुछ दिनों के निरन्तर सेवन से पुराना रोग भी निर्मूल हो जायेगा। इस योग में एक विशेषता और भी है कि कोई विशेष पथ्य की आवश्यकता नहीं। केवल तेल से बनी हुई व गरम वस्तुओं के खाने से परहेज करें। हाँ मैथुन से सख्त परहेज रखना परम आवश्यक है।

एक और आश्चर्यजनक योग

यह योग भी उपदंश के लिए आश्चर्यजनक लाभकारी है। एक समय था जब कि यह योग कुछ सन्यासियों का विशेष हृदयांगत और गुप्त योग था। किंतु अब प्रकट होकर अनेक वैद्यों द्वारा प्रयोग में लाया जा रहा है और अब तक सहस्रों रोगियों पर परीक्षित हो चुका है। ईश्वर

कृपा से कहीं से भी इसके असफल होने का समाचार प्राप्त नहीं हुआ। जिस रोगी को भी सेवन कराया गया, उसी ने स्वास्थ्य लाभ किया है। इसकी सर्वाधिक प्रशंसनीय विशेषता यह है कि वर्षों पुराना रोग भी घंटो में नष्ट हो जाता है। इसी कारण सहस्रों रुपये के उपचार भी इस सामान्य योग के सामने तुच्छ है।

योग इस प्रकार है :—

२ तोला ताजा नक छीकनी को सूक्ष्म पीस कर सुरमे के समान करलें और एक पिस्ता मैदा का झिल्ली समेत डालकर भली प्रकार खरल करें। यहां तक कि झिल्ली भी घुलमिल जावे। अब इनकी ३ बराबर की गोलियां बनालें और एक गोली प्रातः एक शाम के चार बजे और एक रात के ग्यारह बजे थोड़े से गरम पानी के साथ खिलाए, तथा उसे कड़ा आदेश करदें कि वह दिन-रात बिलकुल भी न सोए। यदि सो जायेगा, तो लाभ न होगा और साथ ही रोगी को खाने के लिए भी कुछ न दें। यदि अधिक प्यास लगे, तो थोड़ा गरम पानी पिलाएं और यदि बेचैनी सी अनुभव हो, तो पान चबायें। बस एक दो दस्त आयेंगे और रोग समूल नष्ट हो जायेगा तथा रोगी असीम लाभ अनुभव करेगा। आवश्यकतानुसार एक दो दिन सेवन करायें ताकि विष निर्मूल हो जाय,

नए व पुराने हर प्रकार के उपदंश के लिए अद्भुत सन्यासियाना चुटकुले

प्रथम

हंसराज बूटी जो कि हर स्थान पर पसारियों के यहां मिल जाती है, लेकर किसी बर्तन में रखकर फूंकलें और इसकी राख शीशी में भरकर सुरक्षित रखलें। आवश्यकता पड़ने पर उपदंश के रोगी को १-१ रत्ती की मात्रा में केवल पानी के साथ दिन में आठ बार सेवन करायें और तीन दिन तक नित्य इसी प्रकार खिलाते रहे। ईश्वर कृपा से चौथे दिन खिलाने की आवश्यकता ही न पड़ेगी और रोग केवल तीन दिन के सेवन से ही जड़ मूल से जाता रहेगा।

द्वितीय

इटसिट, जिसे वैद्यक भाषा में पुनर्नवा कहते हैं, नामक बूटी की जड़ लेकर उपदंश के रोगी को चबवायें। जब थूक का रंग श्वेत हो जावे, तो उस की हथेली पर ३-४ रत्ती पारा रख दें और रोगी से कहें कि वह हथेली पर अपना थूक डाल कर अंगुली से रगड़े, जब पारा मिल जाय, तो इस औषधि को अपने हाथों के पहुंचों--अर्थात् कलाइयों पर भली भाँति मल ले। इसी

क्रिया को तीन दिन तक बराबर करे, ईश्वर कृपा से उपदंश नितान्त मिट जायगा। अद्भुत आश्चर्यजनक प्रयोग है।

तृतीय

भैंस की चर्बी को गर्म करके पांवों की पिछली ओर एड़ी से ऊपर दोनों मछलियों पर मला करे। सात दिन में उपदंश का नाम तक न रहेगा। प्रथम तो इस प्रयोग को सुनकर मुझे भी विश्वास न हुआ था कि यह प्रयोग उपदन्श जैसे रोगी के लिए लाभ दायक हो सकता है। किन्तु पीछे मेरे एक परिचित वैद्य जी ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि उन्होंने स्वयं एक उपदंश के पुराने रोगी पर इसकी परीक्षा की थी और ईश्वर कृपा से आशातीत सफलता प्राप्त हुई थी।

चतुर्थ

यह चुटकुला मेरे परम मित्र श्रीयुत वीरेन्द्र कुमार जी जैन प्रोप्राइटर जनरल फार्मेसी इटावा (यू० पी०) ने मुझे बताया था। उनका कहना था कि यदि कोई मनुष्य लिखित अनुसार प्राप्त करले, तो निश्चयही इससे उत्तम प्रयोग उपदंश के लिए मिलना कठिन है। प्रयोग क्या है, बस जादू है, और बिगड़े से बिगड़े उपदंश के लिए भी अचूक रामवाण है। उन्होंने यह भी बताया था कि एक बार एक सन्यासी की

मददसे ही बनाने में सफल हुए थे और उसीसे उन्होंने वर्षों अपने रोगियों की सफल चिकित्सा की थी। उसके पश्चात् पुनः प्राप्त न कर सका। क्योंकि तनिक दुष्प्राप्य सा है।

प्रयोग इस प्रकार है:—

बरसात की ऋतु में जहां कहीं मेंढकों का जोड़ा मैथुन करता हुआ मिले, उसे पकड़कर मार दें और छायामें पीस कर सुरक्षित रखें, आवश्यकता के समय रोगी को थोड़ी सी औषधि नस्य की भांति सुंघाया करें। बस न किसी खाद्य औषधि की आवश्यकता और न किसी मलहम की। केवल इस नस्य से ही उपदंश रोग जड़मूल से दूर हो जायगा।

पञ्चम

सत्यानाशी बूटी का जड़ का छिलका १ तो०, काली मिर्च ५ नग आधा सेर जल में ठंडाई की भांति घोंट छान कर उसमें ४ तो०, विशुद्ध मधु मिलाकर पिलाया करें। इस प्रकार कुछ ही दिनों के सेवन से रोग जड़मूल से उड़ जायेगा। इसके अतिरिक्त यह सब प्रकार के फोड़े-फुन्सी दाद खुजली आदिके लिए भी एक उत्कृष्ट विषनाशक योग सिद्ध हुआ है और प्रथम श्रेणी का रक्त शोधक भी है। अन्य योगों की भांति विषैले द्रव्यों से सर्वथा रहित है। ऐसे ही उत्कृष्ट और अति सरल योगों के कारण, चिकित्सा जगत में सन्यासी योगीं को विशेष महत्व प्राप्त हुआ है।

ज्वर-वर्णन

ज्वर क्या है ?

चिकित्सकों के मतानुसार 'हृदय' ही हमारे शरीर का राजा है। जब कभी किसी कारणवश हृदय की जलन बढ़ जाती है तो उसका प्रभाव शिराओं द्वारा तत्काल समस्त अंगों तक पहुंच जाता है और वे भी उष्ण होकर अपने २ कार्यों में गाफिल हो जाते हैं और समस्त शरीर का तापमान (Temperature) बढ़ जाता है। इसी को 'ज्वर' अथवा 'ताप' कहते हैं। ज्वरों के असंख्य भेद हैं और अधिकांश मिलते जुलते से होते हैं, जिनका निदान अच्छे वैद्यों व हकीमों के लिए भी दुस्साध्य हो जाता है। अतः नीचे हम कुछ ऐसी विशेष बातों का उल्लेख करते हैं, जिनसे कि ज्वरों के निदान और चिकित्सा करने में न केवल वैद्यों को वरन् जनसाधारण को भी अत्यधिक सरलता होगी।

स्मरणीय बातें

१. ज्वर के रोगी को ऐसे स्थान पर लिटाना चाहिए जहां न अधिक सर्दी हो और न अधिक गर्मी। इसी प्रकार न हवा की अधिकता हो, और न ही हवा की नितान्त कमी हो। हां जब ज्वर उतर कर पसीना

छूट जाय, तो फिर हवा से कोई हानि नहीं होती। ऐसे समय में यदि रोगी कोई कपड़ा आदि ओढ़े हो, तो उसे हटा देना चाहिये।

२. हर प्रकार के ज्वर में हाथ पावों की मालिश रोगी के लिए लाभदायक और सुखकर सिद्ध होती है, चाहे केवल कपड़े से ही शरीर को सहलाया जाय। किन्तु अधिकतर लोग गलत ढंग से मालिश करते हैं, उन्हें ठीक विधि से मालिश करना नहीं आता। ठीक विधि यह है कि मालिश सदैव नीचे से ऊपर की ओर करनी चाहिये। अर्थात् पाव में ऐडी से अगुलियों की ओर करनी चाहिये। दोनों ओर को अर्थात् नीचे ऊपर मालिश करना लाभदायक नहीं होता।

३. यदि रोगी का ज्वर उतर जाने के पश्चात् हड़-फूटन शेष रहे, तो उस समय पाद-प्रक्षालन से काम लेना चाहिए। इस से बहुत लाभ होता है, और रोगी को आराम मिलता है। पादप्रक्षालन की सही विधि 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' के प्रथम भाग में समझा कर लिखी गई है। पाठक गण उक्त पुस्तक में देखने का कष्ट करें। अथवा किसी कुशल वैद्य से पूछलें।

४. ज्वर के लिये बोहरान के दिनों का ध्यान रखना परम आवश्यक है। खेद का विषय है हमारे देश के

अधिकांश वैद्य इसके नाम को भी नहीं जानते और न ही चिकित्सा करते समय बोहरान के दिनों का विचार करते हैं और अज्ञानतावश बोहरान के दिनों में ही पसीना लाने वाली औषधियां, अथवा जुल्लाब दे बैठते हैं, परिणाम-स्वरूप रोगीकी इह लीला समाप्त हो जाती है।

५—जिस दिन ज्वर आए, उसी दिन से गिनना आरम्भ करदें, ताकि बोहरान के दिनों का ठीक पता चल सके।

६—यदि ज्वर १२ बजे से पहिले आया हो तो वह प्रथम दिवस गिना जायेगा और इसके बाद चढ़े हुए ज्वर की गणना दूसरे दिन में होगी। किन्तु बारी का ज्वर जो तीसरे दिन आये वह उसी दिन गिन लिया जायेगा

बोहरान क्या है। बोहरान के दिन किस प्रकार मालूम होते हैं और उनके अनुसार किस प्रकार चिकित्सा करनी चाहिए आदि २ बातें 'देहाती अनुभूत योग-संग्रह' के द्वितीय भाग में सविस्तार वर्णित हैं और हर वैद्य तथा जनसाधारण को उनकी जानकारी होना अत्या-

वश्यक है। क्योंकि इसकी जानकारी न होने पर कभी २ बहुत ही भयङ्कर परिणाम होता है। साधारण से ज्वर में हा कभी २ रोगी की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सकों के अनुभव

अब हम आपको प्राचीन चिकित्सकों के कुछ प्रमुख अनुभव बताते हैं, जो कि आपको चिकित्सा करने में बड़े काम के सिद्ध होंगे।

१-यदि अपस्मार, आमवात, छोटे जोड़ों की पीड़ा, खुजली, चम्बल आदि के रोगी को चौथिया ज्वर आने लगे, तो वह उपरोक्त रोगों से मुक्त हो जाता है।

२-कफज ज्वर की अवधि कम से कम १ वर्ष और अधिक से अधिक १२ वर्ष तक होती है।

३-चौथिया ज्वर यदि श्रावणी के अन्त में आने लगे, तो उसकी अवधि बहुत लम्बी होती है।

४-ज्वर स्वयं एक रोग होते हुए भी अनेक रोगों से मुक्त कराने का प्रभाव भी रखता है।

ज्वर रोगी की मृत्यु के लक्षण

यूं तो किसी की मृत्यु के बारे में दावे के साथ यह कहना कि अमुक व्यक्ति इतने दिन में मर जायगा, मूर्खता

ही है, क्योंकि इसका सही पता तो उस जगदीश्वर के सिवा अन्य किसी का भी नहीं है तथापि विद्वान् चिकित्सकों के दीर्घ अनुभव ने कुछ ऐसे लक्षण खोज निकाले हैं, जिनके प्रगट हो जाने पर रोगी का जीवन संकटापन्न अवश्य समझ लेना चाहिए। अनुभव बताता है कि ऐसे रोगी कम ही देखे गए हैं, जो कि इन लक्षणों के उपरान्त भी जीवित रह सकते हों।

वे लक्षण इस प्रकार हैं :—

१—यदि तीव्र ज्वर में अतिसार और प्रवाहिका न होने के अतिरिक्त रोगी की काच निकल पड़े तो, समझ लीजिए कि रोगी बस संसार में कुछ दिन का ही मेहमान और है।

२—यदि तीव्र ज्वर में रोगी की ग्रीवा तथा सिर से ठंडा पसीना निकले, तो उस रोगी को भी मरणोन्मुख समझ लेना ही उचित है।

३—ज्वर का रोगी यदि अतिसार की अधिकता से शिथिल हो जाय और ज्वर में किसी प्रकार की कमी प्रकट न हो और न ही आराम व चैन प्रतीत हो, तो ऐसे रोगी के जीवन से निराश हो जाना चाहिए।

४—यदि तीव्र ज्वर में रोगी का मूत्र नितान्त श्वेत वर्ण

व तरल हो और फिर एकदम गाढ़ापन आ जाय, किन्तु रंगत वैसी ही श्वेत रहे, तो समझ जाइए कि वह रोगी किसी प्रकार भी बच नहीं सकता है।

५ - यदि ज्वर रोगी को कठिन प्रकार की वमन और प्रवाहिका हो जाय और साथ ही होश हवास भी स्थिर न रहे, तो उसका जीवन संकट में होता है। विशेषकर उसकी त्वचा स्पर्श करने से कहीं शीतल और कहीं उष्ण प्रतीत हो, एवम् त्वचा की रंगत कहीं पीत व कहीं जर्द हो। इसी प्रकार वमन और रेचन में भी भिन्न भिन्न प्रकार के रंग दृष्टिगोचर हों, तो उस दशा में रोगी किसी प्रकार भी बच नहीं सकता है।

६—यदि ज्वर-रोगी के हृदय की धड़कन सहसा बढ़ जाय और हिचकियां भी आने लगें तथा बिना किसी कारण विशेष के कठिन कोष्ठ बद्धता हो जाय, तो ये सब बातें सूचना देती हैं कि अब रोगी ससार से जाने की तैयारी कर रहा है।

७—यदि तीव्र ज्वर के रोगी को बोहरान आए बिना ही एकदम ज्वर उतर जाय और शरीर बर्फ के समान ठण्डा हो जाय तथा नाड़ी की गति अति क्षीण हो जाय, तो ऐसे रोगी के स्वस्थ होने की कोई आशा नहीं रह जाती।

८---यदि तेज ज्वर में रोगी के अंडकोष सहसा ऊपर की ओर चढ़ जाए, तो ऐसे रोगी के जीवित रहने की आशा छोड़ देनी चाहिए।

६---यदि ज्वर रोगी की जीभ सहसा काली पड़ जाय और बिना किसी विशेष कारण के टट्टी भी काले रंग की आए तो ऐसे रोगी को शीघ्र ही मृत्यु का पंजा आ दबोचता है।

१०---यदि ज्वर रोगी की सूंघने की शक्ति नष्ट हो जाय, यहाँ तक कि दीपक बुझाने पर उसकी गंध भी न आए और सुगंधि दुर्गन्धि का ज्ञान ही लोप हो जाय तो उसका जीवित रहना असम्भव है।

ज्वरों के भेद

ज्वरों के भेद तो असंख्य हैं, जिनमें से प्रमुख भेद ये हैं:---पित्तज ज्वर, कफज ज्वर, वातज ज्वर, विषम ज्वर, तिजारी, चौथिया, मन्थर ज्वर आदि २। चूंकि ज्वरों के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सा ही ठीक रहती है, क्योंकि प्राचीन वैद्यों ने एक से एक उत्तम योग ग्रन्थ में लिख दिए हैं। 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में भी ज्वरों का विस्तृत वर्णन और हर प्रकार के ज्वर की सफल चिकित्सा के योग अंकित हैं। अतः आपको इस पुस्तक की सहायता अवश्य लेनी चाहिए। हां जो भाई आयुर्वेदिक चिकित्सा

के मूल्यवान और परिश्रम से बनने वाले योग सेवन करने से असमर्थ हों, उनके लिए हमारी लिखी हुई 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' पुस्तक अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगी, क्योंकि इसमे पेड़ो की छालो, जड़ों, पत्तिया आदि से ही हर प्रकार के ज्वरों को दूर करने के अति सरल और लाभकारी योग संग्रह किए गए हैं।

चूंकि विविध प्रकार के ज्वरों के लिए उत्तम सन्यासी प्रयोग हमें प्राप्त नही हो सके, अतः हम ज्वरो के सम्बन्ध मे पाठकों की कुछ भी सेवा न कर सके। इसका हमें खेद अवश्य है, किन्तु साथ ही हम उन्हें खोजने मे पूर्णरूपेण प्रयत्नशील हैं और यदि सम्भव हुआ, तो पुस्तक के आगामी संस्करणों में हम पाठकों को अवश्य भेंट कर देंगे। हां पुस्तक लिखने के दिनो में ही मंथर ज्वर का एक अत्युत्तम सन्यासी प्रयोग अवश्य प्राप्त हो गया, अतः इस रोग का संक्षिप्त सा निरख, लक्षण आदि लिख कर यह प्रयोग पाठकों को भेंट किया जा रहा है। अन्यान्य ज्वरों के लिए अभी आप पूर्वोक्त पुस्तकों की सहायता ही प्राप्त करें।

मंथर-ज्वर

इसको डाक्टर लोग अंग्रेजी में 'टाइ-फाइड फीवर' कहते हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा ग्रन्थों में इसका कहीं २

वर्णन मिलता है और यूनानी चिकित्सा में तो इसका नाम भी नहीं पाया जाता है। इसका एकमात्र कारण यही प्रतीत होता है कि उस युग में यह ज्वर पाया ही नहीं जाता था, किन्तु आजकल इतना अधिक बढ़ गया है कि लाखों व्यक्ति प्रतिवर्ष इसकी भेंट चढ़ जाते हैं। ईश्वर ही इस रोग से बचाए।

मन्थर-ज्वर के कारण

प्रायः यह ज्वर गर्म पदार्थों के अधिक सेवन से अथवा धूप में अधिक चलने फिरने से हो जाता है। कभी-कभी शारीरिक दुर्बलता के कारण भी मनुष्य इसके चंगुल में पड़ जाता है।

मन्थर-ज्वर की पहिचान

ज्वर उत्पन्न होकर तृषा बढ़ जाती है, होठों पर शुष्क पपड़ी सी जमी रहती है। रोगी प्रायः चौंक जाया करता है। मुख का स्वाद कड़ुवा और खराब हो जाता है। भूख नितान्त बन्द हो जाती है और सबसे बड़ी बात यह है कि रोगी अत्यंत कृशकाय हो जाता है और प्रायः नेत्र मूँदे चुपचाप लेटा रहता है।

तीन चार दिन तक यही दशा रहती है, तदुपरान्त पहिले ग्रीवा पर, फिर छाती पर मोती के दानों जैसी फुन्सियाँ दिखाई देती हैं। कभी २ एक, दो अथवा तीन

सप्ताह बाद दाने निकलते हैं। ज्वर हर समय बना रहता है, किन्तु अपेक्षाकृत प्रातःकाल तनिक कम होकर संध्या समय बढ़ जाता है। और यदि दाने लोप हो जायें, तो रोगी अत्यन्त बेचैन होता है, वरन् कभी २ तो मन्थर-ज्वर के रोगी की मृत्यु ही ऐसे समय हुआ करती है जब कि दाने कम हो जाते हैं।

बस अब हम अपने प्रिय पाठकों को वह जादुई प्रभाव सन्यासी प्रयोग अंकित करते हैं, जो कि मन्थर ज्वर के लिए अपूर्व चमत्कारी है।

चमत्कारी प्रयोग

रुद्राक्ष, जिसको माला बनाकर साधु सन्यासी व पंडित लोग गले में धारण किए रहते हैं, और चित्रक दोनों को पानी में घिस कर रोगी को पिलायें। इसी प्रकार २-३ बार प्रतिदिन पिलाने से शीघ्र ही दाने बाहर निकल आते हैं और रोगी को स्वास्थ्य लाभ हो जाता है।

उक्त प्रयोग के विषय में देहाती फार्मेसी के वैद्य जी ने बताया था कि अब से कई वर्ष पूर्व एक बार राजस्थान की किसी रियासत का राजकुमार मन्थर ज्वर में ग्रस्त हो गया था (रियासत का नाम तो मुझे स्मरण नहीं रहा) संयोगवश एक साधु यह सुनकर महल में पधारे और राजकुमार की दशा देखकर तुरन्त उन्होंने गले में से माला

उतारी और उपरोक्त विधि से पीसकर उसे २-३ बार पिलाई। ईश्वर कृपा से दूसरे दिन प्रातःकाल ही दाने फूट निकले और कुछ दिनों में ही राजकुमार स्वस्थ हो गया। उस समय लोगों ने इसे महात्मा जी के तेज का चमत्कार समझा, किन्तु बाद में किसी सन्यासी ने बताया कि यह सन्यासियों का एक गुप्त प्रयोग है, जोकि मन्थर-ज्वर के लिए बड़ा हितकर है। तदनन्तर इसकी परीक्षा असंख्य रोगियों पर हुई और सदैव सफल होता रहा है। आशा है कि पाठकों के लिए यह अकेला प्रयोग ही लाख रुपए का सिद्ध होगा।

हर्ष-समाचार

हर्ष का विषय है कि जब हम यह पुस्तक पूरी लिख चुके और पुस्तक छपने के लिए प्रेस में जा ही रही थी कि अकस्मात् एक परम मित्र वैद्य जी की अनुकम्पा से ज्वरों के कुछ प्रशंसित सन्यासी प्रयोग और प्राप्त हो गए। चूंकि हम ज्वर प्रकरण में एक प्रयोग, जो कि हमें प्राप्त हो सका था, ही लिखकर पाठकों से क्षमा याचना कर चुके थे और साथ ही यह आश्वासन भी दिया था कि ज्यों ही कुछ और योग प्राप्त हो जायेंगे, त्योंही वह भी भेंट कर दिए जायेंगे, अस्तु मैं भी उनकी खोज में लगा ही था कि अकस्मात् पाठकों के सौभाग्य से निम्नांकित प्रयोग पुस्तक

छपने के पूर्व ही प्राप्त हो गए। कबीरदास जी ने तो कहा ही है—कि 'जिन खोजा, तिन पाइयां' अर्ह सचमुच सच्ची लगन कभी निष्फल नहीं जाती। हां तो नवीन प्रयोग ज्वर प्रकरण के अन्त मे जोड़ देता हूँ, पाठकगण आवश्यकता के समय इनसे लाभ उठाएंगे।

कुछेक अति सुगम व लाभकारी सन्यासियाना चुटकुले

प्रथम

हमारे मित्र ने बताया कि सन्यासियाना चुटकुला तो बड़ा प्रसिद्ध है और हर गाव का आदमी इसे जानता है। क्योंकि तिजारी के ज्वर में यह बड़ा ही लाभदायक सिद्ध होता है। प्रायः एक बार मे ही तिजारी का ज्वर दूर हो जाता है।

प्रयोग इस प्रकार है :—

मकड़ी का श्वेत जाला १ रत्ती लेकर गुड़ में लपेट कर ज्वरागमन से तीन घन्टे पूर्व रोगी को खिला दें। प्रथम तो एक ही मात्रा में ज्वर रुक जायगा। यदि पहिली बार में न रुके, तो दूसरी बार पुनः दें।

द्वितीय

धतूरे की कोंपल का डेढ़ पत्ता गुड़ में लपेट कर बारी

आने से दो घंटा पहले निगलवाएं। ज्वर अवश्य ही रुक जायगा। कई बार का परीक्षित योग है।

तृतीय

यह प्रयोग क्या है, बस एक जादू है और जादू भी ऐसा, जैसा कि अभी तक न आपने सुना ही होगा और न देखा ही होगा। वह जादूई चमत्कार क्या है :——कि अंगुली पर औषधि बांध दी जाए और ज्वर उतर गया। यह एक विशेष सन्यासियाना प्रयोग है और हमारे एक मित्र वैद्य का कई बार का परीक्षित है।

प्रयोग यह है :——

३ नग लाल मिर्च पानी के साथ खूब बारीक पीसलें और बाएं हाथ की अनामिका अंगुली पर लेप कर ऊपर से मलमल के भीगे कपड़े की पट्टी लपेट दें तथा इस पट्टी को निरन्तर पानी से तर रखें। इससे अंगुली में टीसें चलनी प्रारम्भ हो जायेंगी, किन्तु इस विधि के एक बार के प्रयोग से ही, नचेत् अधिक से अधिक दूसरी बार में निश्चय ही बारी रुक जाएगी। अंगुली पर कम से कम ज्वरागमन से दो घंटे पूर्व लेप करना चाहिए।

चतुर्थ

उपरोक्त प्रयोग के अनुसार ही यह प्रयोग भी जादू

से कम नहीं और भाई सन्यासियों के प्रयोग तो होते ही ऐसे हैं, तभी तो लोग साधुओं के चमत्कार को समझ नही पाते और आश्चर्य चकित रह जाते हैं।

जिस दिन तिजारी की बारी आने को हो, उस दिन हुलहुल बूटी को कूट कर और टिकियाँ बना कर बाहु के उस स्थान पर बांधें, जहां टीका लगाया जाता है। थोड़ी देर में वहां छाला पड़ जायगा किन्तु ज्वर उसी दिन रुक जायगा। यदि एक बार में न रुके तो अगली बारी के दिन पुनः बाँधें छाला दो चार दिन में स्वतःही ठीक हो जाएगा।

पचम

मै अपने उन मित्र महोदय को किन शब्दों में धन्य-वाद दूं, जिन्होंने ठीक अवसर पर ऐसे २ उत्तम सन्यासी प्रयोग भेंट किए है कि जिनकी समता के प्रयोग कम ही प्राप्त होते है और इस प्रकार उन्होंने न केवल मुझ पर अपितु हमारे प्रिय पाठको पर भी भारी अनुग्रह किया है। अब तनिक पाठकगण इस आश्चर्यजनक प्रयोग को भी देखलो :—

कान की मैल को रुई में लथपथ करके एक बत्ती बना लेवें और उनको दीपक में रख कर तिलों का तेल उसमें जलाएं और प्रसिद्ध विधि से काजल तैयार करके रोगी की आंखों में डाला करें। तिजारी का ज्वर दूर होजाएगा।

षष्ठम

प्रायः घरों में तीन टांगों वाला एक कीड़ा पाया जाता है उसे गुड में लपेट कर बारी आने से दो घण्टे पूर्व रोगी को खिला दें। ज्वर कदापि न चढ़ेगा और उसी दिन से बिल्कुल छूट जायगा किन्तु रोगी को इसका भेद ज्ञात नहीं होना चाहिए कि उसे क्या औषधि खिलाई गई है ? अन्यथा कोई लाभ न होगा। दूसरे रोगी को यह आदेश दें कि गुड की उस गोली को एकदम निगल जाए। गोली को दाँतों से चबाना नहीं चाहिए।

राजयक्ष्मा

साधारण लोगों की भाषा में इस रोग का नाम 'तपेदिक' है। दिक का अर्थ है पतला होना। चूंकि इसमें रोगी दिन प्रतिदिन कृशकाय होता जाता है; अतः इसका नाम 'तपेदिक' पड गया।

आजकल यह रोग हमारे देश में बहुत फैल रहा है। प्रति वर्ष लाखों प्राणी इसकी बलि चढ़ जाते हैं। यह बड़ा ही भयंकर और दुस्साध्य रोग है, एक बार जिस रोगी को लग जाता है, उसका पीछा जान लेकर ही छोडता है। यही नहीं, यह रोग संक्रामक भी है, अतः कभी २ तो एक के बाद दूसरे को लगता हुआ सारे परिवार का ही बलि-

दान लेकर छोडता है। इस रोग के कारण ही प्रति वर्ष हमारे देश के सहस्रों घर श्मशान बन जाते हैं।

किंवदन्ती प्रसिद्ध है कि 'तपेदिक, कविता और दुर्भाग्य का संसार में कोई इलाज नहीं।' यदि रोग की प्रारम्भिक दशा में ही इसकी चिकित्सा हो जाय, तो कई एक भाग्यशाली इसके चगुल से छुटकारा पा जाते हैं, अन्यथा जब यह रोग द्वितीय या तृतीय श्रेणी तक जा पहुंचता है, तो उस रोगी का भगवान ही रक्षक है। उस दशा में उत्तमोत्तम औषधियां भी निष्फल जाती है।

आजकल हमारी सरकार की ओर से हर शहर में एलोपैथिक चिकित्सा के नव अनुसन्धानित बी. सी. जी. के टीके मुफ्त लगाए जा रहे हैं। बी. सी. जी. तपेदिक को रोकने के लिए अब तक के समस्त डाक्टरी अनुसन्धानों में सर्वाधिक सफल हुआ है। अतः हम हर भाई से निवेदन करेंगे कि वह अपने परिवार के हर सदस्य को बी. सी. जी. के टीके अवश्य लगवाए, ताकि हमारी अपनी सरकार इस भयंकर रोग को देश से भगाने में सफल हो सके और प्रति वर्ष जो लाखों प्राणी इसकी भेंट चढ़ जाते हैं, उनकी प्राण रक्षा हो। इतना ही नहीं, हमारी सरकार ने मुख्य २ स्थानों पर तपेदिक के विशेष चिकित्सालय और सैनीटोरियम भी स्थापित किए है, अतः जब कोई आपका पारि-

वारिक सदस्य, ईश्वर न करे, इस दुष्ट रोग का शिकार हो जाय, तो उसे तत्काल किसी सरकारी चिकित्सालय अथवा सैनीटोरियम में भर्ती करा दें। ताकि रोग की प्रारम्भिक दशा में ही उसकी समुचित चिकित्सा हो सके।

किन्तु शहरों से दूर हमारे वे ग्रामवासी भाई, जिन्हें ये सुविधाएं प्राप्त न हो सकें, वे हमारे इन अति प्राचीन सन्यासियों के गुप्त योगों से लाभ उठा सकते है। इसके अतिरिक्त 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में भी इस रोग के उत्तमोत्तम आयुर्वेदिक प्रयोग अंकित हैं, अतः आवश्यकता के समय उनसे लाभ उठाने में भी कभी न चूकें। जहाँ आपको तनिक भी सन्देह हो कि तपेदिक के लक्षण प्रकट हो रहे हैं, तो उसी समय उसकी रोक थाम की व्यवस्था प्रारम्भ कर दें। अब हम आपको प्रथम तपेदिक के लक्षण बताते हैं, जिनसे आप आसानी से इस रोग की पहिचान कर सकते हैं।

राजयक्ष्मा की पहिचान

इस रोग में सबसे पहिले रोगी को इतना हल्का ज्वर होता है कि रोगी स्वयं उसका अनुभव नहीं करता। केवल नाडी तनिक तेज चलने लगती है और दिन प्रतिदिन रोगी का शरीर दुर्बल होता जाता है। प्रायः दोपहर के उपरान्त तबियत सुस्त रहने लगती है और प्रातःकाल

पूर्ण आराम हो जाता है। भोजन करने के पश्चात् शरीर में गर्मी बढ़ जाती है। यदि भीतरी अवयव में कहीं शोथ होगा, तो सर्दी अनुभव होकर रोगी को ज्वर चढ़ेगा और कुछ समय पश्चात् पसीना आकर ज्वर उतर जायगा। कई रोगिया के गालों पर घेरे भी पड़ने लगते हैं और हाथ के तलवे जलते रहते हैं। रोगी की भूख दिन दिन घटती जाती है। शरीर दुर्बल होता हुआ अतिसारों में ग्रस्त हो कर रोगी स्वर्गगामी हो जाता है। हा इस रोग का एक विशेष लक्षण प्रायः देखने में आता है कि रोगी के कानों के रूप में एक विशेष परिवर्तन हो जाता है, जिससे रोगी का माथा कच्चा सा होकर कान खड़े हो जाते हैं।

अब हम आपको राजयक्ष्मा अर्थात् तपेदिक का एक ऐसा सरल और उच्च प्रभावक योग भेंट करते हैं, जैसा कि अन्यत्र मिलना यदि सम्भव नही तो कठिन अवश्य है।

विशेष सन्यासी रहस्य

यह प्रयोग देखने में अति घृणित और व्यर्थ सा प्रतीत होता है किन्तु परमलाभदायक है। नागपुर के एक वैद्य महाशय कई साल से उसे अपने रोगियों पर बरत रहे हैं और सदैव सफलता प्राप्त करते हैं। किन्तु सदैव उस दोष को छुपाये हुए रखते हैं।

७ प्रयोग इस प्रकार है :—

ऊंट का मूत्र प्रातःकाल के समय प्राप्त करके बोतल में भर रखें और रोगी को कोई अर्क बतला कर पीने का आदेश करें। प्रातःकाल शौचादि से निवृत्त होकर रोगी प्रतिदिन १ तोला यही अर्क पीता रहे। आशा है कि एक बोतल समाप्त होते २ रोग भी समाप्त हो जायेगा। यह एक अति रहस्यमय योग है, रोगी को इसका भेद हरगिज ज्ञात न होने दें।

द्वितीय सन्यासी प्रयोग

पं० रामजीलाल 'रत्न' अलीगढ निवासी ने मेरे एक मित्र को बताया कि वे एक बार दिक के राग में ऐसे ग्रस्त हुए कि लोगों ने ही नहीं अपितु हकीम डाक्टरों ने भी असाध्य बता दिया। एक दिन एक फकीर ने कहा कि नित्य प्रति कब्रिस्तान का चक्कर लगा आया करो। मैने उनके आदेशानुसार गिरते पड़ते जाना प्रारम्भ किया। एक दिन मै थकावट से परेशान था, तब वही फकीर फिर आए और कहने लगे—बेटा घबराओ नहीं बाजार से कद्दू लाकर उसके छिलके निकाल कर फांकें बनालो और खांड लगा कर खाया करो। मैंने तदनुसार ही किया और कुछ ही दिनों में मेरे स्वास्थ्य में असाधारण परिवर्तन होने

लगा। सभी हकीम डाक्टर तक चकित रह गए और तब से आज तक यह रोग कभी मेरे पास तक न फटका।

विशेष निवेदन

चूंकि हमें इस रोग के केवल दो ही सन्यासी प्रयोग प्राप्त हो सके हैं, अतः वही पाठकों को भेंट कर दिये गए। और यह रोग बड़ा ही भयानक और दुस्साध्य है, अतः मोटे मोटे योग लिख देना मै उचित नहीं समझता। मैंने तो इस पुस्तक में आरम्भ से अन्त तक ऐसे ही प्रयोग लिखने का प्रयास किया है जो कि अनेक परिचित विद्वान वैद्यों, हकीमों द्वारा प्रशंसित है अथवा जिनका चमत्कार स्वयं मैंने अपनी आंखों से देखा है।

महामारी

यह वह घातक रोग है, जिसे आप लोग अपनी भाषा में प्लेग के नाम से जानते हैं। यह रोग भी प्रतिवर्ष हजारों देश के सपूतों को उनके कुटुम्बी जनों से छीन ले जाता है। कहीं २ तो परिवार के परिवार इसके शिकार हो जाते हैं। आधुनिक डाक्टरों के मतानुसार इस रोग का कारण एक प्रकार का कीटाणु बताया जाता है, जो कि रोगी की गिल्टियों अथवा शोथयुक्त ग्रंथियों में पाये जाते हैं। डाक्टरों का अनुसन्धान है कि मनुष्य को यह रोग

प्लेग वाले चूहों के पिस्सुओं के काटने से होता है और इसी कारण सरकारी स्वास्थ्य विभाग के कार्यकर्त्ता चूहों को मारने का उपाय किया करते हैं।

प्लेग के पूर्व लक्षण

इस रोग में पहिले रोगी के सिर और कमर तथा सन्धियों मे हल्की पीड़ा होने लगती है। मस्तिष्क में थकावट सी अनुभव होती रहती है। नींद और भूख नितान्त कम हो जाती है। शरीर में आलस्य तथा सुस्ती रहती है और फिर सहसा कम्प ज्वर चढ़ जाता है। प्यास बहुत अधिक लगती है। जी सदैव मिचलाता रहता है और वमन भी होती है।

गिल्टी कब और कहाँ उत्पन्न होती है ?

ज्वर हो जाने के दो तीन दिन पश्चात् ग्रीवा या बगल अथवा रान की जड़ या कान की लौ के पीछे ग्रंथियों में किसी स्थान पर शोथ होकर गिल्टी निकल आती है। जिस में अत्यधिक पीड़ा और दाह होती है। तथा दो तीन दिन में पीप पड़ जाती है। रोगी के चेहरे पर मुर्दनी छा जाती है आखें गढ़ो में धस जाती हैं और कभी-कभी रोगी के शरीर पर नीले २ धब्बे भी पड़ जाते हैं।

यह रोग भी हैजा, तपेदिक आदि की भांति ही भय-

ङ्कर रोग है अतः इसकी चिकित्सा में किसी प्रकार का आलस्य अथवा उपेक्षा हानिकारक सिद्ध होती है। नीचे हम एक अति विशेष सन्यासी योग आपको भेंट कर रहे हैं जो कि अक्सीर सिद्ध होता है प्लेग जैसे भयङ्कर रोग के लिए भी हम छोटे मोटे योग लिखना उचित नहीं समझते। हा निम्न प्रयोग अनेक वैद्य तथा डाक्टरों का पूर्ण अनुभूत और प्रशंसित योग है। आशा है कि आवश्यकता के समय पाठकगण इससे लाभान्वित होंगे। नचेत् 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' व 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' नामक पुस्तकों की सहायता लें।

प्लेग की सन्यासी अक्सीर

पीपल १ पाव और शोरा आधा सेर। दोनो को अति सूक्ष्म पीस कर मिलालें और कढाई में डालकर ऊपर १०-१५ आक के पत्ते रखकर ढक दें। फिर नीचे आग जलावें। जब भस्म सा होजाय तो नीचे उतार कर बारीक पीस लें तथा उसके बीचोंबीच १ तो० संखिया की डली रख कर नीचे आग जलावें। यदि बीच में से धुआं निकले तो इसी दवा की चुटकी डाल कर उसे बन्द करदें। इस कार्य के लिए थोड़ी सी दवा पहिले ही बचा लेनी चाहिये। जब धुआं बिल्कुल बन्द हो जाय, तो उतार लें और उसमें दो तोला नौशादर तथा दो तोला चोआ सज्जी मिला कर

सूक्ष्मातिसूक्ष्म पीसलें। बस औषधि तैयार हो गई। इसको सेवन विधि यह है :—

पहिले प्लेग की गिल्टी पर उस्तरा लगा कर अर्थात् हल्का सा नश्तर लगा कर थोड़ी सी दवा उस पर मल दें, इसी प्रकार दिन में तीन बार मलें। इससे गिल्टी के अन्दर से पानी सा द्रव्य निकलेगा और रोगी को चेतना आकर स्वास्थ्य लाभ हो जायेगा। यह सन्यासियों का एक विशे पातिविशेप योग है, जो कि प्लेग के अतिरिक्त सर्पदंश और पागल कुत्ते के काटे पर भी परम लाभदायक सिद्ध होता है।

पुरुषों के गुप्त रोग

परमात्मा की बनाई हुई इस अद्भुत सृष्टि में सब से उत्तम कृति मनुष्य ही है और यूं तो भगवान ने ससार में प्रायः सभी जानवरों और पक्षियों तक को जोड़े के साथ उत्पन्न किया है। ऊँट का जोड़ा ऊटनी, हाथी का जोड़ा हाथनी, और कबूतर का कबूतरी आदि। किंतु मनुष्य का जोड़ा भी स्त्री के रूप में उसके सर्वथा अनुरूप ही बनाया है। जोड़े बनाने के साथ ही उस कुशल कलाकार ने एक दूसरे के हृदय में परस्पर प्रेम, आकर्षण और सम्मिलन की

भावनाएं भी उत्पन्न कर दी हैं, ताकि दिन प्रतिदिन सृष्टि बढ़ती ही रहे। स्त्री सौन्दर्य और विलास की खान है, यह ठीक है किंतु क्या आपने सोचा कि इस अपूर्व आनंदस्रोत का मूल उद्गम कहाँ है? वह आपके ही शरीर में स्थित है। संसार के इन तमाम सुखों का अस्तित्व मनुष्य के 'वीर्य' पर ही निर्भर है। इसके बिना न तो पुरुष के लिए ही कोई आनन्द शेष रह जाता है और न ही स्त्री के लिए। साथ ही सृष्टिवृद्धि का मूल प्रयोजन भी समाप्त हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वीर्य ही हमारे जीवन का सबसे बहु-मूल्य कोष है और इसकी रक्षा परमावश्यक है।

किन्तु आज के संसार में तनिक आंख उठा कर देखिये तो ज्ञात होगा कि भगवान की इस अनमोल देन का मनुष्य कैसा कैसा दुरुपयोग कर रहा है? यही कारण है आज का संसार कलह, युद्ध, पाप और भ्रष्टाचार आदि का क्षेत्र बना हुआ है और हमारा जीवन नरक से भी बदतर हो गया है। खेद का विषय तो यह है कि संसार के समस्त देशों का गुरु भारत आज इन बुराइयों में सबका गुरु बन रहा है। इसका एकमात्र कारण हमारी अज्ञानता ही है। अब से कुछ ही सौ वर्ष पूर्व का इतिहास उठा कर देखिये कि हमारी देश की मानवता क्या थी? हमारा पुरुषत्व और पराक्रम कैसा था कि सारा संसार लोहा मान गया था और

उस काल में स्वर्ग में और क्या था जो हमारे देश में न था। लोग समस्त सुख वैभवों से पूर्ण स्वर्गीय जीवन का आनन्द उपभोग करते थे और आज हमारे देश के लोग भयङ्करतम रोगों, भुखमरी, पापाचार आदि में ग्रस्त होकर पशुओं से भी गया बीता जीवन यापन कर रहे हैं, निस्सदेह हमारे प्रिय भारत देश की दुर्दशा आज खून के आंसू रोने योग्य हो रही है, फिर भी आश्चर्य है कि लोग आंखें बन्द किए अवनति के इस गर्त की ओर दौड़े ही जा रहे हैं और कभी पल भर को भी यह विचार नहीं करते कि इसका परिणाम कितना भयङ्कर होगा।

यौवन हमारे जीवन का वह हरा भरा उद्यान है जिसमें बसन्त की बहारें किलोलें किया करती हैं। संसार का कण-कण खिले हुए पुष्प के समान सुन्दर दिखाई देता है, चारों ओर सुन्दरता ही सुन्दरता दृष्टिगोचर होती है, लेकिन वह 'यौवन' आज हमारे लिए एक सपना बन कर रह गया है। आज हमारा यौवन कुटेवों, दुर्व्यसनों आदि के कारण प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन और नपुंसकता आदि विविध रोगों का घर बन गया है। हमारे चेहरे पीले और मुर्झाए हुए, आंखें गढ़ों में धंसी हुई, शरीर नितान्त अशक्त दृष्टिगोचर हो रहा है और संसार में हमारे लिए कोई रस नहीं रह गया, कोई सुख नहीं रह गया। क्यों?

केवल इसीलिए कि हम अज्ञानतवश पथ भूल कर हस्त-मैथुन, अप्राकृतिक मैथुन आदि मे फस कर यौवन के अनमोल कोष 'वीर्य' को नाली मे बहा चुके हैं। हमारे देश के प्रिय नवयुवक भाइयो ! अब भी समय है जरा होश सभालो, तनिक चेत जाओ, अन्यथा यदि इसी प्रकार आंखें बन्द किए कुमार्ग पर चलते गए तो इतना भयङ्कर परिणाम होगा कि जिसकी कल्पना मात्र ही बडे २ धीर वीरों का कलेजा दहला देती है, अस्तु यदि जीवन का सच्चा सुख उठाना चाहते हो तो इन कुटेंवों से बचो, यदि फस गए हो तो छोड़ दो और अपने अनमोल वीर्य की रक्षा करो। संसार के सारे सुख तुम्हारे चरणो में आ गिरेंगे।

यह तो रही नवयुवकों की बात ! अब तनिक हमारे पाठकगण पूर्ण युवा लोगो की ओर भी तनिक ध्यान दें। स्वयं नव यौवन काल मे ही हस्त मैथुन और अप्राकृतिक मैथुन जैसी कुटेवो मे फस कर शक्ति, नष्ट कर चुके, जननेन्द्रिय को शिथिल और व्यर्थ कर चुके, साराश यह है कि यौवन आते आते यौवन समाप्त कर चुके। तत्पश्चात मा-बाप ने शादी कर दी। भोली-भाली, परम पवित्र देवी तुल्य वधू आई तो पति महाशय को पुरुषत्व से सर्वथा हीन पाया। बेचारी अबला लज्जावश न किसी से कुछ कह सकती है न शिकायत कर सकती है। उसके यौवन के सारे

अरमानों और उमङ्गों पर तुषारापात् हो गया, किन्तु फिर भी चुप रही। दो चार वर्ष तक जब पुत्र न हुआ तो सारा दोष उस भोली भाली बेजुबान गाय के सिर मढ़ दिया गया और दूध की मक्खी के समान निकालकर फेंक दिया गया उधर पति महोदय भटपट दूसरा विवाह करने को उद्यत हो गये। भला सोचिए कि यह बेचारी अबलाओं पर कितना घोर अत्याचार है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि आजकल ९० प्रतिशत सन्तानहीनों के पुरुषों की वीर्य विकृति के कारण ही सन्तान नहीं होती। अनुभवी चिकित्सकों ने बताया है कि पुरुष और स्त्री के वीर्य के अन्दर ऐसे कीटाणु (Spermatoza) पाए जाते हैं जो कि गर्भ स्थिति के पश्चात् बढ़ते रहते हैं और कुछ कालोपरांत एक मास के लोथड़े के समान हो जाते हैं। यदि वीर्य के कीटाणु स्त्री के रज कीटाणुओं से अधिक बलवान हों तो पुत्र अन्यथा पुत्री उत्पन्न होती है।

इन कीटाणुओं को अणुवीक्षण यन्त्र (Microscope) द्वारा देखा जाता है। जिन पुरुषोंके वीर्य के कीटाणु उनकी कुटेवों के कारण मर जाते हैं, उनका वीर्य कदापि संतान उत्पन्न करने योग्य नहीं रह जाता। भला सोचिए कि इस में उन बेचारियों का क्या दोष ? मैं पुनः अपने युवा भाइयों से निवेदन करूंगा कि इन बेचारी बेजुबान गायों के

जीवन का यह कठोर निर्णय करने से पूर्व अपनी परीक्षा भलीभांति करा लें, और यदि कोई रोग हो, तो उसकी समुचित चिकित्सा कराएं। मेरा अभिप्राय यह कदापि नहीं, कि स्त्रियों में कोई दोष होता हो नहीं। अवश्य होते हैं, और उन पर भी आगे चल कर मै प्रकाश डालूंगा, किन्तु प्रायः लोग स्वय को दूध का धुला देवता समझ कर स्त्रियों पर ही सारा दोष मढ देते हैं, यह अनुचित है।

अब आपने भली भाँति समझ लिया होगा कि जिन व्यक्तियों का वीर्य विकृत हो जाता है, उनके प्रथम तो सन्तान होती ही नही, और यदि होतो भी है, तो अत्यन्त दुर्बल और रुग्ण ! वीर्य विकृति के कारण तो अनेक होते है, किंतु प्रमुख कारण है :– हस्त मैथुन, अप्राकृतिक मैथुन और मैथुनाधिक्य। इन्ही तीन मुख्य कारणों के विश्व व्यापी हो जाने से अनुमानतः ७५ प्रतिशत लोग प्रमेह, स्वप्न दोष, शीघ्रपतन, और नपुंसकता आदि भयंकर रोगों में ग्रसित हो रहे हैं। इन तीन प्रमुख कारणों में भी सर्वाधिक हानिकारक 'हस्त मैथुन' है, जिसका हमारे विविध अङ्गों और जीवन पर क्या कुप्रभाव पड़ता है, इस पर हम थोड़ा सा प्रकाश डालते हैं।

हस्त मैथुन का कुपरिणाम

हस्त मैथुन का अर्थ है—हाथ से वीर्य नष्ट करना। यह कुटेव जब एक बार किसी को लग जाती है, तो उसे छोडना दुष्कर हो जाता है। क्योंकि हाथ के रगड़ के कारण पठ्ठे कमजोर हो जाते है, और उनके बार २ के तनाव से मनुष्य बार २ इस अपराध को करता है। बहुत से लोग इसके दुष्परिणाम से परिचित होकर भी छोड़ नहीं पाते। वे सोचते है कि बस आज ही और कर लें, फिर भविष्य में न करेंगे। और इसी प्रकार वे आज के चक्कर में फसे रहते है। और इस क्षणिक उत्तेजना मे बहकर यौवन सत्व नष्ट करते रहते हैं। हम उन लोगों की सूचनार्थ वे भयंकर परिणाम भी अंकित किए देते हैं जो कि इस निंद्य क्रिया से उत्पन्न हो जाते है। आशा है, कि इसमें फंसे हुए लोग इन्हें पढकर सुधरने का प्रयास करेंगे और अपनी भावी सन्तान को होनहार बना सकेंगे।

हस्त मैथुन से हानियां

हस्त मैथुन जैसी भयंकर कुटेव से शरीर के समस्त अगों को अत्यधिक हानि पहुंचती है, जैसा कि नीचे सविस्तार अंकित किया जाता है।

१— सबसे पहिली हानि यह होती है कि हाथ की रगड़

से जननेन्द्रिय की रगें और पट्ठे दुर्बल पड़ जाते हैं और उनमें रक्त सञ्चार रुक जाता है। नीली २ रगें उभर आती हैं और फिर जननेन्द्रिय में ढीलापन आ जाता है तथा कुछ समय उपरान्त उत्तेजना के योग्य ही नहीं रहती।

२—चूंकि इस क्रिया के बार २ करने से बार २ वीर्य निकलता है इस कारण वीर्य दूषित और पतला हो जाता है, जिससे उसके कीटाणु मर जाते हैं। और वीर्य सन्तान उत्पन्न करने योग्य नहीं रह जाता।

३— बार २ वीर्य निकलने के कारण वीर्य-कोष्ठ क्षणिक चैतन्यता वाला हो जाता है और उसकी स्तम्भन शक्ति बहुत कम हो जाती है। फल स्वरूप कभी २ तो टट्टी में तनिक सा बल लगाने पर ही वीर्य बिन्दु निकल पड़ते हैं। और फिर शनैः-शनैः नौबत यहां तक पहुँच जाती है कि तनिक सी वस्त्र की रगड़ अथवा मैथुन का विचार अथवा स्त्री से बातचीत करने से ही वीर्य निकल जाता है। ऐसी अवस्था को क्षणिक चैतन्यता कहते हैं।

४—इसके अतिरिक्त न केवल जननेन्द्रिय पर, अपितु इस का कुप्रभाव उत्तमांगों पर भी पड़ता है और शरीर-सत्व (वीर्य) के नष्ट होने से समस्त उत्तमाङ्ग दुर्बल

पड जाते हैं और उत्तमागों का महत्व हम अंग परिचय कराते हुए पुस्तक के प्रारम्भ मे लिख ही चुके हैं कि हृदय, मस्तिष्क, यकृत और अण्ड-कोष इन चारो उत्तमागों पर ही हमारा शारीरिक स्वास्थ्य और जीवन आधारित है और इन मे किसी प्रकार की विकृति उत्पन्न हो जाने से सारा शरीर दुर्बल और अशक्त हो जाता है। हस्त मैथुन से इन चारों भागों को क्या हानि पहुँचती है, वह संक्षिप्त रूप से नीचे लिखी जाती है :—

हृदय—हस्त मैथुन जैसे घृणित कर्म से जब क्षणिक आनन्द उत्पन्न होता है, उस समय न केवल वीर्य ही निकल जाता है, अपितु साथ ही एक और भी मूल्यवान वस्तु शरीर से निकल जाती है, और वह वस्तु है ऊष्मा। यह ऊष्मा (हरारत अजीजी) हमारे स्वास्थ्य के लिए उतनी ही आवश्यक है, जितना कि भोजन। और चूंकि इस कुटेव में ग्रसित व्यक्ति बार-बार यह दुष्कर्म करता है अतः शरीर में जितनी ऊष्मा उत्पन्न होती है उतनी ही निकल जाती है परिणामस्वरूप हृदय दुर्बल हो जाता है और उन्माद व मूर्च्छा आदि रोग आ घेरते हैं। तदनन्तर जब उसे यह ज्ञान होता है कि यह सब उसी दुष्कर्म का परिणाम है, तो पश्चात्ताप और चिन्ता में ग्रस्त हो जाता

है, और दिन २ स्वास्थ्य क्षीण होता हुआ मृत्यु के मुख में जा गिरता है। और चूंकि जननेन्द्रिय में उत्तेजना भी तभी उत्पन्न होती है, जब कि हृदय शुद्ध रक्त की मात्रा जननेन्द्रिय में भेजता है, यही कारण है कि हृदय की दुर्बलता के रोगियों को उत्तेजना नहीं हुआ करती। तीसरे चूंकि हृदय समस्त अंगों का सम्राट है अतः उसके दुर्बल होने से अन्य अवयव भी शिथिल पड़ जाते हैं, और उनमें भी दुर्बलता आ जाती है। अब आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि जिस कुटेव से हृदय जैसा प्रमुख अंग दुर्बल पड़ जाता है तो वह स्वास्थ्य के लिए कितनी हानिकर है।

मस्तिष्क-हस्त मैथुन की कुटेव से मस्तिष्क को अति शीघ्र हानि पहुँचती है क्योंकि जो मस्तिष्क से पट्ठे निकलते हैं, उनमें इतनी शिथिलता आ जाती है कि चाहे पुरुष स्त्री के साथ लेटा रहे, तब भी उत्तेजना उत्पन्न नहीं कर सकते। इनकी शिथिलता के कारण सिर में पीड़ा रहने लगती है, तनिक सा चलने फिरने अथवा बैठे रह कर खड़ा होने पर आँखों के सामने अंधेरा छा जाता है। मस्तिष्क में सदैव भांति २ के बुरे विचार उठते रहते हैं, और सबमें प्रमुख लक्षण यह है कि वीर्य पतन के समय बहुत थोड़ा आनन्द आता है। फिर जब वह मनुष्य रति-आनन्द की औषधियां सेवन करने लग जाता है तो मस्तिष्क और भी दुर्बल हो जाता

है और भरी जवानी में ही कुछ काल पश्चात् उसकी यह दशा हो जाती है कि सिर पीडा तथा शरीर पीड़ा से बेचैन रहता है। न शारीरिक श्रम ही कर सकता है और न मानसिक श्रम। बस हर समय रोगी की भांति अशक्त पड़ा रहता है। कभी-कभी तो मस्तिष्क दुर्बलता के कारण उसका दिमाग खराब हो जाता है।

यकृत—जैसा कि हम पहिले बता चुके हैं कि यकृत का काम शुद्ध रक्त का निर्माण करना है। हस्त मैथुन से जब वीर्य अधिक निकल जाता है तो वीर्य बनाने के लिए अधिक रक्त की आवश्यकता पडती है अतः यकृत को रक्त निर्माण के लिए अधिक काम करना पडता है किंतु जितना रक्त वह बनता है वह वीर्य बनने में व्यय हो जाता है अतः यकृत को अपनी खुराक भी नहीं मिल पाती। फलस्वरूप यकृत शीघ्र ही दुर्बल हो जाता है और जब शरीर में रक्त की न्यूनता हो जाती है, साथ ही भूख भी नष्ट हो जाती है और शनैः २ स्वास्थ्य गिरता चला जाता है।

अण्डकोष—चूंकि यकृत से शुद्ध रक्त प्राप्त कर के वीर्य का निर्माण करना अण्डकोषों का ही काम है और हस्त मैथुन जैसे निंद्य-कर्म द्वारा बार २ वीर्य को अधिक मात्रा में नष्ट करने से इन्हें भी अपना कार्य अधिक करना पड़ता है अपितु कई बार तो कच्चा वीर्य अथवा

केवल रक्त ही देना पड़ जाता है। फलस्वरूप कुछ ही दिनों मे शिथिल होकर लटक जाते हैं और इन में थोड़ी २ पीड़ा होने लगती है।

उत्तमांगों के अतिरिक्त इस कुटेव का आमाशय, वृक्क तथा मूत्राशय पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। कहने का अभिप्राय यह है कि इस दुष्कर्म से मनुष्य पूर्ण युवा-काल में ही बूढ़ों से भी गया बीता हो जाता है अपितु कुछ समाचार तो इस प्रकार के प्राप्त हुए हैं कि इस दुष्कर्म के कारण ही उनकी मृत्यु हो गई और कुछेक को उन्माद, मूर्च्छा और कम्पवात जैसे भयकर रोगों ने जकड़ लिया।

अस्तु मे अपने प्रिय पाठकों से बार २ यही निवेदन करता हूं कि स्वय इस भयंकर दुष्कर्म से बचें, अपने दूसरे फंसे हुए भाइयों को बचाएं और अपनी तथा भावी संतान को भी सद् शिक्षा व कठोर अनुशासन द्वारा इन दुष्कर्मों से बचाएं। अपने बालको को कभी कुशील बालकों का साथ न करने दें और न कभी दो बालकों को अकेला छोड़ें अन्यथा वे निश्चय ही इस के जाल में फंस कर अपना जीवन नष्ट कर लेंगे। आशा है पाठकगण इस ओर पर्याप्त ध्यान देंगे।

चिकित्सा के सम्बन्ध में

अब हम आपको इसकी चिकित्सा के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें बताते हे। कृपया उन्हें ध्यान पूर्वक पढें।

अज्ञानतावश मनुष्य इन दुष्कर्मों मे फस तो जाता है, किंतु शीघ्र ही जब वह उसके दुष्परिणाम से परिचित होता है तो उसके मन में भांति २ के विचार उत्पन्न होने लगते हैं, कभी वह आत्मघात करने का संकल्प करता है, तो कभी देश छोड कर दूर भाग जाने की सोचता है, किन्तु सहसा उसके मनमें यह विचार भी उठता है, कि क्यों न मे इसकी चिकित्सा कराऊं। आखिर भगवानने हर रोग की औषधि भी ससार में उत्पन्न की हैं। निसन्देह विचार तो अत्युत्तम है, किन्तु उस समय उसके मार्ग में लज्जा बाधक हो जाती हैं और वह अपनी लज्जास्पद करतूतों के कारण चिकित्सक के सम्मुख जाने का साहस सचय नहीं कर पाता है। उस समय उसका ध्यान उन लंबे चौड़े विज्ञापनों की ओर आकृष्ट होता है, जो कि नितान्त नपुंसक को भी एक ही दिन मे सिंह पुरुष बनाने का दावा करते हैं। रोगी उनके जादू भरे शीर्षकों से प्रभावित होकर रुपया बहाने पर आमादा हो जाता है किंतु फिर भी परिणाम यह होता है कि वह रही सही शक्ति भी खो बैठता है। अतः मै आपको बार २ चेतावनी देता हू' कि इन एक

दिन में पुरुष-सिंह बनाने वाली विलायती औषधियों के जाल से बचो और धैर्य पूर्वक किसी अच्छे चिकित्सक से चिकित्सा कराओ। स्मरण रहे कि यह रोग धीरे २ ही दूर होते हैं, इन्हें एक ही दिन में दूर करने वाली कोई औषधि संसार भर में आज तक नहीं बनी है।

अंत में, मैं आपको यही राय दूंगा कि प्रथम तो आप इस पुस्तक में अङ्कित सन्यासी प्रयोगों का सधैर्य सेवन करते रहें, ईश्वर कृपा से निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी। क्योंकि सारे देश के वैद्य और हकीम इस बात को मान चुके है कि नपुंसकता के लिए सन्यासियों ने जो चमत्कारी योग ढूंढ निकाले हैं, वैसे आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सा में भी नहीं पाए जाते हैं। यदि इन सन्यासी योगों से पर्याप्त लाभ न हो तो 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' तथा 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' नामक पुस्तकों की सहायता लें, जिनमें कि आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सा के चोटी के योग अंकित हैं। इनमें से कुछ योग मूल्यवान भस्मों और तिलाओं के हैं, और शेष 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' में तो ऐसे सरल योग अंकित है, जिनमें आपका एक भी पैसा व्यय नहीं होगा, केवल ईश्वरीय देनों से ही आप औषधि तैयार कर लेंगे, और भगवतानुकंपा से पूर्णरूपेण लाभान्वित होंगे। यदि होनहार वश फिर भी सफलता न मिले, तो फिर किसी कुशल वैद्य

अथवा डाक्टर की शरण लेनी चाहिए और लज्जा को दूर फेंक कर सारा वृत्तान्त उससे स्पष्ट कह देना चाहिए।

बस! मुझे आपसे इतना ही कहना था। अब हम नपुंसकता सम्बन्धी विविध रोगों में से प्रमुख रोगों का विवरण लिखेंगे और साथ ही उनकी चिकित्सा के लिये उत्तमोत्तम और प्रशासित प्रयोग भी अंकित किए जायेंगे। ईश्वर हमारे प्रिय पाठकों को इनसे लाभान्वित करे। यही मेरी शुभ कामना है।

प्रमेह

इस रोग में मूत्र त्याग करते समय मूत्र के पूर्व अथवा मध्य में अथवा बाद में श्वेत रंग का द्रव्य निकला करता है, यह तीन प्रकार का होता है, मनी (वीर्य), मदी, और मजी।

वीर्य—शरीर के चतुर्थ पक्व की सार वस्तु है, जो भोजन खाने के ७२ घंटे पश्चात् तैयार होता है। यह सारे अङ्गों से खिंचकर निकलता है। इस कारण शरीर में दुर्बलता आ जाती है। यदि इसकी रक्षा की जाय, तो शरीर पुष्ट रहता है।

मजी—यह श्वेत रंग की आद्र`ता होती है, जो मैथुन की इच्छा होने पर जननेन्द्रिय के मुख पर आजाती है। इसके अल्प मात्रा में निकलने से तो अधिक दुर्बलता नहीं

आती, परन्तु यदि बराबर निकलती रहे, तो मनुष्य निर्बल और निकम्मा हो जाता है ।

वदी—यह श्वेत आर्द्रता मूत्र नली को स्वच्छ करने के लिए पहिले थोड़ी सी निकला करती है, इसको वदी कहते हैं। जब इन तीनों मे से किसी का निस्सरण सीमोल्लघन कर जाता है, तो प्रमेह कहलाता है। किन्तु सबसे अधिक भयकर धातु प्रमेह होता है।

प्रमेह के मूल कारण

इसके मूल कारण तो हस्तमैथुन, अप्राकृतिक मैथुन तथा मैथुनाधिक्य होते हैं, क्योंकि इनसे पहिले क्षणिक चेतनता का रोग हो जाता है, जैसा कि हम पहले वर्णन कर आए हैं। पर रोग मनमाने अपरिमित भोजनों के अधिक सेवन और कोष्ठ बद्धता के कारण से भी हो जाया करता है।

प्रमेह की पहिचान

इसमें रोगी आलसी तथा सुस्त हो जाता है, काम काज से जी चुराता है, अगों का टूटना सदा बना रहता है कमर में पीड़ा होती रहती है अतः इस रोग से मस्तिष्क के पट्ठे दुर्बल हो जाते हैं, और तनिक से काम करने से सिर में पीड़ा होने लगती है और कभी २ चक्कर आने लग जाते हैं। रोगी-स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। वह चाहे जैसा पोष्टिक भोजन खाए, शरीर को तनिक भी शक्ति नहीं

पहुँचती। स्तम्भन शक्ति व वाजीकरण शक्ति दिन-दिन घटती जाती है और मैथुन का आनन्द नाममात्र को रह जाता है। अन्त मे रोगी निकम्मा तथा नपुंसक हो जाता है। विशेष पहिचान यह है कि जिस रोगी के नखों का भाग रक्त रहित अर्थात् श्वेत हो जाय, तो समझ लो कि उसे प्रमेह रोग है और जितने चावल स्थान में श्वेतता हो, उतने ही वर्ष से समझ लें। यह पक्का चिन्ह है। और इस प्रकार आप लोगों को चकित कर सकते हैं।

अब हम प्रमेह के लिए कुछेक अत्युत्तम सन्यासी प्रयोग अंकित करते है, जो कि बड़े २ साधु महात्माओं द्वारा प्रदानित हैं, और प्रमेह को जड़ मूल से उखाड़ फेंकने के लिए अचूक राम बाण हैं।

प्रथम परीक्षित प्रयोग

यह प्रयोग बाबा घासा राम जी सन्यासी ने हमारे एक मित्र वैद्य को किसी विशेष अवसर पर प्रदान किया था, जो कि सब प्रकार के प्रमेह को केवल ३ दिन में रोक देता है और ७ दिन के अन्दर २ ईश्वर कृपा से रोग का जड़ मूल स नाश कर देता है। सन्यासी जी ने इसी योग से अब तक अगणित रोगियों को ठीक किया है, और हमारे मित्र द्वारा भी पूर्ण परीक्षित व प्रशंसित योग है।

योग इस प्रकार है :—

विशुद्ध बंग, विशुद्ध शीशा, पारा सिगरफ द्वारा निकाला हुआ प्रत्येक १-१ तोला शीतलचीनी, वंशलोचन, छोटी इलायची का दाना, तज प्रत्येक २-३ तोला। निर्माण विधि यह है कि पहले कलई और शीशे को पिघला कर मिलावें और तुरन्त ही पारे में डाल दें, जिससे कि एक गुटका बन जावे। अब इस गुटके को किसी उत्तम खरल में डाल कर भली भांति सूक्ष्म पीसें। पूरे दो दिन तक भली प्रकार खरल करते रहने से काले रंग का चूर्ण बन जायगा। फिर दूसरी औषधियां बारीक करके डालें और २-३ दिन तक पुनः भली प्रकार खरल करके शीशी में सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय रोगी को ½ माशा की मात्रा प्रति दिन प्रातःकाल खांड मिश्रित दूध की लस्सी के साथ सेवन कराएँ। जो निरन्तर सात दिन तक विधिवत् सेवन करेंगे, वे अकथनीय लाभ उपलब्ध करेंगे।

सन्यासी योगाभ्यास

योगियों ने रोग निवारण करने के लिए कई ऐसे आसन निश्चित किये हैं, जिनका दैनिक अभ्यास करते रहने से बिना किसी औषधि के सेवन के ही रोग दूर हो जाते हैं। उनमें से शीर्षासन भी एक है। यदि निम्न लिखित

नित्यप्रति शीर्षासन का अभ्यास किया जाय, तो प्रमेह व स्वप्नदोष स्वतः ही मिट जाते हैं। इसकी सत्यता अनेक बार प्रमाणित हो चुकी है।

शीर्षासन की विधि यह है :—

एक स्वच्छ व हवादार कमरे में प्रातःसायं शौच आदि से निवृत्त होकर शरीर के सब कपड़े उतार कर केवल लंगोट बांधे रहें और दीवार के निकट कोई नरम गद्दी रख कर उस पर सिर टिकाकर पांव ऊपर की ओर दीवार के सहारे कर दें। इसी प्रकार कुछ दिन तक अभ्यास करें और फिर दीवार का सहारा लेना छोड़ दें और बिना सहारे ही खड़े रहने का अभ्यास करें। पहिले दिन यह क्रिया आधे मिनट करें, फिर प्रतिदिन आधा मिनट बढ़ाते चले जायं, यहां तक कि १५ मिनट तक पहुंचा दें। फिर जब तक इच्छा हो, इसे जारी रखें। इस अभ्यास के करते रहने से प्रमेह और स्वप्नदोष का नाम तक न रह जायेगा। शरीर में बल स्फूर्ती और मोटापा पैदा हो जायगा। चेहरे पर रक्त की लालिमा दमकने लगेगी। इस आसन के और भी अनेक लाभ हैं।

द्वितीय सन्यासी प्रयोग

भिण्डी की जड़ें इच्छानुसार लेकर छाया में सुखा लें और जौकुट करके रखें। आवश्यकता के समय इस में

से १ तोला लेकर रात को पाव भर पानी में भिगो दें और प्रातःकाल मलत्याग कर मिश्री मिलाकर पियें। इसको २१ दिन पर्यन्त निरन्तर सेवन करते रहने से प्रमेह व स्वप्नदोष नितांत मिट जायेंगे और वीर्य पुष्ट होगा। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक स्तम्भन उत्पन्न होता है। यह प्रयोग एक सन्यासी ने हमारे एक मित्र को उस समय बताया था, जब कि वह प्रमेह रोग से पीड़ित थे। इस योग का चमत्कारी लाभ मै स्वय अपनी आँखों देख चुका हूँ।

अति सुगम योगावली

प्रथम

माष की दाल को कूट कर सम भाग मिश्री मिला लें, और ५ तोला नित्य प्रातः ताजा जल से खिलाएं। दो घन्टे पश्चात् इच्छानुसार दूध पिलाएं। प्रत्यक्ष में तो साधारण वस्तु है, किन्तु गुणों में लासानी है। प्रमेह व स्वप्नदोष को जड़ मूल से उड़ा देती है

द्वितीय

सिरस के बीजों को कूट कर चूर्ण बनावें, और सम-भाग मिश्री मिलाकर रखें। तथा आवश्यकता के समय ६ माशा मात्रा प्रातः साय ताजा पानी से रोगी को सेवन कराएं। कुछ ही दिनो के सेवन से प्रमेह और स्वप्नदोष के निराश रोगी भी स्वस्थ हो जाते है।

तृतीय

शुद्ध मिलावे बारीक पीस कर रखें और आव-श्यकता के समय पहिले दिन १ चावल दूसरे दिन २ चावल और तीसरे दिन ३ चावल के परिमाण में रोगी को दें। फिर ३ चावल मात्रा १५ दिन निरन्तर सेवन कराएं। स्वप्न दोष के लिए अति लाभकारी है।

चतुर्थ

वट वृक्ष की कोंपल और गूलर की छाल समान मात्रा में लें और छाया मे सुखा कर कूट छान लें तथा सम भाग खाड मिला कर सावधानी से रख छोड़ें। आव-श्यकता के समय रोगी को १-१ तोला की मात्रा दोनों समय दूध के साथ दिया करें। कुछ ही दिनों के सेवन से रोग जाता रहेगा।

पंचम

धतूरा के बीज और काली मिर्च, दोनों को समान मात्रा में लेकर सूक्ष्म कर लें तथा शहद के साथ चने के बराबर गोलियां बना लें। प्रातः काल एक गोली देकर ऊपर से ६ माशा सौंफ पानी मे घोंट कर पिलाया करें। प्रमेह के लिए विशेष लाभदायक योग है।

षष्ठम

नितान्त श्वेत कौड़ी, जिसके किसी भाग पर भी दूसरा रंग न हो, आवश्यकतानुसार लेकर पुरानी रुई में लपेट कर आग में रखकर राख कर लें और १ तोला राख की सात पुड़ियां बना लें। आवश्यकता के समय रोगी को मक्खन में रखकर दें। भोजन में गेहूँ की रोटी घी के साथ खाने को दें, अन्य सभी वस्तुओं से परहेज आवश्यक है। कुछ ही दिन सेवन कराने से स्वप्न दोष रोग नितान्त मिट जाता है। राम बाण की भांति अचूक योग है।

सप्तम

६ माशा चिरौंजी कूट कर आधे सेर दूध में औटाएं जब पाव भर दूध शेष रह जाय तो रोगी को सोते समय पिला दें। ३ दिन सेवन कराने से स्वप्न दोष का नाम भी न रह जायगा। शत शो अनुभूत प्रयोग है।

अष्टम

असगन्ध बूटी आवश्यकतानुसार लेकर बारीक करके कपड़े से छान लें और समभाग खांड मिलाकर बोतल में रख छोड़ें। इसमें से नित्य प्रति १ तोला मात्रा कच्चे दूध के साथ सेवन कराएं। कुछ ही दिनों में वीर्य उत्पन्न करके शरीर को पुष्ट बना देगी। वीर्य अल्पता के रोगियों के लिए परम लाभप्रद है।

विशेष सूचना

प्रमेह व स्वप्न दोष के अन्य उत्तमोत्तम 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में देखें।

अपूर्व बाजी करण

सन्यासी प्रयोग

दीवान श्रोधाराम जी टांक निवासी ने एक बार हमारे एक मित्र वैद्य को बतलाया कि हमारे यहां एक सन्यासी जी बहुधा आया करते थे उनके पास एक अपूर्व बाजीकरण गोली तयार रहती थी, जिसे वे बड़े २ रईसों और नवाबों को १०) प्रति गोली के भाव से दिया करते थे। मैंने उन सन्यासी जी से बड़ी कठिनता से यह योग प्राप्त किया है। इस कथन के साथ उन्होंने यह प्रयोग हमारे मित्र महोदय को भेंट किया था, आज वही योग हम अपने प्रिय पाठकों को भेंट करते हैं।

योग इस प्रकार है :—

केशर, कस्तूरी, अफीम, बरना के बीज १—१ तोला लेकर आध सेर बट वृक्ष के दूध में खरल करके काली मिर्च के बराबर गोलियां बनालें और एक गोली संभोग से २ घटे पूर्व खिलाने से अपूर्व उत्तेजना व प्राकृतिक स्तम्भन उत्पन्न होता है। हमारे एक रसिक मित्र श्री राधेनाथ

टण्डन ने भी इन गोलियों को तैयार करके परीक्षा की, और दूसरे दिन जिन शब्दों में उन्होंने इनकी प्रशंसा की, वह लिखने की बात नहीं। जो सज्जन बनायेंगे, वे अद्भुत आनन्द प्राप्त करेंगे।

विशेष सूचना

जो सज्जन बनाने में कष्ट अनुभव करें, वे निम्न पते से १) प्रति गोली के हिसाब से बनी बनाई मँगा सकते हैं।

पता यह है:—

देहाती फार्मेसी
मु० पोस्ट कासन,
जिला गुड़गावाँ (ई० पी०)

नपुन्सकता का आश्चर्य जनक सन्यासियाना प्रयोग

एक काले बिच्छू को प्याले में रखकर पान का पत्ता उसके सामने करदें ताकि इस पर वह डंक मार दे। फिर इस पान को नपुन्सकता के रोगी को खिलादें। इसी प्रकार दूसरे दिन को डंक लगवा कर खिलावें और तीसरे दिन तीन डंक लगवा कर खिलायें। बस ३ ही दिन में नितांत नपुन्सक भी पुन्सक बन जायेगा।

सुविख्यात आयुर्वेदिक वाजीकरण औषध
शिगरफ भस्म की सन्यासी विधि

यह भस्म एक विशेष सन्यासियाना विधि से बनाई जाती है, जोकि सूर्योदय के रंग की बनती है। इसकी एक ही मात्रा जीवन भर के लिए वाजी करण औषधियों से मुक्त करा देती है। यह प्रयोग हमारे एक मित्र वैद्य को हकीम असूराम जी जिला डेरागाजी खां निवासी ने बताया है। उक्त हकीम साहब को यह योग एक ऐसे व्यक्ति से प्राप्त हुआ था जो कि स्वयं १०० वर्ष का होते हुए भी १८ वर्षीय युवक की भांति लाल चेहरे वाला दृष्टिगोचर होता था और इस आयु में भी उसके ४ पत्नियां तथा २४ पुत्र थे, और उस व्यक्ति को यह योग एक महान सन्यासी ने प्रदान किया था। अब सोचिए कि यह कितने सौभाग्य और हर्ष का विषय है कि वही चमत्कारी प्रयोग आज आप लोगों को भी प्राप्त हो सका है।

इस प्रयोग में विशेषता यह है कि वृद्धावस्था में जब कि शरीर की सारी इन्द्रियां शिथिल हो चुकी हों अथवा शारीरिक शक्तियां नितांत घट गई हों और जरावस्था आ गई हो, ऐसे समय में इसका सेवन करना उचित है। इस की एक ही मात्रा बिजली की भांति नस २ में दौड़ जाती है और सारे शरीर में रक्त ही रक्त उत्पन्न करके बूढ़े को भी

जवान बना देती है इसके सेवन कर लेने के पश्चात् मनुष्य बहुत कम बीमार पड़ता है। आप ने सैकड़ों योग पढ़े व सुने होंगे किन्तु इसके समान आज तक आपने कदाचित् ही सुना होगा।

विशेष आदेश

इस योग को सेवन करने से पूर्व ५ सेर दूध और ५ सेर घी अपने पास रख लेना आवश्यक है अन्यथा यह अपनी तेजी के कारण सेवन करने वाले को मार देता है।

योग इस प्रकार है :—

शिंगरफ रूमी १ तो० की डली लेकर १ सेर गाय के दूध में दोलायन्त्र से निर्धूम मन्द २ आग पर पकावें अर्थात् एक छोटा सा गढ़ा खोद कर उसमें थोड़ी सी बकरी की मींगनी डाल कर जला दें और जब धुआं उठना बन्द हो जाय तो उस पर दोलायन्त्र से पकावें। जब वह आग ठंडी हो जावे तो दूसरे स्थान पर गढ़ा खोद कर उसी विधि से पकावें। यह क्रिया निरन्तर चार पहर करें, फिर पोटली निकालकर दूसरे वस्त्र में बांधें और दूसरे दिन फिर उसी प्रकार चार पहर तक पकावें। पहिला दूध भूमि में गाड़ दें। यदि पात्र मिट्टी का हो तो नया बदले और यदि पीतल का हो तो कलई करालें और दूसरे दिन उसे भली भांति साफ कर लिया करें, इसी प्रकार नित्य करते

रहें और १० दिन तक दूध भूमि में दबाते जाए। इसके बाद पी लिया करें, अत्यधिक बलदायक होगा। इस प्रकार निरन्तर ४० दिन तक यह क्रिया जारी रखें तदन्तर शिंगरफ को निकाल कर कपरौटी की हुई चीनी की प्याली में रखें और कपरौटी सूख जाने पर कोयलों की आंच पर रखें तथा खरगोश के गले के खून का चोया दें। इसी प्रकार ४० खरगोशों के गले का खून पिलाने से शिंगरफ का रंग सूर्योदय के समान हो जायगा। बस यही अक्सीर औषधि तैयार हो गई।

सेवन विधि यह है :—

आधा चावल भर मात्रा मक्खन में लपेट कर निगल ले। थोड़ी देर पश्चात गरमी व खुश्की होगी। उस समय पाव भर दूध पीलें। दूध पचते ही फिर गर्मी प्रतीत होगी तब पाव भर घी पीलें फिर जब पुनः गर्मी व खुश्की प्रतीत हो तो फिर पाव भर दूध पीलें। इसी प्रकार क्रमशः एक बार पाव भर दूध व एक बार पाव भर घी पीते रहें और पांच सेर दूध व ५ सेर घी समाप्त कर दें। उसका कोई भी अंश मलमूत्र बने बिना शरीरांश बन जायगा। साथ ही साथ ऐसा प्रतीत होता जायगा, मानो शरीर में दैवी शक्ति भरती जा रही है और वृद्ध मनुष्य युवा मनुष्य से भी अधिक शक्तिवान हो जायगा। खोई हुई

शक्ति फिर लौट आएगी और अशक्त इन्द्रियाँ जीवित हो उठेंगी। अकेला ही लाख रुपये का योग है।

द्वितीय सन्यासी विधि

शिंगरफ भस्म बनाने की यह द्वितीय सन्यासियाना विधि भी अत्युत्तम व प्रभावकारक है। यह योग बाबा शोभाराम जी सन्यासी का है, जिसकी केवल तीन मात्राएँ सेवन कर लेने से ही नितान्त बाजीकरण शक्ति शून्य व्यक्ति भी आयुभर के लिए पूर्ण युवा बन जाता है। योग बड़ा ही सरल है, इसका चमत्कारी प्रभाव देखते हुए जितनी भी प्रशंसा की जाय, थोड़ी ही है।

निर्माण विधि इस प्रकार है—

शिंगरफ रूमी २ तोला की डली लेकर काले सर्प के मुँह में रख कर उसके मुँह को धागे से सी दें और मुख पर कपरौटी कर दें। फिर एक लम्बा गढ़ा खाई जैसा खोद कर उसमें कण्डे चुन कर उन पर सर्प को लम्बा रख दें, किन्तु उसका सिर बाहिर होना चाहिए अर्थात् उसके सिर के आस पास कोई उपला नहीं होना चाहिए। तत्पश्चात् सर्प के ऊपर उपले चुन कर आग लगादें ताकि सर्प बिलकुल जल जाय, किन्तु आग सिर तक न पहुँचे। दूसरे दिन निकाल कर इसी प्रकार दूसरे सर्प के मुख मे

रख कर अग्नि दें और ऐसे ही तीसरे दिन भी। फिर शिंगरफ को निकाल कर सुरक्षित रखें। तथा १ चावल मात्रा मक्खन में रख कर खिलाएँ। यदि नशा प्रतीत हो तो घी खूब पिलायें। दो-तीन मात्राएँ ही आयु पर्यन्त के लिए पर्याप्त हैं।

सूचना—यह क्रिया बस्ती से दूर करनी चाहिए क्यों कि इसका धुआं विषैला होता है।

अद्भुत सन्यासी तिला

रीछ की चर्बी, शेर की चर्बी, सांडे की चर्बी, चिड़िया का मगज, जंगली कबूतर की बीट, मूली के बीज, प्रत्येक २ तोला लेकर सबको सूक्ष्म पीस लें और १० तोले तिली क तेल में मिला कर खूब घोटें, यहां तक कि तमाम औषधियां मक्खन के समान कोमल हो जायँ। बस, तिला तैयार है। इसे चौड़ मुँह की शीशी में रख लें।

रात के समय गुप्तांग पर भली भांति मालिश करके सो जाय। इस अनुपम तिला से कुछ ही दिनों में बिना किसी कष्ट के मुर्दा रगों में जान पड़ जाती है। आपने आयुर्वेदिक व यूनानी चिकित्सा के उत्तमोत्तम तिलाओं के योग 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' में पढ़े होंगे, किन्तु यह सन्यासियाना तिला उन सबसे बढ़ कर है।

क्योंकि इससे और तिलाओ की भांति इन्द्रिय पर छाला अथवा फुन्सियाँ आदि नही होती। और नितान्त नपुंसक भी इससे पुंसक बन जाता है। सैकड़ो रुपये का योग है।

बाजीकरण शक्ति को अद्भुत रूप से बढ़ाने वाला अति सुगम सन्यासी प्रयोग

शहद शुद्ध ९ माशा गिलास मे डालकर ऊपर मलमल का कपड़ा बाध दें और उस कपड़े पर गाय या भैंस को दुहैं। पहिले दिन अनुमानतः डेढ़ पाव दूध और फिर क्रमशः आध २ पाव बढ़ाते हुए ३ पाव तक ले जायं, और ३ पाव दूध ४० दिन पर्यन्त नित्य दुहा करें। किंतु यह ध्यान रहे, कि दूध दुहने के उपरांत नित्य प्रति तत्क्षण ही पी जाया करें, गिलास को जमीन पर न रखे। इसके सेवन काल में यदि पेट मे गुड़गुड़ाहट और अतिसार आदि प्रारम्भ हो जाय, तो चिन्ता न करें, वरन् औषधि सेवन जारी रखें, समस्त दोष स्वतः ही शान्त हो जायेंगे। जो सज्जन ४० दिन पर्यन्त निरन्तर सेवन कर लेंगे, उनकी बाजीकरण शक्ति मे जीवन भर न्यूनता न आ सकेगी। शतशोनुभूत प्रयोग है।

विशेष सूचना

जो लोग यह चाहते हों कि वे नपुन्सकता व गुप्त

रोगों के सफल चिकित्सक बन जाएं, अथवा जो स्वयं इन के शिकार हो चुके हों और यह चाहते हों कि उन्हें नव-यौवन और नव-जीवन प्राप्त हो उन्हें निम्न चार पुस्तकों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। हमारा दावा है कि इन चारों पुस्तकों को पास रखकर आप उन रोगियों की भी सफल चिकित्सा कर सकते हैं, जो कि बिलकुल निराश हो चुके हों और बिलकुल नामर्द को आप पुनः यौवन प्रदान कर सकते हैं।

पुस्तकें ये हैं :—

१—'देहाती अनुभूत योग संग्रह' दोनों भाग।

सम्पादक—अमोलचन्द्र शुक्ला द्वारा उर्दू से अनुवादित जिसमें लगभग आयुर्वेदिक व यूनानी चिकित्सा के चोटी के योग हैं।

२—'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा।'

सम्पादक अमोलचन्द्र शुक्ला द्वारा लिखित जिसमें असंख्य ऐसे योग हैं, जिनसे एक भी पैसा व्यय किए बिना आप प्रकृति में पाए जाने वाले पेड़ पौधों से ही कठिनतम रोगों की चिकित्सा कर सकते हैं।

३—देहाती एकौषधि चिकित्सा—

सम्पादक—अमोलचन्द्र शुक्ला द्वारा अनुवादित।

जिसमें केवल एक २ द्रव्य से बनने वाले अनमोल योग संग्रहीत हैं।

४—'सन्यासी चिकित्सा शास्त्र' सम्पादक अमोलचन्द्र शुक्ला द्वारा लिखित जो आपके हाथों में ही है, आपने स्वयं देख लिया होगा, कि बड़े २ सन्यासियों के कैसे २ गुप्तयोग किस प्रकार प्राप्त करके आपको भेंट किये गए हैं? चारों पुस्तकें अद्वितीय है।

स्त्रियों के विशेष रोग

हम पहिले लिख चुके हैं कि भगवान ने संसार में हर जीव को जोड़े के साथ उत्पन्न किया है। मनुष्य का जोड़ा स्त्री है, दूसरे शब्दों में हमारा आधा अंग स्त्री है। स्त्री के बिना पुरुष का जीवन अधूरा है। चूंकि मनुष्य ने बुद्धि विकास के साथ २ रहन-सहन में भी पर्याप्त उन्नति की और जीवन को सुखमय बनाने के लिए घर की स्थापना की। और उस घर की स्वामिनी, अथवा घर की शोभा स्त्री को माना। सारांश यह कि स्त्री हमारे जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण है अतः उसके सुख दुःख का पूरा-पूरा ध्यान रखना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है।

किन्तु खेद का विषय है कि हमारे देश के लोग

स्त्रियों के कष्टों की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं देते। एक तो स्त्रियां स्वतः ही लज्जाशील होती हैं, दूसरे पुरुष उनकी ओर ध्यान नहीं देते, फलस्वरूप वे नारकीय यातना पूर्ण जीवन भोगती हुई इस संसार से विदा हो जाती हैं। अतः मैं अपने देशवासी भाइयों से पुनः २ निवेदन करता हूँ कि वे इनके कष्टों की ओर विशेष ध्यान दें। यह न केवल उनके ही सुख दुख का प्रश्न है, अपितु इसी पर स्वयं आपके जीवन का भी सुख-दुःख निर्भर है।

अब हम स्त्रियों के कुछेक प्रमुख रोगों का संक्षिप्त विवरण लिखते हुए सन्यासी प्रयोग आपको भेंट करते हैं, जिनसे आवश्यकता के समय आप स्वयं बिना किसी चिकित्सक की सहायता लिए अपने परिवार की स्त्रियों का कष्ट निवारण कर सकेंगे। विशेष विवरण व औषधियों के लिए 'देहाती अनुभूत योग संग्रह देखें'।

मासिकधर्म बन्द हो जाना

प्रायः स्त्रियों का मासिकधर्म या तो बिलकुल बन्द हो जाता है, या अत्यल्प मात्रा में आया करता है इससे उनको घोर कष्ट होता है, और भांति २ के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। जब तक मासिकधर्म खुल कर व नियमित रूप से न आवे, तब तक गर्भ स्थापन भी नहीं होता; अतः इसकी चिकित्सा में आलस्य नहीं करना चाहिए। निम्न सन्यासी

प्रयोग तत्काल बन्द मासिक धर्म को बिना किसी कष्ट के खोल देते हैं, लाभ उठायें।

प्रथम योग

नागफनी बूटी के पके फलों का रस ४ तोला निकाल कर ५ तोला पानी में मिला कर गर्म करें। जब उबाल आ जाय तो उतार कर गर्म २ ही रात के समय पिलावें। निश्चय ही बन्द मासिक खुल जायगा और नियमित रूप से आने लगेगा। लगभग १ सप्ताह पिलाना उचित है।

द्वितीय योग

काले साप की केंचुली जला कर सुरक्षित रखें और १ रत्ती मात्रा गुड़ में लपेट कर दिया करें। मासिक धर्म जारी करने की अचूक दवा है।

मासिकधर्म की अधिकता

यह बड़ा ही भयानक रोग है, इसमें स्त्री के सारे शरीर का रक्त निकल जाता है। रोगिणी का हृदय धड़कता है, चेहरा पीला पड़ जाता है और कभी २ मृत्यु भी हो जाती है। यह रोग प्रायः गरम वस्तुओं के सेवनाधिक्य तथा मासिकधर्म के दिनों में मैथुन करने से हो जाया करता है। निम्नांकित सन्यासी प्रयोगों की कई बार प्रशंसा सुन चुका हूँ। तत्काल प्रभाव दिखाते हुए रक्त प्रवाह को रोक देते हैं।

प्रथम प्रयोग

गधे की ताजा लीद बारीक कपड़े में पोटली बना क दाई अथवा नर्स द्वारा स्त्री की गुप्त योनि में रखवा दें। दुबारा रखवाने की शायद ही आवश्यकता पड़े। अचूक प्रयोग है।

८ द्वितीय प्रयोग

कोई इतनी पुरानी ईंट प्राप्त करें जो हाथ से भुरती हो अर्थात् गल गई हो। इसे सूक्ष्म पीस कर शीशी सुरक्षित रखें और आवश्यकता के समय ६ माशा मात्र पानी में घोलकर रोगिणी को बिना बताए ही पिलादें तीन दिन के सेवन से रक्त प्रवाह थम जाएगा और स्वास्थ्य लाभ होगा।

तृतीय प्रयोग

यदि किसी प्रकार भी रक्त बन्द होने म न आता ह तो १ तो० धमासा बूटी घोंट छान कर मिश्री मिला क पिला दें। कुछ दिन के सेवन से निश्चय ही लाभ ह जाएगा। गर्म वस्तुओं व मथुन से परहेज रखें।

प्रदर-रोग

स्त्रियों के लिए यह रोग बड़ा हा भयानक है अंग्रेजी में ल्यूकोरिया (Leauccrrhea, और वैद्यक भाष में प्रदर कहते है। इसमें स्त्री की गुप्त योनि से श्वेत रंग

का बदबूदार पानी जारी रहता है, मानो कि यह स्त्रियों का प्रमेह है। जिस प्रकार प्रमेह पुरुषों के स्वास्थ्य, यौवन और शक्ति का शत्रु है उसी प्रकार प्रदर स्त्रियों के सौंदर्य और यौवन का नाशक है। इसमें रोगिणी का हृदय धड़कता रहता है। कमर में दर्द रहता है और भूख बन्द हो जाती है। कभी २ योनि में खुजली सी होती रहती है। चेहरा पीला पड़ जाता है और शरीर टूटने लगता है। इस रोग से मुक्ति दिलाने के लिए कुछ विशेषतम सन्यासियाना प्रयोग लिखे जाते हैं।

प्रथम

धंघी के बीज आवश्यकतानुसार लेकर बारीक पीस लें और समभाग खांड मिला कर ६ माशा की मात्रा दें। दूध के साथ सेवन कराएं। एक सप्ताह, नचेत अधिकाधिक दो सप्ताह में पूर्ण आराम हो जाएगा।

द्वितीय

सरयाली के बीज बारीक पीस कर समभाग मिश्री मिला कर रखें और प्रातः सायं हथेली भर पानी से दिया करें। कुछ ही दिनों में प्रदर रोग जड़ से दूर हो जायेगा।

तृतीय

हजार दानी के बीज वट वृक्ष के दूध में खरल करके

गोलिया बनालें और २-२ गोली प्रातः सायं पानी के साथ दिया करें। उपरोक्त तीनों योग प्रत्यक्ष में साधारण से हैं किन्तु लाभ में अनुपम लाभकारी हैं।

गर्भपात के लिए अनुपम प्रयोग

प्रायः स्त्रियों का गर्भ गिर जाया करता है और समस्त परिवार के लिए कष्टदायक होता है। विशेष कर स्त्रियों को घोर कष्ट उठाना पड़ता है। हम आपको गर्भ रक्षा का एक अनुपम सन्यासी प्रयोग भेंट करते हैं, आवश्यकता के समय परीक्षा करें।

कहरवा की एक माला बना कर गर्भिणी स्त्री को पहिना दीजिए, गर्भपात कदापि न होगा। प्रायः साधु लोग इसी प्रयोग के कारण गांवों में पूजे जाते हैं, क्योंकि वे लोग इसे साधु का चमत्कार समझते हैं।

पुत्रदायक प्रयोग

अधिकाश लोग इसी बात से दुखी रहते हैं कि उन के लड़कियां ही लड़कियां होती हैं, और पुत्र का मुख देखने को वे तरसते रहते हैं। ऐसे भाइयों के लिए हम एक विशेष गुप्त सन्यासी प्रयोग लिखते हैं, जो ईश्वर कृपा से उनकी आशा अवश्य ही पूरी करेगा। अनेक बार का परीक्षित है।

जंगल से किसी हिरनी के नर बच्चे का नाड़ा प्राप्त करें, और आवश्यकता के समय उसे आग पर जला कर ३ भाग करलें तथा गुड में लपेट कर तीन गोलियां बना लें। गर्भ के तीसरे मास के आरम्भ में १ गोला प्रतिदिन ऐसी गाय के दूध से दें, जिसने बछड़ा जना हो। ईश्वर की दया से पुत्र प्राप्त होगा।

प्रसव वेदना

प्रसव काल स्त्री के लिए जीवन मरण का प्रश्न होता है। और प्रायः स्त्रियां इस कठिन काल में मृत्यु की गोद में चली जाती हैं। निम्न सरल चुटकुलों से प्रसव आसानी से हो जाता है, परीक्षा कर देखें।

प्रथम चुटकुला

मरियम पंजा एक प्रसिद्ध बूटी है, जो हाजी लोग अरब से लाया करते हैं, उसे पानी में डाल कर स्त्री के सामने रख दें। बच्चा शीघ्र ही उत्पन्न हो जायगा।

द्वितीय चुटकुला

६ माशा गाय का गोबर गोली बना कर चीनी में लपेट कर गरम पानी से निगलवा दें, किन्तु स्त्री को मालूम न हो, १० मिनट में ही बच्चा सकुशल उत्पन्न हो जायगा।

शिशु रोग

मै समझता हूँ कि आपको यह कहने की आवश्यकता नही कि बच्चों की चिकित्सा कराना अनिवार्य है। क्योंकि हर मनुष्य को अपने बच्चे प्यारे होते हैं और उनके रोग ग्रस्त हो जाने पर वह यथा सामर्थ्य उनकी चिकित्सा कराते ही हैं। किन्तु इतना कह देना मैं उचित समझता हूँ कि कभी २ गांव के लोग बच्चों के कष्टों को समझ नही पाते, क्योंकि उन्हें उनके रोगों का पर्याप्त ज्ञान नही होता है अस्तु मे उन्हें राय देता हूँ कि वे एक बार हमारी 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' नामक पुस्तक को अवश्य पढ़ें। उसमें बालको को होने वाले प्रायः प्रचलित रोगों को समझा कर लिखा गया है, जिससे कि आप बच्चों के रोग को स्वय ही ठीक प्रकार समझ सकें। दूसरे उसमें ऐसी २ दवाओं के योग हैं, जिनमें एक भी पैसा आपका व्यय न होगा, क्योंकि ईश्वर की दी हुई सब दवाएँ आपके गांव, खेतों और जगलों में ही मौजूद हैं। इस प्रकार उक्त पुस्तक की सहायता से आपको बच्चों के छोटे २ रोगों के लिए डाक्टर या वैद्य के पास न जाना पड़ेगा और न ही पसीने की कमाई पानी की भांति बहानी पड़ेगी।

यहां बालकों के कुछ प्रमुख रोगों के लिए जो

न्यासी प्रयोग प्राप्त हो सके है, वे आपको भेंट किए
ाते हैं। आशा है कि आवश्यकता के समय ये भी बड़
ःतकर सिद्ध होंगे।

बच्चों की मृगी (कमेडा)

इस रोग मे बालक मूर्च्छित हो जाता है और कई
ार मुंह से भाग निकलने लगती है, हाथ पॉव ऐंठ जाते
, होठ नीले पड़ जाते हैं।

कमेडा का प्रथम सन्यासी प्रयोग

एक बडी बतख के नर बच्चे को रुग्ण शिशु के पास
छोड़ दें। जिस समय दौरा पडेगा, वह पक्षी स्वयं आकर
ाच्चे को अपने पखों में ले लेगा और मुंह से मुंह
मला कर सांस खींचेगा तथा बालक स्वस्थ हो जायगा।
मेरा स्वय का आंखो देखा दृश्य है। ऐसा अद्भुत आश्चर्य
मैने पहिले कभी नही देखा था।

दूसरा प्रयोग

जब बालक को दौरा पडे तो एक साबत खटमल
किसी प्रकार उसके पेट में पहुंचा दें। तत्काल दौरा मिट
जायेगा और फिर कभी न होगा।

मुँह के छाले

प्रायः बच्चों के मुंह में छाले पड़ जाते हैं जिसके

कारण उसे दूध पीने में भी कष्ट होता है। इसके लिये निम्न मन्यासी चुटकुला बड़ा प्रशंसनीय है।

वर्षाऋतु में आवश्यकतानुसार खुंबियां इकट्ठी करके छाया में सुखा लें और बारीक पीस कर शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता के समय थोड़ी सी दवा छालों पर छिड़क दें। आराम हो जायगा।

अतिसार का उत्तम प्रयोग

यदि बालक को दस्त हो रहे हों तो धाव के फूल बारीक पीस कर रखें और माता के दूध में घोलकर थोड़े २ पिलायें दस्त बन्द हो जाये गे। अभी कुछ ही दिन पूर्व मेरी बच्ची 'शशिबाला' को दस्त होते थे। तब मैने इसकी परीक्षा की। ईश्वर कृपा से शीघ्र ही लाभ हो गया।

काली खाँसी

बच्चों के लिये यह रोग बड़ा ही कष्टप्रद होता है, क्योंकि उनके फेफड़े अत्यन्त कोमल होते हैं और जब उन्हें साधारण खाँसी भी हो जाती है तो वे असह्य कष्ट भोगते हैं। विशेषकर काली खाँसी बहुत ही भयङ्कर है। स्थानाभाव के कारण इसका विशेष विवरण तो यहां नहीं दे सके, हाँ 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' में सविस्तार वर्णित है। काली खांसी के लिए निम्न सन्यासी प्रयोग की एक मित्र

वैद्य द्वारा बड़ी प्रशंसा सुनी है, अतः पाठकों को भेंट किया जाता है।

प्रयोग इस प्रकार है :—

कछुवे की खोपड़ी जलाले और भस्म में से २ रत्ती मात्रा १ माशा खांड में मिला कर रुग्ण बालक को चटाया करें। ईश्वर कृपा से २—३ दिन में ही बालक काली खासी से मुक्त हो जायेगा।

नोट:——हमने विशेष प्रयत्न करने पर भी केवल यही एक सन्यासी प्रयोग प्राप्त कर पाया। यदि पाठक गण कुछ और अनुभूत सन्यासी प्रयोग भेजेंगे तो आगामी संस्करण में बढ़ा दिए जायेंगे। पाठकों से मे बार २ निवेदन करता हूँ कि यदि उनके पास कोई भी उत्तम सन्यासी प्रयोग हो तो वे जन-कल्याण के लिए हमारे पास प्रकाशनार्थ अवश्य भेजें। उसे धन्यवाद सहित प्रकाशित कर दिया जायगा।

डब्बा रोग

यह बालकों का निमोनिया होता है। इस रोग की पहिचान यह है कि सांस लेते समय बालक की पसली के नीचे गढ़ा सा पड़ जाता है, सांस तेज २ चलने लगती है और तीव्र ज्वर भी हो जाता है। यह बड़ा ही कठिन रोग है, जो हमारे देश में प्रतिवर्ष लाखों शिशुओं की बलि ले लेता है।

सन्यासी चुटकी

अमलतास की साबत फली को जला कर राख बना लें और डब्बा रोग से पीड़ित बालक को एक चुटकी शहद में मिला कर चटाएं। निराशा के समय यह चुटकी राम-बाण सिद्ध होती है। इससे बच्चा डब्बा रोग से मुक्त हो जाता है।

विशेष निवेदन

बालकों के अन्यान्य रोग व उनकी चिकित्सा के लिए 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' देखें। उसमें मैंने शिशु रोगों पर पर्याप्त प्रकाश डाला है।

सन्यासी की झोली

यह पुस्तक का अन्तिम खण्ड है। इसका नाम हमने 'सन्यासी की झोली' इस लिए रखा है कि प्रायः आपने देखा या सुना होगा कि सन्यासी लोग अपनी झोलियों में ऐसी चमत्कारी बूटियां हर समय रखते हैं, जिनसे आव-श्यकता के समय वे मरणासन्न रोगियों को भी तत्क्षण स्वस्थ कर देते हैं। यही कारण है कि आज भी साधुओं के गुण गांव २ और घर २ में गाए जाते हैं। इस खण्ड

में हम आपको कुछेक ऐसे ही चमत्कारी सन्यासी प्रयोग भेंट करते हैं जो कि लाख-लाख रुपए के प्रयोग कहलाने योग्य हैं।

५ मिनट में सांप के विष को दूर करने वाला सर्वोत्तम सन्यासी प्रयोग

यह ऐसा चमत्कारी प्रयोग है, जिससे सर्प दंश के असाध्य रोगी भी स्वस्थ हो चुके हैं।

टोपीदार भिलावे लेकर उनकी टोपी अलग कर दें और गरम संडासी से पकड़ कर दबा कर उसका तेल घाव पर टपकावे। इसी प्रकार लगभग २ ३ या कुछ अधिक भिलावों का तेल प्रविष्ट कर देने से सारा विष दूर हो जाएगा। एक सन्यासी जी हर समय भिलावे अपनी झोली में रखते थे। जहां कहीं रोगी मिला कि उन्होंने दवा लगाई और चलते बने।

दूसरा प्रयोग

यह प्रयोग क्या है ?—ईश्वरीय चमत्कार है।

यदि चूहे का पेट चीर कर सांप काटे स्थान पर बांध दें तो वह तत्क्षण विष को अपने अन्दर खींच लेगा।

तृतीय प्रयोग

हुक्के का नय का मैल गरम पानी में घोल कर सर्प

दंशित रोगी को पिला दें और कुछ दंशित स्थान पर चाकू से क्षत करके लगावें, रोगी ठीक हो जाएगा।

चतुर्थ प्रयोग

एक मुर्गी लेकर उसकी गुदा और उसके आस पास के बाल इस प्रकार उखाड़ें कि स्वच्छ त्वचा निकल आए। अब इसकी गुदा को दंशित स्थान पर लगादें, उसी समय चिपक जाएगी और थोड़ी देर में जहर को चूस कर मर जाएगी फिर तत्क्षण ही दूसरी मुर्गी को उसी स्थान पर चिपका दें। जब तक मुर्गियां चिपकती रहें और मरती रहें, तब तक इस क्रिया को जारी रखें। जब मुर्गी न मरे, तो समझ लें कि विष निकल गया। बड़ा ही आश्चर्य-जनक प्रयोग है।

पंचम प्रयोग

फत्तामालू ग्राम के एक लुहार को किसी रमते साधू ने सांप काटे का यह अपूर्व योग दे दिया था। उस लुहार ने इसकी कई अवसरों पर परीक्षा की और रामबाण की भांति अचूक पाया। बस फिर क्या था, आस पास के गावों में उस लुहार का डंका बजने लगा। यहां तक कि उसने इससे सहस्रों रुपया कमाया।

कुछ लोगों ने इस योग को प्राप्त करने की भरसक चेष्टा की। उस लुहार को भांति २ के प्रलोभन दिए किन्तु

वह किसी प्रकार भी उनकी अण्टी न चढ़ा। हमारे एक मित्र वैद्य के मामा उसके घनिष्ट मित्र थे किंतु उन्हे भी उस ने वह योग किसी प्रकार न बताया। हां उन्हें यह बनी बनाई गोलिया दे दिया करता था।

इसी भांति योग को गुप्त रखे वह लुहार मर गया। केवल अपने पुत्र को बता गया और उसे आदेश कर गया बेटा! कभी किसी को यह योग बताना नहीं, किंतु सौभाग्य-वश हमारे मित्र के मामा महोदय ने उसे किसी प्रकार बातों में फंसा लिया और योग मालूम कर लिया। आज वही प्रयोग आप लोगों को भेंट किया जा रहा है। जैसी कि कहावत प्रसिद्ध है कि 'हीरे की कदर जौहरी ही जानता है' इस योग का मूल्य भी वही लोग आंक सकेंगे जोकि आवश्यकता के समय इसकी परीक्षा करेंगे और चमत्कारी प्रभाव देखेंगे। किन्तु आप से मेरा एक सानुरोध निवेदन है कि आप इसका किसी रोगी से मूल्य न लें, अपितु मुफ्त ही दें।

योग इस प्रकार है :—

इटसिट, सान्दला बूटी, और हुलहुल बूटी जिसे पंजाब प्रांत में बकरा बूटी कहते हैं, तीनों बूटियां सर्वत्र प्राप्य हैं, जो कि सावन से कातिक मास तक मिलती है। तीनों को बराबर २ लेकर और हरी २ ही भली प्रकार

कूट कर १-१ तोला की गोलियां बना लें। सूखकर ये गोलियां छोटी हो जाती हैं। आवश्यकता के समय एक गोली दूध की लस्सी के साथ घोंट कर सर्प दंशित रोगी को पिला दें और एक गोली लस्सी में घोल कर ऊपर लेप कर दें। ईश्वर कृपा से एक ही बार में विष दूर होना प्रारम्भ हो जायगा। दो घंटे पश्चात् ३-४ और दे दें। बस पर्याप्त हैं। निश्चय ही रोगी स्वस्थ होकर उठ खड़ा होगा और विष का प्रभाव बिलकुल जाता रहेगा

बिच्छू दंश की धूनी

यह एक सन्यासियाना प्रयोग है, जो बड़ा ही अद्भुत है। अर्थात् रोग ही रोग की चिकित्सा भी है।

जब बिच्छू काट ले, तो उसे तुरन्त पकड़ कर मार डालें और दहकते हुए अंगारों पर डाल कर दंशित स्थान पर उसकी धूनी दें। तत्काल ही पीड़ा व विष प्रभाव दूर हो जायेगा।

बावले कुत्ते के काटने की अद्भुत सन्यासी चिकित्सा

बावले कुत्ते के काटने के विषैले परिणाम से प्रत्येक मनुष्य परिचित है, इस कारण विशेष व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं। इसके लिए निम्न सन्यासी चिकित्सा

विधि बड़ी ही लाभप्रद सिद्ध हुई है और अब तक अनेक रोगी इससे स्वस्थ हो चुके है। अत्यन्त विश्वस्त योग है अतः पाठकों को कल्याणार्थ प्रस्तुत है।

प्रयोग इस प्रकार है:—

एक काला झींगुर गुड में लपेट कर रोगी को बिना बताए ही खिलावें और किसी बर्तन पर मोटा कपड़ा बांध कर रोगी को उस पर पेशाब कराएं। मूत्र छन कर बर्तन में चला जायेगा और कपड़े पर बालों की भांति का एक द्रव्य रह जायगा। यह बाल उसी रंग के होते हैं, जिस रंग के कुत्ते ने काटा होगा। शाम तक पेशाब साफ आजायेगा। पुनः दवा देने की आवश्यकता न होगी। अन्यथा तीसरे दिन यही क्रिया फिर करें। दवा के सेवन काल में रोगी को खाने के लिए कुछ न दें, केवल दूध ही पिलावें। यदि गर्मी प्रतीत हो, तो चिन्ता न करें और दूध व घी मिला कर पिलावें।

सूचना—

झींगुर एक कीड़ा होता है, जो प्रायः मकानों के नमनाक भागों में मिलता है। मूछों के दो लम्बे बाल होते हैं, पर भी होते हैं किंतु उड़ता नहीं, छलांग मारता है। एक सफेद होता है और दूसरा काला। रोगी को काला झींगुर सेवन कराना चाहिए।

बस, अब हम पुस्तक को समाप्त करते हुए अपने प्रिय पाठकों से विदा मांगते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह इस पुस्तक के द्वारा पाठकों को अधिकाधिक लाभान्वित करें। यदि पाठकों की शुभकामनाएं हमारे साथ रही तो हम शीघ्र ही आपकी कुछ और भी सेवा करेंगे।

शुभ कामनाओं के साथ !

* इति शुभम् *

नोट—दूसरी पुस्तक साधू की चुटकी (सन्यासी चिकित्सा शास्त्र) छपकर तैयार है।